* ओ३म् *

कुरआन्

प्रकाशक—
प्रेम-पुस्तकालय,
फुलट्टीबाज़ार, आगरा।

प्रकाशकः—

प्रबन्ध-कर्त्ता—प्रेम पुस्तकालय,

फुलट्टी बाज़ार, आगरा।

द्रष्टव्य

कुरान का यह अनुवाद
श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती के
आदेशानुसार माननीय महात्मा गान्धी के विचारों
से प्रेरित होकर हिन्दू जनता को कुरान की शिक्षा का
परिचय कराने मात्र के उद्देश्य से तय्यार किया गया है।

मुद्रकः—

सत्यव्रत शर्म्मा,

शान्ति प्रेस—आगरा

समर्पण

पतितोद्धारक, शुद्धि और संगठन के सहायक
और हिन्दू जाति के सच्चे हितैषी, दानवीर
श्री सेठ जुगलकिशोरजी बिड़ला
के कर कमलों में यह पुस्तक सादर
समर्पित की जाती है। आशा
है कि वह इस भेंट को
अवश्य स्वीकार
करेंगे।

सेवकः—प्रेमशरण, आर्य।

आवश्यक आवेदन

कुरान के दूसरे खण्ड के निकलने में विलम्ब होने का कारण हमारा श्रीमद्दयानन्द–जन्म-शताब्दी-महोत्सव के उपलक्ष्य में विशेष साहित्य–समुपस्थित करने के कार्य में लीन रहना था। साथ ही प्रेसों ने एक साथ उत्तर दे दिया, क्योंकि उनमें भी शताब्दी–संम्बन्धी कार्य्य की भरमार थी। आशा है कि ग्राहक गण हमें इस विवशता और विलम्ब के लिये क्षमा करेंगे।

इस खण्ड में हमने अपने मित्र और हितैषी श्री कृष्ण जी आर्य्योपदेशक के परामर्शानुसार और उच्चारण के विचार से आयतों के अन्तिम अक्षर को हलन्त करना हितकर समझा है।

साथ ही एक बात और पाठकों को स्मरण रखनी योग्य है कि तअ्‌ अथवा ऐसे अन्य अक्षरों का उच्चारण करते समय पाठक समझ लें कि ता और तअ्‌ का मध्यवर्ती उच्चारण हो।

अन्त में पाठकों को यह बता देना आवश्यक है कि इस अनुवाद के निकलने के अनन्तर और भी महानुभाव देखा-देखी कुरान का अनुवाद निकाल रहे हैं, पाठक लेते समय भली प्रकार देख लें।

इस अनुवाद को कोई मुसल्मान अमान्य न बता सके, इस कारण यह बता देना आवश्यक है कि यह अनुवाद मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर दहलवी, शाह रफ़ीउद्दीन, शाह वली उल्ला तथा अन्य मुस्तनिद अनुवादोंके आधार पर किया गया है। हां, भाषा को अवश्य शुद्ध और सुबोध बनाने का प्रयत्न किया गया है, जिसके बिना कुरान का अनुवाद हिन्दीभाषा–भाषियों के लिये निरर्थक होता।

विनीत:—प्रेमशरण
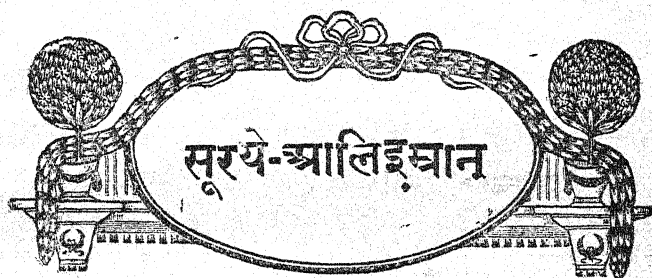
तिलक-रुसल का शेषांश ।

(१-२) अलिफ़् लाऽम्मीऽमऽल्लाहु लाऽइलाहा इल्लाऽ हुवऽल् हय्युऽल् क़य्यूम् ॥१-२॥

अलिफ़ लाम् मीम्--अल्लाह (ऐसा पवित्र व्यक्ति है कि उस) के अतिरिक्त अन्य आराधनीय नहीं। (वह) जीवित (और समस्त संसार) का स्थिर रखने (संभालने) वाला है।

---

* आलि इम्रान् का शब्दार्थ 'इम्रान् का वंश' है। यह सूरत इम्रान् के वंश के सम्बन्ध में है इस में २०० आयतें और २० रुकूअ हैं और यहसूरत मदीने में उतरी।

(३) नज़्ज़ला अ़लय्क ऽल् किताबा बिऽल् ह़क़्क़ि मुस-द्दिक़ऽल्लिमा ऽ बय्ना यदय्हि व अन्ज़ल-त्तउराता वऽल् इन्जीला।मिन्क़ब्लु हुदल्लिन्नाऽसि व अन्ज़लऽल् फ़ुर्क़ाऽना। इन्नऽल्लज़ीना कफ़रूऽ बिआयातिऽल्लाहि लहुम् अ़ज़ाऽबुन् शदीदुन्; वऽल्लाहु अ़ज़ीज़ुन ज़ुन्तिक़ाम्;॥

हे पैग़म्बर! उसीने तुम पर यह प्रमाणिक पुस्तक उतारी, जो पूर्व पुस्तकों (इंजीलतौरातादि) की पुष्टि भी करती है, और उसी ने, इससे पूर्व पुरुषों की शिक्षा के निमित्त, इंजील और तौरेत उतारी, और, उसी ने (सत्यासत्य-निर्धारक) न्याय को भी उतारा। और, जो लोग अल्लाह की आयतों को अनङ्गीकार करते हैं, उन पर भीषण प्रकोप, है, और, अल्ला भीषण बदला लेने वाला है।

(४) इन्नऽल्लाहा लाऽ यख़्फ़ा अ़लय्हि शय्उन् फ़िऽल् अर्ज़ि वलाऽ फ़ि-स्समाअ्;॥

अल्ला (ऐसा है कि) उस पर आकाश और भूमि की कोई वस्तु अप्रकट नहीं।

(५) हुवऽल्लज़ी युसव्विरुकुम् फ़िऽल् अर्ह़ाऽमि, कय्फ़ा यशाउ; लाऽ इलाहा इल्लाऽ हुवऽल् अ़ज़ी-ज़ुऽल् ह़कीम्॥

वही जिस भांति चाहे, माता के गर्भ में तुम्हारा स्वरूप

* इससे पूर्व के पृष्ठ सूरये 'बक़र' में हैं।

(नक़्शा) निर्माण करता है। उसके अतिरिक्त अन्य (किसी) की-आराधना (अच्छी) नहीं, वही बड़ी बुद्धि वाला है।

(६) हुवऽल्लज़ी२ अन्ज़ला अ़लयक़ऽल्किताबा मिन्हु आयातुम्मुह़्कमातुन् हुन्ना उम्मुऽल् किताबि वउख़रु मुतशाबिहातुन्; फ़अम्मऽऽल्लज़ीना फ़ी क़ुलूबिहिम् ज़य्ग़ुन् फ़यत्तबिऊ़ना माऽतशाऽबहा मिन्हुऽब्तिग़ा२अऽल् फ़ित्नति वऽब्तिग़ा२आ तअ्वीलिही, वमाऽ यअ़्लमु तअ्वीलहू२ इल्लऽऽल्लाहु व-र्रासिख़ूना फ़िऽल् इ़ल्मि यक़ूलूना आमन्नाऽ बिही—कुल्लुम्मिन् इ़न्दि रब्बिनाऽ, वमाऽ यज़्ज़क्करु इल्ला२ उलुऽऽल् अल्बाऽब् ॥६॥

(हे पैग़म्बर !) वही (पवित्र पुरुष) है, जिसने तुम पर यह पुस्तक प्रेरित (उद्धरित) की,जिसमें कुछ आयतें पक्की * हैं जो कि, पुस्तक की आधार-स्वरूप (जड़) हैं, और, अन्य अनिश्चितार्थक ‡ (आयतें हैं,) जिनके भावों में भिन्नता (और मत-भेद हो सकता है,) तो जिन मनुष्यों के मनों में मालिन्य है, वह तो समानार्थक आयतों के पीछे पड़े रहते हैं जिससे कि, उत्पात उत्पन्न करें, और, जिससे कि, उनके असल अर्थ का अनुसन्धान करें। यद्यपि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य किसी को उनके असली अर्थ का अभिज्ञान नहीं। और, जो कोई विद्याके

* स्पष्ट अर्थवाली, मुहकम

‡ जिनके अर्थ में सन्देह हो,

विशेषज्ञ हैं, वह तो इतना ही कह कर रह जाते हैं कि, उस पर हमारा विश्वास है। (यह) सब (कुछ) हमारे पालनकर्ता की ओर से है। और, समझाने से वही समझते हैं, जिनमें बुद्धि और विद्या (विद्यमान) है।

(७) रब्बनऽलाऽ तुज़िग् क़ुलूबनाऽ बअ् दा इज़् हदय्तनाऽ वहब्लनाऽ मिल्लदुन्का रह्मतन्, इन्नका अन्तऽल् वह्हाऽब् ॥६॥

हे हमारे पालन कर्ता! हमको सन्मार्ग पर लाने के पश्चात् हमारे हृदयों को अस्थिर (डाँवा-डोल) न कर, और, हमको अपने यहां से दया-प्रदान कर। निस्सन्देह, तू ही बड़ा दाता (देने वाला) है।

(८) रब्बना३इन्नका जाऽमिउ़न्नाऽसि लियउ़-मिल्लाऽ रय्बा फ़ीहि; इन्नऽल्लाहा लाऽ युख़्लि-फ़ुऽल् मीआ़ऽद ॥८॥

हे हमारे परि-पालक! तू एक दिन,* जिसके आने में कोई सन्देह नहीं, मनुष्यों को एकत्रित करेगा।

(मंज़िल; १, पारा; ३, रुकूअ़; २)

(१) इन्नऽल्लज़ीना कफ़रूऽ लन्तुग़्निया अ़न्हुम् अम्वाऽलुहुम् वला३ अउ्लाऽदुहुम्मिनऽल्लाहि शय्-अऽन्; व उला३इकाहुम् वक़ूदु-न्नाऽर—॥६॥

---

* अभिप्राय क़यामत से है।

जो लोग (इस्लाम से) विमुख (मुनकिर) हैं, अल्लाह के यहां, न (तो) उनकी सम्पति, और, न उनकी सन्तति- ही, उनके कुछ काम आवेगी। और, यही नर्क के इँधन (होंगे)

(२) कदअ्‌बि आलि फ़िरऔ्‌उ्‌ना—वऽल्लज़ीना मिन्क़ब्लिहिम्; कज़्ज़बूऽ बि आयातिनाऽ, फ़ अख़- ज़ाहुमुऽल्लाहु बिज़ुनूबिहिम्; वऽल्लाहु शदीदुऽल् इ़क़ाऽब्‌ ॥१०॥

(इनकी भी) फ़िरऊन और उससे पूर्व के उन पुरुषों की सी दशा (होनी है,) जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, तो अल्लाह ने उनके पापों के कारण उनको पकड़ा। और, अल्लाह का दण्ड कठिन है।

(३)कुल्लिल्लज़ीना कफ़रूऽ सतुग़्लबूना व तुह्शरूना इला जहन्नमा; व बिअ्‌सऽल् मिहाऽदु ॥११॥

(सो, हे पैग़म्बर !) कह दे, मुनकिरों से कि, अब तुम पराजित (आधीन) होगे और दोज़ख़ की ओर हांके जाओगे और (वह) कितना बुरा स्थान है।

(४) क़द् काऽना लकुम् आयतुन् फ़ी फ़िआ- तय्‌निऽल् तक़ाताऽ; फ़िआतुन् तुक़ाऽतिलु फ़ी सबी- लिऽल्लाहि व उख़्रा काऽफ़िरतु य्यरउ्‌नहुम्मिस्ल-

यूहिम् रअ्यऽल् अ.य्नि; वऽल्लाहु युअय्यिदु बिन-स्रिही मँय्यशाउ; इन्ना फ़ी ज़ालिका लइ.ब्रात-लिल उलिऽल् अब्साऽर् ॥१२॥

इन (विरोधी) समुदायों में जो (बद्र के स्थान में) एक दूसरे से भिड़ गये हैं, तुम्हारे समझने के लिये अल्लाह का चिन्ह * (प्रगट हो चुका) है। उनमें से एक समुदाय तो अल्लाह के मार्ग में युद्ध करता था और, दूसरा मुनकिरों का था, जिनको आंखों के देखते मुसल्मानों का समुदाय अपने से दुगुना दिखाई दे रहा था † और अल्लाह अपनी सहायता से जिसको चाहता है, सहयोग देता है। इसमें सन्देह नहीं कि जो लोग बुद्धि रखते हैं उनके निमित्त इसमें (अच्छी) शिक्षा (निकल सकती) है।

(५) ज़ुय्यिना लिन्नाऽसि हु.ब्बु-श्शहवाति मिन-न्निसाइ वऽल्बनीना वऽल् क़नाऽतीरिऽल्

---

* बद्र की घाटी में १००० मक्का निवासी मुनकिरों को मुहम्मद सा० के ३१६ मनुष्यों द्वारा पराजित कर देना 'अल्लाह का चिन्ह' बतलाया जाता है। बद्र का युद्ध इस्लाम के इतिहास में इस कारण विशेष स्मरणीय है कि इस अवसर पर मुहम्मद साहब ने अल्लाह के द्वारा प्रेरित अपनी पैग़म्बरी के दावेको सिद्ध करनेके प्रयोजन से तलवार हाथ में ली और विजय को पैग़म्बरी का प्रमाण प्रसिद्ध किया।

† वास्तव में मुसलमानों के विरोधी काफ़िर संख्या में अधिक थे परंतु जैसा कि मुसलमानों का विश्वास है, अल्लाह ने मुसलमानों की मदद के लिये फ़रिश्ते भेज दिये थे और फ़रिश्ते मिलाकर काफ़िरों को मुसलमान दुगुने दिखाई देते थे।

मुक़न्तराति मिन-ज़्ज़ह्बाऽबि वऽल् फ़िज़्ज़ति वऽल् ख़य्लिऽल् मुसव्वमाति वऽल् अ.न्आऽमि वऽल् ह.र्सिं; ज़ालिका मताऽउ.ऽल् ह.याति-द्दुन्याऽ, वऽल्लाहु इ.न्दहू हुस्नुऽल् मआब् ॥१३॥

मनुष्यों को (सांसारिक) प्रिय पदार्थों अर्थात् स्त्रियों, पुत्रों और सुवर्ण तथा चांदी के बड़े २ ढेरों और उत्तमोत्तम घोड़ों, पशुओं और कृषि से महान् मोह है। यह सब सांसारिक-जीवन की वस्तुयें हैं; और अच्छा ठिकाना तो अल्लाह के यहां है।

(६) कुल् अउ् नब्बिउकुम् बिख़य्रिम्मिन् ज़ालिकुम्, लिल्लज़ीनऽत्तक़उ ऽइ.न्दारब्बिहिम् जन्नातुन् तज्री मिन्तह्तिहऽऽल् अन्हारु ख़ालिदीना फ़ीहाऽ व अज़्वाऽजुम्मुतह्हरातुव्व रिज़्वाऽनुम्मिनऽल्लाहि; वऽल्लाहु बसीरुन् ँ बिऽल् इ.बाऽद् ॥१४

(हे पैग़म्बर!) इन लोगों से कहो कि, मैं तुमको इन से अधिक गुरुतर वस्तुएं बताऊं। (वह यह कि) जिन लोगों ने संयम स्वीकार किया, उन के लिये उनके पालनकर्ता के यहां (बहिश्त के) बाग़ हैं, जिनके नीचे (निकट) नहरें बह रही हैं (और वह) उन (बाग़ों) में निरन्तर निवास करेंगे और (उन के लिये) पाक-साफ़ स्त्रियां हैं और अल्लाह को आल्हाद (है) और अल्लाह अपने आराधकों (बन्दों) को देख रहा है।

(७) अल्लज़ीना यक़ूलूना रब्बना३ इन्नना३ आ-मन्नाऽ फ़ऽग्फ़िर्लनाऽ ज़ुनूबनाऽ वक़िनाऽअज़ाऽब-न्नाऽर्, ॥१५॥

(यह) वह मनुष्य (हैं) जो दुआयें मांगा करते हैं कि हम तुझ पर ईमान लाये हैं। तू हमको हमारे पाप क्षमा कर और हम को दोज़ख़ के दुसह दुख से दूर रख!

(८) अस्साबिरीना व-स्सादिक़ीना वऽल् क़ानितीना वऽल् मुन्फ़िक़ीना वऽल् मुस्तग्फ़िरीना बिऽल् अस्ह़ाऽर् ॥१६॥

वह सन्तोषी और सत्यवादी और (अल्लाह के) आज्ञा-कारी और (अल्लाह के मार्ग में) दान करने वाले (हैं), जो प्रातःकाल में क्षमा मांगने वाले हैं।

(९) शहिद्ऽल्लाहु अन्नहू लाऽइलाहा इल्लाऽ हुवा वऽल् मलाइ३कतु व उलुऽऽल् इ़ल्मि क़ाऽइमऽन् ँ बिऽल् क़िस्ति; ला३ इलाहा इल्लाऽ हुवऽल् अ ज़ी-ज़ुऽल् ह़कीम् ॥१७॥

अल्लाह इस बात की साक्षी देता है कि, उसके अतिरिक्त अन्य कोई आराध्य नहीं। और, फ़रिश्ते (अल्लाह के दूत) और विद्वान भी (साक्षी देते हैं कि वही) न्याय का नियन्ता है। उस के अतिरिक्त अन्य कोई आराध्य नहीं। वह बड़ी बुद्धि वाला है।

(१०) इन्न-दीना इ़न्दऽल्लाहिऽल् इस्लाऽमु,

व मऽऽख़्तलफ़ऽल्लज़ीना ऊतुऽऽल् किताबा इल्लाऽ मिन् ॅ बअ़्दि माऽजा३अहुमुऽल् इ़ल्मु बग़्यऽन् ॅ बयनहुम्; व मँय्यक्फ़ुर् बि आयातिऽल्लाहि फ़ इन्नऽल्लाहा सरीउ़ऽल् ह़िसाऽब् ॥१८॥

अल्लाह के यहां (सच्चा) मत तो यही इस्लाम है। और पुस्तक वालों (अर्थात् यहूदी और नसारा) ने जो (इस्लाम से) विरोध किया तो (सत्य बात) प्रतीत होने के पश्चात पारस्परिक हठ से (किया)। और, जो मनुष्य अल्लाह की आयतों से बिरुद्ध (मुनकिर) हो, तो अल्लाह को भी, उससे, लेखा लेने (अर्थात् अपनी आज्ञा उलङ्घन का दण्ड देने) में देर नहीं होती।

(१९) फ़इन् ह़ा३ज्जूका फ़क़ुल् अस्लम्तु वज्-हिया लिल्लाहि वमनिऽत्तबअ़नि; व क़ुलिल्लज़ीना ऊतुऽऽल् किताबा वऽल् उम्मिय्यीना आ अस्लम्तुम्; फ़ इन् अस्लमूऽ फ़क़दिऽह्तदउ्ऽ, व इन् तवल्लउ्ऽ फ़इन्नमाऽ अ़लयकऽल् बलाग़ु; वऽल्लाहु बसी-रुन् ॅ बिऽल् इ़बाऽद् ॥१९॥

हे पैग़म्बर! यदि इतने पर भी (यहूदी आदि) तुम से विवाद करें तो कहदो कि, मैंने तो अल्लाह के आगे अपना शिर * नवा दिया है। जो लोग मेरे अनुयाई हैं, (उन की भी यही अवस्था है।)

---

* अस्लम्तु वजिहया लिल्लाहि' का शब्दार्थ 'मैंने अपना मुंह अल्लाह

और, किताब वालों तथा (अरब के) बुद्धुओं‡ से कहो कि, तुम भी इस्लाम लाते हो (या नहीं ?) अतः यदि इस्लाम लेआयें, तो निस्सन्देह सन्मार्ग पर (हैं)। और, यदि मुख मोड़ें तो तुम पर अल्लाह का आदेश पहुँचा देना मात्र (कर्त्तव्य) है। और अल्लाह बन्दों के हाल को) भली भांति देख रहा है।

(म०; १, पा०; ३, रु० ३)

(१) इन्नऽल्लज़ीना यक्फ़ुरूना बि आयाति-ऽल्लाहि व यक़्तुलून-न्नबिय्यीना बि ग़य्रि ह.क़्क़-व्व यक़्तुलूनऽल्लज़ीना यअ्मुरूना बिऽल् क़िस्ति मिन-न्नाऽसि फ़बश्शिर्हुम् बि अज़ाऽबिन् अलीम् ॥२०॥

जो लोग अल्लाह की आयतों को अनङ्गीकार करते हैं और नबियों का निरर्थक नाश* करते (हैं) और उन लोगों का बध करते हैं जो (उन्हें) न्याय करने को कहते हैं। (हे पैग़म्बर !) तू ऐसे मनुष्यों को दारुण दुख का हर्ष-समाचार सुना दे।

के आगे झुका दिया परन्तु 'शिर झुका दिया' यह अधिक स्पष्ट और मुहाविरे का अर्थ है। ‡ जाहिलों। * क़तल।

* एक हदीस में लेख है कि इस्राईल वंशजों ने एक दिन ४० पैगम्बरों का बध (क़त्ल) किया। इस पर उनमें से जो १७० आदमी पैग़म्बरों के घातकों को बुरा बताने लगे, तो उन्हें भी सन्ध्या-समय से पूर्व क़तल कर दिया। मुसलमानों का मत है कि इसी की ओर इस आयत सङ्केत है।

(२) उलाऽइकऽल्लज़ीना ह़बितत् आअ़्माऽलुहुम् फ़ि-द्दुन्याऽ वऽल् आख़िरति वमाऽ लहुम्मिन्नासिरीन् ॥२१॥

और यही लोग हैं जिनका किया-कराया लोक-परलोक* में निष्फल (है) और न कोई उनका (अल्लाह के विरोध में) सहायक ही है।

(३) अलम् तरा इलऽल्लज़ीना ऊतूऽ नसीबऽम्मिनऽल् किताबि युद्अ़ऊ़ना इला किताबिऽल्लाहि लियह़्कुमा बय्नहुम् सुम्मा यतवल्ला फ़रीक़ुम्मिन्हुम् वहुम्मुअ़्रिज़ून् ॥२२॥

(हे पैग़म्बर!) क्या तुमने उन पर दृष्टि नहीं डाली (कि) जिनको तौरात-पुस्तक से एक खण्ड प्राप्त हुआ था। उनको अल्लाह की पुस्तक अर्थात् तौरात की ओर बुलाया जाता है जिससे कि उनका झगड़ा निपटा दिया जावे। इस पर भी उनमें से एक गिरोह विमुख हो जाता है और वह (तौरात की आज्ञाओं से) पराङ्मुख (मुनहरिफ़) हैं।‡

---

* दुनिया और आख़रत

‡ तौरेत में स्त्री वाले पुरुष और पतिवाली स्त्रियों के व्यभिचार करने का दण्ड संगसारी (पत्थरों से मार देना) लिखा है और मुसलमानों में भी यही दण्ड प्रचलित हैं। लोग निर्धनों को तो यह दण्ड अवश्य देते परन्तु धनाढ्यों के लिये अन्य कोई धारा लगा कर नवीन निर्णय निकाल लेते। मुहम्मदसा० के समय में किसी धनाढ्य यहूदी ने व्यभिचार किया और यहूदी उल्माओं ने

(४) ज़ालिका बिअन्नहुम् क़ाऽलूऽलन् तम-स्सनऽ-न्नाऽरु इल्लाऽ अय्याऽमऽम्मअ़्दूदाति व्व ग़र्रहुम फ़ी दीनिहिम्माऽकाऽनू ऽयफ़्तरून् ॥२३॥

यह (स्वार्थ) इस लिये कि, इनकी धारणा है कि, हमको नर्क (दोज़ख़) की आग छूयेगी भी नहीं। यदि छूयेगी भी, तो केवल गिनती के कुछ दिन। और बढ़-बढ़ के बातें बनाते रहने से इनको अपने दीन के सम्बन्ध में भ्रम हो गया है।

(५) फ़ कय्फ़ा इज़ा जमअ़्नाहुम् लियउ्मिल्लाऽ रय्बा फ़ीहि व वुफ़्फ़ियत् कुल्लु नफ़्सिम्माऽ कसाबत् वहुम् लाऽयुज़्लमून् ॥२४॥

फिर उस दिन जिसके आगमन में तनिक भी सन्देह नहीं (इनकी) कैसी (गति) बनेगी। जब कि, हम इनको (अपने समस्त लेखा देने के लिये) एकत्रित करेंगे और प्रत्येक पुरुष को, जैसा उसने (संसार में) कर्म किया है, पूरा २ प्रतिफल दिया जायगा और लोगों (का अधिकार अपहरण करके, उन) पर अत्याचार न किया जायगा।

यह सोचकर कि किसी प्रकार इसे संगसारी से बचा लें.कहा कि, चलो नये पैग़म्बर से न्याय करावें। जब मुहम्मदसा० ने कुरान और तौरेत के अनुसार इसे संगसार करनेकी आज्ञा दी तो यहूदियोंने कहा कि तौरात में ऐसी आज्ञा नहीं मुहम्मद साहब ने कहा कि तौरेत लाओ। तौरेत दिखाई गई, परन्तु पैग़म्बर सा०को उम्मी अपठित) समझ कर संगसारी की आज्ञाको हाथ से छिपा दिया और एक पढ़े-लिखे सहाबी ने चोरी पकड़ी। इस आयत में इसी की ओर सङ्केत हैं— * क़यामत के दिन।

(६) कुलि-ल्लाहुम्मा मालिकऽल्मुल्कि तुअ्तिऽल्मुल्का मन्तशाउ व तन्जिउ़ऽल्मुल्का मिम्मन्तशाउ, व तुइज़्ज़ु मन्तशाउ व तुजि़ल्लु मन्तशाउ; बियदिकऽल् ख़य्रु; इन्नका अ़ला कुल्लि शय्इन् क़दीर ॥२५॥

और, हे पैग़म्बर! तुम तो यह प्रार्थना करो कि, हे! अल्लाह, समस्त संसार के स्वामी, तू-ही, जिसको चाहे (देश) राज्य प्रदान करे और तू-ही, जिससे चाहे, राज्य छीन ले। और तू ही, जिसको चाहे, सन्मान समर्पित करे, और तू-ही, जिसे चाहे, दुख दे। (प्रत्येक प्रकार की) भलाई तेरे-ही हाथ में है। निस्सन्देह, प्रत्येक पदार्थ पर तेरी प्रबलता (अर्थात् अधिकार) है।

(७) तूलिजुऽल्लय्ला फि़-न्नहा़ऽरि व तूलिजुन्नहा़ऽरा फ़िऽल्लय्लि, व तुख़्रिजुऽल् ह़य्या मिनऽल् मय्यिति व तुख़्रिजुऽल् मय्यिता मिनऽल् ह़य्यि व तर्ज़ुक़ु मन्तशाउ बिग़य्रि हि़साऽब् ॥२६॥

और, तू रात को दिन में ले आवे, और दिन को रात में मिला दे † (और) तू जड़ (मृतक) से जीवित उत्पन्न करे और जीवित से ज़ड़। और जिसको चाहे, तू अपरिमित भोजन प्रदान करता है।

---

† यह अर्थ ही माननीय है। आज कल कुछ मुसलमान इसका आशय बताते हैं कि अल्लाह रातको घटा कर दिन में (ग्रीष्म ऋतु में) सम्मिलित

(८) लाऽयत्तख़िज़िऽल् मुअ्मिनूनऽल् काफ़िरीना अउ्लियाऽआ मिन्दूनिऽल् मुअ्मिनीना, व मँय्यफ़्अ़ल् ज़ालिका फ़लय्सा मिनऽल्लाहि फ़ी शय्इन् इल्लाऽ अन्तत्तक़ूऽ मिन्हुम् तुक़ातन्, व युह़ज़्ज़िरु कुमुऽल्लाहु नफ़्सहू; व इलऽल्लाहिऽल् मसीर ॥२७॥

मुसलमानों को उचित है कि, मुसलमानों के अतिरिक्त काफ़िरों को अपना मित्र न बनावें और जो ऐसा करेगा तो उससे और अल्लाह से कुछ सम्बन्ध (सरोकार) नहीं *। परन्तु यह कि तुम किसी भांति उनसे बचना चाहो और अल्लाह तुमको अपने से डराता है और तुम्हें अल्लाह ही की ओर जाना है।

कर देता है और(शरद् ऋतु में) दिन को घटा कर रात में शामिल कर देता है। विज्ञान-वेत्ता जानते हैं कि दिवसों के छोटे बड़े होने और ऋतु-परिवर्तन का क्या कारण है। कुछ लोग इस्लाम की उपमा दिन से और कुफ़ की रात से देकर इसका अर्थ करते हैं।

*भव्य भारत-भूमि की भलाई का भाव रखने वाले मुसलमान महानुभाव इस आयत की आज्ञा को केवल युद्ध-काल के लिये ही विहित बतलाते हैं परन्तु मुसलमानों के मुस्तनद (माननीय) भाष्यों में इस आयत को कितना महत्व दिया गया है, यह बात विशेषतः विचारणीय है। इसके सम्बन्ध में यहां अपने अनुसन्धान का अवलोकन कराना अनधिकार-चेष्टा तथा पूर्व प्रतिज्ञा के प्रतिकूल प्रतीत होता है। अतएव हम इसकी 'कुरान-कौतुक' में क़लई खोलेंगे।

(९) क़ुल् इन्तुख़्फ़ूऽ माऽफ़ी सुदूरिकुम् अउ तुब्दूहु यअ्लम् हुऽल्लाहु; व यअ्लमु माऽफ़िस्समावाति व माऽफ़िऽल् अर्ज़ि; वऽल्लाहु अ़ला कुल्लि शय्इन् क़दीर् ॥२८॥

हे पैग़म्बर! लोगों से कह दो कि, जो कुछ तुम्हारे मनों में है, उसे गुप्त रक्खो अथवा प्रकाशित करो। वह अल्लाह को तो विदित ही हो जायगा। और, जो कुछ आसमानों में है और जो भूमि पर है, अल्लाह सब जानता है। और अल्लाह की प्रत्येक पदार्थ में प्रकृति (क़ुदरत काम कर रही) है।

(१०) यउमा तजिदु कुल्लु नफ़्सिम्माऽ अ़मिलत् मिन् ख़य्रिम्मुह़ज़रऽव्व माऽ अ़मिलत् मिन् सूइन्, तवद्दु लउ अन्ना बय्नहाऽ व बय्नहू३ अमद्ऽन् ॐ बई़द्ऽन्; व युह़ज़्ज़िरु कुमुऽल्लाहु नफ़्सहू, वऽल्लाहु रऊफ़ुन् ॐ बिऽल् इ़बाऽद्॥२९॥

जिस दिन प्रत्येक पुरुष, जो कुछ सत्कर्म संसार में कर गया है, उसको अल्लाह के यहां) उपलब्ध करेगा। और, जो कुछ कुकर्म कर गया है (वह भी विद्यमान होगा और उसकी यह) अभिलाषा होगी कि, यदि उस में और उस दिन में महान अन्तर हो जाय। और, अल्लाह तुमको अपने (प्रकोप से) डराता है, और, अल्लाह, अपने भक्तों पर प्रेम (भी) रखता है।

(मंजिल; १, पारा; ३, रु०; ४,)

(१) क़ुल् इन् कुन्तुम् तुहि॒ब्बूनऽल्लाहा फ़ऽत्त-बिऊनी युह॒बिब् कुमुऽल्लाहु व यग़्फ़िर्लकुम् ज़ुनू-बकुम्, वऽल्लाहु ग़फ़ूरुर्रही॒म् ॥३०॥

हे पैग़म्बर! मनुष्यों से कह दो कि, यदि तुम अल्लाह को मित्र रखते हो तो मेरा अनुसरण करो जिससे अल्लाह तुम को मित्र रक्खे और. तुमको तुम्हारे पाप क्षमा करदे और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।

(२) क़ुल् अतीउ॒ऽऽल्लाहा व-र्रसूला, फ़ इन्त-वल्लउ॒ऽ फ़ इन्नऽल्लाहा लाऽ युहि॒ब्बुऽल् काफ़ि-रीन् ॥३१॥

(हे पैग़म्बर इन मनुष्यों से) कहदो कि अल्लाह और रसूल की आज्ञा मानो फिर यदि न मानें तो अल्लाह अना-चारियों (काफ़िरों) को पसन्द नहीं करता।

(३) इन्नऽल्लाहऽस्तफ़ा२ आदमा व नूह॒ऽव आल इब्राहीमा व आल इ॒म्राना अ॒लऽल् अ॒ाल-मीन्—॥३२॥

अल्लाह ने सांसारिक मनुष्यों से (अधिक उत्कृष्टता प्रदान करके) आदम और इब्राहीम के वंश और इम्रान कुल को चुन लिया है।

(४) ज़ुर्रिय्यतन् ् बअ्‌ज़ुहा मिन् ् बअ्‌-ज़िन् ; वऽल्लाहु समीउन् अ्‌लीम् ॥३३॥

(यह लोग आदम की) सन्तति (थे) एक के (कुल में) एक और अल्लाह सब की सुनता और सब कुछ जनता है।

(५) इज़् क़ाऽलतिऽम्राअतु इ़म्राना रब्बि इन्नी नज़तु लका माऽ फ़ी बत्‌नी मुहर्ररऽन् फ़तक़ब्बल् मिन्नी, इन्नका अन्त-स्समीउ़ऽल् अ़लीम् ॥३४॥

एक समय था कि, इम्रान की स्त्री ने (अल्लाह की सेवा में) प्रार्थना की कि, हे मेरे पालन कर्ता ! मेरे गर्भ में जो (बालक) है उसको मैं (सांसारिक कार्यों से) स्वतन्त्र करके तेरे अर्पण करती हूं। तू मेरी ओर से यह (भेंट) स्वीकार कर क्योंकि तू (सब की) सुनता और (सब की वासनाओं को) जानता है।

(६) फ़लम्माऽ वज़ाअ़त्हाऽ क़ाऽलत् रब्बि इन्नी वज़अ्‌तुहा३ उन्सा; वऽल्लाहु अअ्‌लमु बिमाऽ वज़ाअ़त् ; व लय्‌स-ज़्ज़करु कऽल् उन्सा, व इन्नी सम्मय्‌तुहाऽ मर्यमा व इन्नी३ उई़ज़ुहाऽ बिका वज़ुर्रिय्यतहाऽ मिन--श्शय्‌तानि-र्रजीम् ॥३५॥

फिर जब उन्होंने पुत्री जनी और अल्लाह को भली भांति विदित था कि उन्होंने किस कोटि की कन्या उत्पन्न की है (और उन सब को उसकी वास्तविकता का विवेक न था)

अतएव कहने लगी कि, हे मेरे पालन कर्ता! मैंने तो यह पुत्री पैदा की है; और पुत्र पुत्री की भांति (तिरस्कृत‡) नहीं होता।

* और मैंने इसका नाम मर्यम रक्खा है और दुष्ट† शैतान (के फंदे) से इसको और इसकी सन्तति को सुरक्षित रखने के लिये, मैं तेरी शरण† में सौंपती हूं।

(७) फ़तक़ब्बलहा ऽ रब्बुहा ऽ बिक़बूलिन् ह़स-निंव्व अन् ्बतहा ऽ नबा ऽ तऽन् ह़सनऽव्व कफ़्फ़-लहा ऽ ज़करिय्या ऽ; कुल्लमा ऽ दख़ला अ़लय्हा ज़करिय्य ऽऽल् मिह़्राऽबा वजदा इ़न्दहा ऽ रिज़्क़ऽन्, क़ाऽला या मर्यमु अन्ना लकि हाज़ा ऽ; क़ाऽलत् हुवा मिन् इ़न्दिऽल्लाहि, इन्नऽल्लाहा य़र्ज़ुक़ु मँय्य-शा ऽ उ बिग़य्रि हिसा ऽ ब् ॥३६॥

तो उनके पालन कर्ता ने मर्यम को सहर्ष स्वीकार किया। और, उसको भली भांति बढ़ाया, और, ज़करिया को उसका संरक्षक नियत किया। जब कभी ज़करिया उसके निकट उस की कोठरी में आता, तो उसके पास कोई भोज्य वस्तु देखता

---

‡ यह इस कारण कि स्त्री पुजारी का काम नहीं कर सकती।

* मुहम्मदी गाथा के अनुसार प्रत्येक नवजात बालक को शैतान छूता है परन्तु मरियम और उसके पुत्र को नहीं छूया।

† जब इब्राहीम अपने पुत्र को बलिकर रहा था तो शैतान रोकता था सो उसने उसे पत्थर मार कर भगाया।

और पूछता, हे मरियम ! यह (वस्तुयें) तुम्हारे पास कहां से (आती हैं ? मरियम ने) कहा, कि यह अल्लाह के यहां से। अल्लाह जिसको चाहता है, बेहिसाब जीविका देता है।

(८) हुनाऽलिका दआऽ ज़करिय्याऽ रब्बहू; क़ाऽला रब्बि हब्ली मिल्लदुन्का ज़ुर्रिय्यतन् तय्यिबतन्, इन्नका समीऽ-द्दुआऽइअ् ॥३७॥

उसी क्षण ज़करिया ने अपने विधाता से विनय की और कहा कि, हे ! प्रतिपालक, अपनी अनुग्रह से मुझ को सुयोग्य सन्तान दे (क्यों) कि तू (सब की) प्रार्थनायें सुनता है।

(६) फ़नाऽदत् हुऽल्मलाऽइकतु वहुवा क़ाऽइमुं य्युसल्ली फ़िऽल् मिह्राऽबि अन्नऽल्लाहा युबश्शिरुका बियह्या मुसद्दिक़ऽन् बिकलिमतिम्मिनऽल्लाहि व सय्यिदऽव्व हसूरऽव्व नबिय्यऽम्मिन-स्सालिहीन् ॥३८॥

अभी ज़करिया कमरे में खड़े प्रार्थना कर ही रहे थे कि, उनको फ़रिश्ते ने बुलाया कि, अल्ला तुमको यह्या (के उत्पन्न होने) का शुभ समाचार सुनाता है। और (वह) अल्लाह की आज्ञा * का समर्थन करेंगे, जनता के नेता होंगे और (स्त्री-संग से) रुके रहेंगे और नबी तथा अच्छे सेवकों में होंगे।

*बिना पिता के ईसा का मर्यम के गर्भ से पैदा होना अल्ला की आज्ञा से बताया जाता है। इस आयत में अल्लाह की इसी आज्ञा का समर्थन करने की ओर सङ्केत है।

(१०) क़ाऽला रब्बि अन्ना यकूनु ली गुलामुंव्व क़द् बलाग़नियऽल् किबारु वऽम्राअती अ़ाऽक़िरुन्; क़ाऽला कज़ालिकऽल्लाहु यफ़्अ़लु माऽ यशाउअ्; ॥३९॥

ज़करिया ने विनय की कि, हे मेरे पालनकर्ता! मेरे (यहां) कैसे पुत्र उत्पन्न होसकता है। और, (इस अवस्था में जब कि) मुझ पर बुढ़ापा आ चुका है, और, मेरी बीबी (बहू) बन्ध्या है? (अल्लाह ने) कहा कि, इसी भांति, अल्लाह जो चाहता है, करता है।

(११) क़ाऽला रब्बिऽज् अ़ल्ली३ आयतन्; क़ाऽला आयतुका अल्लाऽ तुकल्लिम-न्नाऽसा सलासता अय्याऽमिन् इल्लाऽ रम्ज़ऽन्; वऽज़्कुर्रब्बका कसीरऽव्व सब्बिह् बिऽल् अ़शिय्यि वऽल् इब्काऽर् ॥४०॥

ज़करिया ने निवेदन किया कि, हे मेरे पालनकर्ता! मेरे (परितोष के) लिये कोई चिन्ह निश्चित कर, जिससे मैं समझूं कि, मेरी प्रार्थना स्वीकृत हुई। अल्लाह ने कहा कि, चिन्ह जो तुम चाहते हो, यहहै कि, तीन दिवस पर्य्यन्त मनुष्यों से वार्तालाप न करो, परन्तु व्रत (रोजे) रखना और (उपवास के दिन में) अधिकतया अपने पालनकर्ता का वर्णन (अर्थात्) प्रातः और सायं (उसी का) स्मरण करते रहना।

---

* बेतुल मुक़द्दस की सेवा-सुश्रूषा का कार्य ज़करिया के कुल के ज़िम्मे था। परन्तु वृद्ध ज़करिया के कोई सन्तान न होने के कारण एक कठिन

(मञ्ज़िल १, पारा ३, रुकूअ ५ ।)

(१) व इज़् क़ाऽलतिऽल् मलाइकतु या मर्यमु इन्नऽल्लाहऽस्तफ़ाकि व तह्हराकि वऽस्तफ़ाकि अ़ला निसाइइऽल् आ़लमीन् ।।४१।।

और जब (जब फ़रिश्तों ने) मर्यम से कहा कि, हे ! मर्यम, तुमको अल्लाह ने चुन लिया, और, तुमको पाक-पवित्र रक्खा

समस्या उसके समक्ष समुपस्थित थी और उन्हें सन्तान की इच्छा थी यद्यपि मर्यम ख़ाना काबा की सेवा के कार्य्य के लिये नियुक्त करदी गई थी तथापि स्त्री ही तो थी । मा ने तो लड़की को काबा शरीफ़ के हवाले कर दिया परन्तु इनमें झगड़ा हुआ कि कौन मर्यम का पालन-पोषण करे अन्त में दावेदारों ने पासा डाला और सब ने अपने तौरेत लिखने की लेखनी (कलम) नदी में फेंकदी । ज़करिया के अतिरिक्त सब की लेखनी बह गई । अतः यह इस बात की सूचना समझी गई कि मर्यम ज़करिया की संरक्षिता में रहें । ज़करिया ने काबा में मर्यम को रहने को एक स्थान बता दिया था । मर्यम वहीं रहती । ज़करिया जब कभी उसकी ख़बर-सुध लेने उस के पास जाते तो उसके पास फल-फलादि पाकर आश्चर्य-चकित हो जाते । पूछने पर मर्यम ने कहा, कि, यह फल-फलादि अल्लाह के अनुग्रह से आ जाते हैं और मैं खा लेती हूं । यह सुन कर ज़करिया के हृदय में पुत्र प्राप्ति की पिपासा पैदा हुई और अल्लाह ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की । परन्तु ज़करिया ने पूछा कि, हे अल्ला ! मुझे कैसे परितोष हो । उत्तर मिला कि हमारी ओर ध्यान लगा । अतः ज़करिया ने ३ व्रत (रोज़े) रक्खे और अपनी शरीयत के अनुसार दुनिया की बात चीत से भी अलग रहे । तब हज़रत यह्या पैदा हुये । कुछ लोग इसे मौजिज़ा बताते हैं कि भले चंगे ज़करिया की ज़बान अपने-आप बन्द हो गई ।

है और (इसी कारण) तुमको संसार की स्त्रियों से (श्रेष्ठ समझ कर) चुन लिया है।

(२) या मर्यमुऽक्नुती लिरब्बिकि वऽस्जुदी वऽर्कई मअ.-रीऽकिई.न् ॥४२॥

हे मरियम! अपने पालन कर्त्ता की आज्ञा-पालन करती रहो, और, सिजदा किया करो, और, रुकूअ करने वालों (नुमाज़ियों) के साथ रुकूअ में तुम भी झुकती रहो।

(३) ज़ालिका मिन् अन् ८ बाइऽल् ग़य्बि नूहीहि इलय्का, वमाऽ कुन्ता लदय्हिम् इज् युल्कूना अक्लाऽ महुम् अय्युहुम् यक्फुलु मर्यमा, वमाऽ कुन्ता लदय्हिम् इज् यख़्तसिमून् ॥४३॥

हे पैग़म्बर! यह परोक्ष (ग़ैब) की बातें हैं, जो हम तुमको (इलहाम की) वही के द्वारा पहुंचाते हैं। और न तो उन (मर्यम के वारिस बनने का दावा करने वालों) के पास तुम (उस समय,) विद्यमान थे, जब वह लोग अपनी लेखनियाँ नदी में डाल रहे थे कि, (कौन) मर्यम का पोषक बने। न तुम उनके समीप उस समय विद्यमान थे, जब वह परस्पर विवाद कर रहे थे।

(४-५) इज् क़ाऽलतिऽल् मलाइकतु या मर्यमु इन्नऽल्लाहा युबश्शिरुकि बिकलिमातिम्मिन्हु-ऽस्मुहुऽल्मसीहु ई.सऽब्नु मर्यमा व जीहऽन्

फ़िद्दुन्या॰ वऽल् आख़िरति व मिनऽल् मुक़र्रबीन्-॥ व युकल्लिमु-न्नाऽसा फ़िऽल् मह्दि व कह्लऽव्व मिन-स्सालिह़ीन ॥४४-४५॥

जब फ़रिश्तों ने कहा कि, हे मर्यम ! अल्ला तुमको अपनी उस आज्ञा * का शुभ सम्वाद सुनाता है। उसका नाम होगा, मर्यम का पुत्र ईसा! और, (वह) लोक परलोक दोनोंमें अल्ला के समीपस्थ सेवकों में से (एक सेवक) और पालने (झूले) में और बड़ी आयु का होकर लोगोंके साथ बातें करेगा। और, अल्ला के सच्चे सेवकों में से (एक) होगा।

(६) क़ाऽलत् रब्बि अन्ना यकूनु ली वलदुव्व लम् यम्सस्नी बशरुन्; क़ाऽला कज़ालिकिऽल्लाहु यख़्लुक़ु माऽ यशाउ; इज़ाऽ क़ज़ाऽ अम्रऽन् फ़ इन्नमाऽ यकूलु लहू कुन् फ़याकून् ॥ ४६ ॥

वह (मर्यम) कहने लगीं कि, हे मेरे पालनकर्त्ता ! मेरे कैसे पुत्र हो सकता है। यद्यपि मुझ को तो किसी पुरुष ने स्पर्श तक नहीं किया। (अल्ला ने) कहा, कि, इसी भांति अल्ला जो चाहता है, उत्पन्न करता है। जब वह किसी कार्य का करना

---

* कुमारी मर्यम के गर्भ से हज़रत ईसा की उत्पत्ति अल्लाह की आज्ञा से बताई जाती है और इसी की ओर इस आयत में सङ्केत है।

ठान लेता है, तो बस उसे* कह देता है कि, "हो" और वह होजाता है।

(७) व युअ़ल्लिमुहुऽल् किताबा वऽल् हिक्मता व-त्तउराता वऽल् इन्जील्, ॥४७॥

और अल्लाह ईसा को आसमानी पुस्तक और बुद्धि की बातें और तौरेत और इंजील सिखावेगा।

(८) व रसूलऽन् इला बनीइ इस्राईल। अन्नी क़द् जिअ़तुकुम् बिआयातिम्मिर्रब्बिकुम्,-अन्नीइ अख़्लुक़ु लकुम्मिन-त्तीनि कहयअ़ति-त्तयरि फ अन्फ़ुख़ु फ़ीहि फ़याकूनु तयरऽन् ँ बिइज़्निऽ-ल्लाहि, व उब्रिउऽल् अक्महा वऽल् अब्रसा व उह्यि.ऽल् मउता बिइज़्निऽल्लाहि, वउ नब्बिउ कुम् बिमाऽ तअ़कुलूना वमाऽ तद्दख़िरूना—फ़ीबुयूतिकुम् इन्ना फ़ी ज़ालिका लआयातल्लकुम् इन्कुन्तुम्मुअ़मिनीन् ॥४८॥

---

* बिना कारण के केवल 'कुन' कह देने से सब कुछ हो जाना एक विचारणीय विषय है। 'छूमंत्र' नामक पैम्फलैटके देखने से पाठकों को इस विषय की कुछ पर्यालोचना प्राप्त हो सकेगी और 'क़ुरान-कौतुक' में बताया जायगा कि अभाव से भाव की उत्पत्ति का सिद्धान्त ईश्वर की सत्ता और वास्तविकता को भी भ्रम में डाल देता है।

और (वह) पैग़म्बर (हैं) इस्राईल के वंश की ओर भेजे जांयगे (जिन में पहुंच कर वह कहेंगे कि) कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से (यह) चिन्ह लेकर आया हूं कि, मैं तुम्हारे लिये पक्षी की सी आकृति का (जीव) बनाऊं, और, फिर उसमें फूँक मारूं, और वह अल्ला की आज्ञा से उड़ने लगे। और, अल्ला की आज्ञा से जन्म के अन्धों और कोढ़ी को चंगा, और मृतकों को जीवित बना दूं। और, जो कुछ तुम भोजन करके आओ, और, जो कुछ तुमने अपने घर में सञ्चित कर रक्खा है, (वह) सब तुमको बता दूं। यदि तुममें ईमान (के प्रति श्रद्धा) है, तो निस्संदेह इन बातों में तुम्हारे लिये (अल्लाह की प्रकृति के) चिन्ह हैं।

(९) व मुसद्दिक़ऽल्लिमाऽ बय्ना यद्य्या मिन-त्तउ्रानि वऽल् उहिल्ला लकुम् बअ्ज़ऽल्लज़ी हुर्रिमा अ़लय्कुम् वजिअ्तुकुम् बिआयातिम्मिर्-ब्बिकुम् फ़ऽत्तक़ुऽऽल्लाहा व अतीऊ़न् ॥४९॥

और, तौरात जो मेरे समय में विद्यमान है, मैं उसका समर्थन करता हूँ। और (मेरे पैग़म्बर बना कर भेजने से) एक लाभ यह भी है कि कतिपय वस्तुएँ हैं, जिनका तुम्हारे निमित्त निषेध है (अल्लाह की आज्ञा से) उन्हें तुम्हारे लिये गृहणीय (हलाल) कर दूं। और, मैं तुम्हारे पालनकर्त्ता से चिन्ह लेकर तुम्हारे पास आया हूं, तो अल्ला से भय करो और मेरी आज्ञा मानो।

(१०) इन्नऽल्लाहा रब्बी व रब्बुकुम् फ़ाऽअ्-बुदूहु; हाज़ा सिराऽतुम्मुस्तक़ीम् ॥५०॥

निस्सन्देह, अल्लाह ही मेरा पालन कर्त्ता है, और (यदि वही) तुम्हारा पालन कर्त्ता है, तो उस की बन्दना करो। यही सीधा मार्ग है।

(११) फ़लम्मा३ अहृस्सा ईसा मिन् हुमुऽ-ल्कुफ़्रा क़ाऽला मिन् अन्साऽरीऽ इलऽल्लाहि; क़ाऽलऽल् हवाऽरिय्यूना नह्.नु अन्साऽरुल्लाहि, आमन्नाऽ बिऽल्लाहि, वश्हद् बिअन्नाऽ मुस्लि-मून् ॥५१॥

और, जब ईसा ने यहूदियों की ओर से अस्वीकृति देखी, तो पुकार उठे कि, कोई है, जो अल्लाह की ओर (सहाय) लेकर मेरी सहायता करे, (यह सुनकर) हवारी* बोले कि, अल्लाह के पक्ष के (तरफ़दार) हम हैं। हम अल्लाह पर ईमान लाये। और, (आप भी) इस बात के साक्षी रहिये कि, हम सेवक हैं।

(१२) रब्बना३ आमन्नाऽ बिमा३ अन्ज़ल्ता वऽत्तबअ्.नऽ-र्रसूला फ़ऽक्तुब्नाऽ मअ्.-शा-हिदीन् ॥५२॥

हे हमारे पालन कर्त्ता! (इंजील) जो तुमने उतारी है, हम उस पर ईमान लाये। और, हमने तेरे रसूल (ईसा) का

* १२ मनुष्य जो प्रारम्भ में हज़रत ईसा पर ईमान लाये उन को हवारी कहते हैं।

अनुसरण अङ्गीकार कर लिया। तू हम को भी (सत्य का) समर्थन करने वालों में लिख रख!

(१३) व मकरूऽ व मकरऽल्लाहु; वऽल्लाहु ख़य्रुऽल् माऽकिरीन् ॥५३॥

और, लोगों ने (अल्लाह से) मकर किया। और, अल्लाह ने (उन से) मकर किया। और, अल्लाह मकर करने वालों में बढ़ कर है।

(मञ्ज़िल १, पारा ३, रुकूअ, ६)

(१) इज़् क़ाऽलऽल्लाहु याई.साऽ इन्नी मुतव-फ.फ़ीका व राऽफि.उ.का इलय्या व मुतह्हिरुका मिनऽल्लज़ीना कफ.रूऽ व जाऽइ.लुऽल्लज.ीनऽत्तब-ऊका फ.उ्क़ऽल्लज़ीना कफ.रूऽ इला यउ्मिऽल् क़ियामति, सुम्मा इलय्या मर्जिउ् कुम् फ. अह्-कुमु बय्नकुम् फ.ी माऽकुन्तुम् फ.ीहि तख.तलिफ़ून्।

इसी समय में अल्ला ने (ईसा) से कहा कि, हे! ईसा, संसार में तुम्हारे रहने की अवधि पूरी करके हम तुम को अपनी ओर उठा (बुला) लेंगे, और काफ़िरों से तुम को पवित्र रक्खेंगे। और, जिन लोगों ने तुम्हारा अनुसरण किया है, उन को प्रलय के दिन तक मुनकिरों पर विजयी बनायेंगे। फिर तुम सब को हमारी ओर लौट कर आना है। तो जिन विषयों में

तुम मत-भेद रखते थे, उन के सम्बध में तुम्हारे मध्य निर्णय (निश्चित) कर देंगे ।

(२) फ़अम्मऽऽल्लज़ीना कफ़रूऽ फ़उअ़ज़िज़ुहुम् अ़ज़ाऽबऽन् शदीदऽन् फ़ि-द्दुन्याऽ वऽल् आख़िरति, वमाऽ लहुम्मिन्नासिरीन् ॥५५॥

तो, जिन्होंने (तुम्हारी नबव्वत को) अस्वीकार किया, उन को तो लोक और परलोक (आखरत) में बड़ी भारी मार देंगे । और, कोई (हम से बचाने वाला) उन का सहायक न होगा ।

(३) व अम्मऽऽल्लज़ीना आमनूऽ व अ़मिलुऽ-स्सालिहाति फ़युवफ़्फ़ीहिम् उजूरहुम् ; वऽल्लाहु लाऽ युहिब्बु-ज़्ज़ालिमीन् ॥५६॥

और, जो मनुष्य (इस्लाम पर) ईमान लाये। और, उन्होंने सत्कर्म भी किये, तो अल्ला उन को उन के (कर्मों के) प्रतिफल पूरे २ देगा । और, अल्ला अनाज्ञाकारियों को नहीं चाहता ।

(४) ज़ालिका नत्लूहु अ़लय्का मिनऽल् आयाति व-ज़्ज़िक्रिऽल् हकीम् ॥५७॥

(हे पैग़म्बर !) यह जो हम तुम को पढ़-पढ़कर सुना रहे हैं, (वह अल्लाह की भेजी हुई) आयतें और अनुभूत बातें हैं ।

(५) इन्ना मसला ई.सा इ.न्द्ऽल्लाहि कमसलि आद्मा; ख़लक़हू मिन्तुराऽबिन् सुम्मा क़ाऽला लहू कुन् फ़.याकून् ॥५८॥

अल्ला के यहां जैसे आदम वैसे ईसा। (क्यों) कि मिट्टी से (अल्लाह ने) आदम (की मूर्ति) को बना कर उसको आज्ञा * दी कि, "बन", और, वह (मिट्टी का टुकड़ा आदम) बन गया।

(६) अल्हक़्क़ु मिर्रब्बिका फ़.लाऽ तकुम्मिनऽल् मुम्तरीन् ॥५६॥

(हे पैग़म्बर! तुम्हें) सत्य बात तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से (बताई जाती है), तो कहीं तुम भी सन्देह करने वालों में मत हो जाना।

(७] फ़. मन् हा३ज्जका फ़ीहि मिन् ब'अ्.दि माऽजा३अका मिनऽल् इ.ल्मि .फ़कुल् तअ्.ाऽलउ्ऽ नद्उ.ऽ अब्ना३अनाऽ व अब्ना३अकुम् व निसा३अनाऽ व निसा३अकुम् वअन्फ़ुसना व अन्फ़ुसाकुम् सुम्मा नब्तहिल् फ़.नज्अ.ल्लअ्.-नतऽल्लाहि अ.लऽल् काज़ि.बीन् ॥६०॥

---

* मिट्टी की मूर्ति का अल्लाह की आज्ञानुसार आदम बन जाने के सिद्धांत से मूर्ति-पूजा में विश्वास की पूरी २ गन्ध आती है।

फिर, जब तुम को (ईसा की) वास्तविकता विदित हो चुकी, इस के पश्चात् भी कोई तुम से उनके विषय में विवाद करने लगे, तो ऐसे मनुष्यों से कहो कि, (अच्छा तो मैदान में) आओः हम अपने बेटों को, बुलायें और तुम अपने बेटों को, और, हम अपनी बेटियों को, और, तुम अपनी बेटियों को, और, हम अपने आप और तुम अपने आप (सम्मिलित होओ) और, फिर हम सब मिलकर गिड़गिड़ायें और झूठों पर अल्ला की फटकार है।

(८) इन्ना हाज़ाऽ लहुवऽल् क़सासुऽल् हक़्क़ु, वमाऽ मिन् इलाहिन् इल्लऽल्लाहु, व इन्नऽल्लाहा लहुवऽल् अज़ीज़ुऽल् हकीम् ॥६१॥

हे पैग़म्बर! यह जो हमने कहा, निस्संदेह, यही कथन वास्तविक है। और, अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कोई आराध्य नहीं। निश्चय अल्लाह—वही अल्लाह भारी बुद्धि वाला है।

[९] फ़इन् तवल्लउऽ फ़इन्नऽल्लाहा अ़लीमुन् ँ बिऽल् मुफ़्सिदीन् ॥६२॥

इस पर (भी) यदि (यह लोग) भाग खड़े हों तो अल्लाह उत्पातियों से भली भांति परिचित है।

[म० १ पारा ३, रुकूअ़ ७]

[१] कुल् याऽ अह्लऽल् किताबि तआ़ऽलउऽ इला कलिमातिन् सवाऽइन् ँ बयननाऽ व बयनाकुम्

अल्ला॒ नअ्॒बुदा इल्ल॒॒ल्लाहा वला॒ नुश्रिका बिही शय्अ॒॰वला॒ यत्तख़िज़ा बअ्॒ज़ुना॒ बअ्॒ज़न् अर्बा॒ब॒म्मिन्दूनि॒ल्लाहि; फ़. इन्तवल्लउ॒फ़कू-लु॒॒श्हदू॒ बिअन्ना॒ मुस्लिमून् ॥६३॥

(हे पैग़म्बर ! इनसे) कहो कि, हे पुस्तक वालो, आओ ऐसे विषय की ओर (ध्यान दो) जो हमारे और तुम्हारे यहां एक-सा (माननीय) है: कि, अल्ला के अतिरिक्त अन्य की आराधना न करें। और किसी वस्तु को साझीदार (शरीक) निश्चित् न करें, और, अल्ला के अलावा हम में से कोई किसी को अपना स्वामी न समझें। पुनः यदि (इससे भी) मुंह मोड़ें तो (हे मुसलमानों ! इन लोगों से) कह दो कि, तुम इस बात के साक्षी बनो कि, हम तो (एक ही अल्ला को) मानते हैं।

[६] या३अह्ल॒ल् किताबि लिमा तुहा३ज्जूना फ़ी३ इब्राहीमा वमा३ उन्ज़िलति-त्तउ्रातु व॒ल् इन्जीलु इल्ला॒ मिन् ॰ बअ्॒दिही; अफ़ला॒ तअ्॒क़िलून् ॥६४॥

हे किताब वालो ! इब्राहीम के विषय में क्यों विवाद करते हो (कि यहूदी थे अथवा नसरानी)? और तौरात और इञ्जील तो उनके पश्चात् उतरी ! क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते ?

(२) हाऽ अन्तुम् हाऽउलाऽइ हाऽजज्तुम् फ़ी-माऽ लकुम् बिही इ़ल्मुन् फ़.लिमा तुहाऽज्जूना फ़ीमाऽ लय्सा लकुम् बिही इ़ल्मुन्, वऽल्लाहु यअ़्लमु व अन्तुम् लाऽ तअ़्लमून् ॥६५॥

सुनो जो! तुम लोगों ने ऐसी बातों में झगड़ा किया, जिन के विषय में तुम को कुछ बोध था। परन्तु जिसके विषय में तुमको कुछ ज्ञान नहीं, उसमें तुम क्यों झगड़ा करते हो। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।

[३] माऽकाऽना इब्राहीमु यहूदिय्यऽव्वलाऽ नस्राऽनिय्यऽव्वला किन् काऽना ह.नीफ़ऽम्मुस्लिमऽन्, व माऽ काऽना मिनऽल् मुश्रिकीन् ॥६६॥

इब्राहीम न यहूदी थे और न नसरानी वरन् एक आज्ञाकारी सेवक थे, और, मुश्रिकों में से भी न थे।

[४] इन्ना अउ़्ल-न्नाऽसि बि इब्राहीमा लल्लज़ीनऽत्तबऊ़हु व हाज़ऽ-न्नबिय्यु वऽल्लज़ीना आमनूऽ; वऽल्लाहु वलिय्युऽल् मुअ़्मिनीन॥६७

इब्राहीम के साथ उन लोगों का सम्बन्ध अधिक था, जो उसके अनुयाई थे। और यह (मुहम्मद साहिब) पैग़म्बर और (मुसलमान) जो ईमान लाये। और, अल्ला तो मुसलमानों का साथी है।

---

* अल्लाह के साथ साझी ठहराने वाले।

(६) वद्दत्ताइफ़तुम्मिन् अह्लिऽल् किताबि लउ् युज़िल्लूनकुम् ; वमाऽ युज़िल्लूना इल्लाऽ अन्फुसाहुम् वमाऽ यश्उ़रून ॥६८॥

मुसलमानो ! किताब वालों में से एक समुदाय तो यह चाहता है कि किसी भांति तुमको मार्गच्युत करदें । यद्यपि (अपने उपायों से) स्वयं ही मार्गच्युत होते हैं । और (इस बात को) नहीं समझते ।

(७) या अह्लऽल् किताबि लिमा तक्फ़ुरूना बि आयातिऽल्लाहि व अन्तुम् तश्हदून् ॥६९॥

हे पुस्तक वालो ! अल्लाह की आयतों को क्यों अस्वीकार करते हो, जब कि, तुम (मन में उनको) ठीक मानते हो ।

(८) या अह्लऽल् किताबि लिमा तल्बिसूनऽल् ह़क़्क़ा बिऽल् बाऽतिलि व तक्तुमूनऽल् ह़क़्क़ा व अन्तुम् तअ़्लमून् ॥७०॥

हे किताब वालो ! क्यों सत्य और असत्य को मिश्रित करते और सत्य को गुप्त रखते हो, जब कि (सत्य) तुम्हें विदित है ।

(मं०; १, पा०; ३, रु० ८)

(१) व क़ाऽलत्ताइफ़तुम्मिन् अह्लिऽल् किताबि आमिनू बिऽल्लज़ीऽ उन्ज़िला अ़लऽल्लज़ीना

आमनूऽ वज्ह-न्नहाऽरि वऽक्फ़ुरू२ आख़िरहू लअ़-ल्लहुम् यर्जिऊन्, ॥७१॥

और किताब वालों में से एक समुदाय (अपने लोगों को) समझाता है कि, मुसलमानों पर जो पुस्तक उतरी है, पहले तो, उस पर विश्वास ले आया करो। परन्तु पश्चात् (उससे) मुख मोड़ लिया करो, (इस प्रकार) कदाचित मुसलमान (भी इस से) लौट जायं।

(२-३) वलाऽ तुअ्मिनू२ इल्लाऽ लिमन् तबिआ दीनकुम्; क़ुल् इन्नऽल् हुदा हुदऽल्लाहि-अँय्युअ्ता२ अह़दुम्मिस्ला मा२ ऊतीतुम् अउ् युह़ाऽज्जूकुम् इ़न्दा रब्बिकुम्, क़ुल् इन्नऽल् फ़ज़्ला बियादिऽल्लाहि, युअ्तीहि मँय्यशा२उ; वऽल्लाहु वाऽसिउ़न् अ़लीमु,-य्यख़्तास्सु बिरह़्मतिही मँय्यशा२उ; वऽल्लाहु ज़ुऽल्फ़-ज़्लिऽल् अ़ज़ीम् ॥७२-७३॥

और, जो तुम्हारे मत का अनुसरण करे, उसके अतिरिक्त अन्य (की बात) का विश्वास न करो। (हे पैग़म्बर! इनसे) कहो कि, शिक्षा तो (वास्तव में अच्छी) अल्लाही की शिक्षा है, (जो) कि, जैसी तुमको दी गई है, वैसी ही किसी और को दी जाये अथवा अन्य मनुष्य अल्ला के यहां चलकर तुमसे झगड़ें। (हे पैग़म्बर! इनसे) कहो कि बड़ाई तो, अल्ला ही के हाथ में है: जिस को चाहे (वह उसे) दे। और, अल्ला

बड़ी गुंजाइश वाला और (सब) जानता है। जिस को चाहे अपनी अनुग्रह के लिये विशिष्ट बनाले। और, अल्लाह की अतीव अनुकम्पा है।

(४) व मिन् अह्लिऽल् किताबि मन् इन् तअ्मन्हु बि क़िन्ताऽरिय्यु अद्दिही३ इलय्का, व मिन्हुम्मन् इन् तअ्मन्हु बि दीनाऽरिल्लाऽ युअद्दि-ही३ इलय्का इल्लाऽमाऽदुम्ता अ़लय्हि क़ाइमऽन्, ज़ालिका बिअन्नहुम् क़ाऽलूऽ लय्सा अ़लय्नाऽ फ़िऽल् उम्मिय्यीना सबीलुन्, व यक़ूलूना अ़लऽ-ल्लाहिऽल् कज़िबा वहुम् यअ़्लमून्॥७४॥

किताब वालों में कुछ तो ऐसे हैं कि, यदि उन के पास पुष्कल धन (भी) धरोहर में रखवा दो, तो (जब मांगो तभी) तुम्हें सौंप दें। और, उन में से कुछ ऐसे हैं कि, एक दीनार उन के पास धरोहर रखवा दो, तो वह तुमको उस को भी न लौटावें! चाहे आठों पहर तक़ाज़े के लिये उन (के शिर) पर खड़े रहो। यह इस लिये कि, वह कहते हैं कि (अरब के) मूर्खों का धन पचा लेने से हम से कोई पूछ-ताछ न होगी। और, जान-बूझकर अल्लाह पर मिथ्या दोष मढ़ते हैं। इनसे सचेत हो।

(५) बला मन् अउ्फ़ा बिअ़ह्दिही वऽत्तक़ा फ़ इन्नऽल्लाहा युहिब्बुऽल् मुत्तक़ीन्॥७५॥

वरन् जो पुरुष अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करे, और संयमी रहे; तो अल्लाह संयमियों को सखा बनाता है।

(६) इन्नऽल्लज़ीना यश्तरूना बिअ़ह्दिऽल्लाहि व अय्माऽनिहिम् समनऽन् क़लीलऽन् उलाइइका लाऽ ख़लाऽक़ा लहुम् फ़िऽल् आख़िरति वलाऽ युकल्लिमु हुमुऽल्लाहु वलाऽ यन्ज़ुरु इलय्हिम् यउ्मऽल् क़ियामति वलाऽ युज़क्कीहिम्ः व लहुम् अ़ज़ाऽबुन् अलीम् ॥७८॥

जो लोग (अल्लाह से की हुई अपनी) प्रतिज्ञा और अपनी शपथों पर किंचित् मूल्य उपलब्ध* कर लेते हैं, उन को परलोक (आखिरत) में कुछ भी तो न मिलेगा। और, प्रलय के दिन अल्लाह उन से बात भी न करेगा, और, न उन की ओर देखेगा, और न, उनको पवित्र करेगा। और, इन को दारुण दुख (के रूप में दण्ड) मिलेगा।

(७) व इन्ना मिन्हुम् लफ़रीक़ऽय्यल्वूना अल् सिनातहुम् बिऽल् किताबि लितह्सबूहु मिनऽल् किताबि व माऽ हुवा मिनऽल् किताबि, व यक़ूलूना हुवा मिन् इ़न्दिऽल्लाहि व माऽ हुवा

* यश्तरूना का शब्दार्थ क्रय करना अर्थात् किञ्चित अन्य क्रय करना से का भाव यह है कि 'अपनी प्रतिज्ञा और शपथों से तनिक प्रलोभन से हट जाना'

मिन् इ.न्दिऽल्लाहि, व यकूलूना अ.लऽल्लाहिऽल् कज़िबा वहुम् यअ.लमून. ॥७७॥

और, इन ही (पुस्तक वालों) में एक समुदाय है, जो पुस्तक पढ़ते समय अपनी जिह्वा को मरोड़ते (और कुछ का कुछ पढ़ते) हैं, जिस से कि तुम समझो, कि (जो कुछ वह पढ़ रहे हैं,) वह (अल्लाह की) पुस्तक का अंश है, यद्यपि वह (अल्लाह की) पुस्तक का अंश नहीं। और, कहते हैं कि, यह (जो हम पढ़ रहे हैं) अल्लाह के यहां से (उतरा) है; यद्यपि वह अल्लाह के यहां से नहीं (उतरा।) और, जान-बूझ कर अल्लाह पर झूंठ बोलते हैं।

(८) माऽकाऽना लिबशरिन् अँय्युअ.तिया-हुऽल्लाहुऽल् किताबा वऽल् हु.क्मा व-न्नुबुव्वता सुम्मा यकूला लिन्नाऽसि कूनूऽ इ.बाऽदऽल्ली मिन्दू-निऽल्लाहि वला किन् कूनूऽ रब्बाऽ निय्यीना बिमाऽ कुन्तुम् तुअ.ल्लिमूनऽल् किताबा व बिमाऽ कुन्तुम् तद्र.सून—॥७८॥

किसी मनुष्य को तो (यह बात) योग्य है नहीं कि, अल्लाह उस को (अपनी) पुस्तक और प्रज्ञा (बुद्धि) और पैग़म्बरी प्रदान करे, और, वह लोगों से कहने लगे कि, अल्लाह को छोड़ कर मेरे उपासक (बन्दे) बनो, अपितु वह तो यही कहेगा कि, अल्लाह के आराधक होकर रहो। इस लिये कि तुम लोग

दूसरों को अल्लाह की पुस्तक पढ़ाते रहे हो. और, इसलिये (भी) कि, तुम (स्वयं भी उसको) पढ़ते रहे हो।

(६) वलाऽ यअ्‌मुरकुम्‌ इन्तत्तख़िज़ुऽऽल्‌ मलाऽइकता वन्नबिय्यीना अर्बाऽबऽन्‌; अयअ्‌मुरुकुम्‌ बिऽल्‌ कुफ़्रि. बअ्‌दा इज़्‌ अन्तुम्मुस्लिमून्‌ ॥७६॥

और, वह तुम से (यह) नहीं कहेगा कि, फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को ख़ुदा मानो। भला, तुम तो इस्लाम (पर ईमान) ला चुके हो। और, वह इसके पश्चात्‌ तुम्हें कुफ़्र करने को कहे।

(मंज़िल; १, पारा; ३, रु०; ६।)

(१) व इज़्‌ अख़ज़ऽल्लाहु मीसाऽक़न्नबिय्यीना लमाऽ आतय्‌तुकुम्मिन्‌ किताबि व्व हिक्मतिन्‌ सुम्मा जाऽअकुम्‌ रसूलुम्मुसद्दिकुल्लिमाऽ माअ्‌कुम्‌ लतुअ्‌मिनुन्ना बिही वला तन्सुरुन्नहू; क़ाऽला आ अक़्‌रर्तुम्‌ व अख़ज़्तुम्‌ अ़ला ज़ालिकुम्‌ इस्री;

---

* मुहम्मद साहब के किन्हीं आचरणों के कारण, जिन्हें 'मुहम्मद साहब के चरित्र' में पाठक परख सकते हैं, लोगों को मुहम्मद सा० के सम्बन्ध में यह विश्वास था कि यद्यपि यह पुरुष अल्ला की ओर बुलाता है, परन्तु इसकी वास्तव में यह इच्छा है कि, लोगों से अपनी पूजा कराये। वरन्‌ हम तो इसके आगमन से पूर्व ही एक अल्ला की आराधना करते चले आये हैं। भाष्यकार कहते हैं कि इस विश्वास को हटाने के लिये ही मुहम्मद साहब पर इस आयत के आने की आवश्यकता हुई।

क़ाऽलूऽ अक़्रर्नाऽ, क़ाऽला फ़ऽश्हदूऽ व आनाऽ मअ़-कुम्मिन-श्शाहिदीन् ॥८०॥

और हे पैग़म्बर! [इनको उस समय का स्मरण दिलाओ] जब कि, अल्लाह ने पैग़म्बरों से प्रतिज्ञा ली कि, हम जो तुमको अपनी पुस्तक और बुद्धि प्रदान करें [और] फिर कोई पैग़म्बर तुम्हारे पास आये [और] जो पुस्तक तुम्हारे पास है, उस की पुष्टि भी करे, तो देखो! अवश्य उसपर ईमान लाना। और, उसकी सहायता अवश्य करना। और, कहा कि, क्या तुमने प्रतिज्ञा करली, और इन बातों पर जो हमने तुमसे प्रतिज्ञा कराई है, उसको स्वीकार किया? पैग़म्बरों ने प्रार्थना की कि, हां, हम प्रतिज्ञा करते हैं। अल्लाह ने कहा, अच्छा तो आज की प्रतिज्ञा के साक्षी रहो। और, तुम्हारे साथ साक्षियों में से [एक] हम भी (साक्षी) हैं।

(२) फ़मन् तवल्ला बअ्दा ज़ालिका फ़ उलाऽ-इका हुमुऽल् फ़ासिक़ून् ॥८१॥

तो इस (प्रतिज्ञा किये) पश्चात् यदि कोई (प्रतिज्ञा से) पराङ्मुख (अर्थात् मुनहरिफ़) हो, तो वही लोग अना-ज्ञाकारी हैं।

(३) अफ़ा ग़य्रा दीनिऽल्लाहि यब्ग़ूना वलहूऽ असलमा मन् फ़ि-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि तउ़अ़-ऽव्व कर्हऽव्व इलय्हि युर्जऊ़न् ॥८२॥

क्या यह लोग अल्लाह के मत के अतिरिक्त किसी और

मतकी तलाश में हैं। और, जो लोग पृथ्वी पर हैं, वह सब उसीके आज्ञाकारी हैं। और, उसकी ओर सब को लौटकर जाना है।

(४) कुल् आमन्नाऽ बिऽल्लाहि वमा३ उन्ज़िला अ़लय्नाऽ वमा३ उन्ज़िला अ़ला३ इब्राहीमा व इस्माई़ला व इस्हाक़ा व यअ़्कूबा वऽल् अस्बाऽति वमा३ ऊतिया मूसा व ई़सा वन्नबिय्यूना मिर्रब्बिहिम्ः लाऽ नुफ़र्रिकु बय्ना अह़दिम्मिन्हुम् , व नह्नु लहू मुस्लिमून् ॥८३॥

हे पैग़म्बर ! इन लोगों से कहो कि, हम अल्लाह पर ईमान लाये, और, पुस्तक हम पर उतरी है, उस पर, और, जो इब्राहीम और इस्माईल, और, इसहाक़ और याकूब, और, उस की सन्तान पर उतरे उन पर, और, ईसा और मूसा, और (अन्य) पैग़म्बरों को जो पुस्तकें उन के पालनकर्त्ता की ओर से प्रदान की गईं, उन पर। हम तो उन (पैग़म्बरों) में से किसी में भी अन्तर नहीं बताते। और, हम उसी (एक खुदा) की आज्ञा पर हैं।

(५) व मँय्यब्तग़ि ग़य्रऽल् इस्लाऽमि दीनऽन् फ़ लँय्युक़्बला मिन्हु, व हुवा फ़िऽल् आख़िरति मिनऽल् ख़ासिरीन् ॥८४॥

और, जो पुरुष इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म की खोज में हो, तो अल्लाह के यहां उसका वह मत माननीय नहीं

और वह परलोक (आखिरत) में घाटा उठाने वालों (ज़ियाकारों) में होगा ।

(६) कय्फ़ा यह्दिऽल्लाहु क़उ्मऽन् कफ़रूऽ बअ्दा ईमाऽनिहिम् व शाहिदू३ अन्न-रसूला हक़्कु ञ्व ज़ा३अहुमुऽल् बय्यिनातु; वऽल्लाहु लाऽ यह्दिऽल् क़उ्म-ज़्ज़ालिमीन् ॥८५॥

अल्लाह ऐसे मनुष्यों को क्यों उपदेश देने लगा, जो ईमान लाये पश्चात् कुफ़् करने लगे ? और, वह प्रतिज्ञा कर चुके थे कि, पैग़म्बर (का आगमन) सत्य है । और, अल्लाह हठ-धर्मी लोगों को शिक्षा नहीं दिया करता ।

(७) उला३इका जज़ा३उ हुम् अन्ना अ़लय्हिम् लअ्नतऽल्लाहि वऽल् मला३इकति वन्नाऽसि अज्मई़न् —॥८६॥

यह और इनको दण्ड यह है कि इन पर अल्लाह की और फरिश्तों की और लोगों की सब की फटकार (है) ।

(८) ख़ालिदीना फ़ीहाऽ, लाऽ युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुऽल् अ़ज़ाऽबु वलाऽहुम् युन्ज़रून् —॥८७॥

---

* भाष्यकार बेज़ावी जिसको सभी ने माननीय माना है, कहता है कि यह आयत, "पिछले समस्त मतों को तथा उन सब (मतों का) जिनको भविष्य में उद्भव होवे, रद्द करता है" (देखो तफ़्सीर बेज़ावी प्रथम जिल्द, पृ० १६४)

कि इसी (तिरस्कृत) दशा में निरन्तर रहेंगे, न तो इनसे भारी दुख (अजाब) ही न्यून किया जावेगा। और न, इनको अवकाश [अमित मुहलत] ही दी जावेगी।

(९) इल्लऽऽल्लज़ीना ताऽबूऽ मिन् ँ बअ्‌दि ज़ालिका व अस्लहू,ऽ फ़ इन्नऽल्लाहा ग़फूरुर्-रहीम् ॥८८॥

परन्तु जिन लोगों ने ऐसा किया पीछे तोबा [पश्चात्ताप] किया। और, [अपनी दशा का] सुधार कर लिया, तो अल्लाह क्षमा करने वाला, दयालु है।

(१०) इन्नऽल्लज़ीना कफ़रूऽ बअ्‌दा ईमाऽनिहिम् सुम्मऽज़्दाऽदूऽ कुफ्‌ऽल्लन् तुक़्बला तउ्बतु हुम्, व उलाऽइका हुमु-ज़्ज़ाऽल्लून् ॥८९॥

जो लोग ईमान लाये पीछे फिर बैठे (और) फिर उनका कुफ्र बढ़ता चला गया, तो ऐसों की प्रायश्चित्-प्रार्थना अर्थात् तोबा) कदापि स्वीकृत न होगी। और, यही लोग (मार्ग-भ्रष्ट) भूले हुए हैं।

(११) इन्नऽल्लज़ीना कफ़रूऽ वमाऽतूऽ वहुम् कु.फ्फ़ारुन् फ़ लँय्युक़्बला मिन् अहादिहिम्मिल् उऽल् अर्ज़ि ज़हबऽव्वला विऽफ्‌तदा बिहीऽ उलाऽइका लहुम् अज़ाऽबुन् अलीमु व्व माऽ लहुम्मिन्नासिरीन् ॥९०॥

जिन लोगों ने (इस्लाम को) अस्वीकार किया। और, (इसी) अस्वीकृति की अवस्था में ही अन्त हो गया। उनमें का कोई भी पुरुष परिवर्तन में पृथ्वी भर का सुवर्ण देना चाहे तो कदापि स्वीकार नहीं किया जायगा। यही लोग हैं जिनको अन्त में (क़यामत के दिन) दारुण दुख दिया जावेगा। और, (उस समय) उनका कोई भी सहायक न होगा।

[पारा तिल्क-र्रुसुल समाप्त]
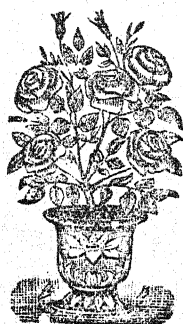
पारा लन् तनाऽलुऽ ।

[म० १; पारा ४; रु० १०]

(१) लन्तनाऽलुऽऽल् बिर्रा हत्ता तुन्फ़िक़ूऽ मिम्माऽ तुहिब्बून ; । वमाऽ तुन्फ़िक़ूऽ मिन् शय्इन् फ़इन्नऽल्लाहा बिही अ़लीम ॥९१॥

मनुष्यो ! जब तक (अल्लाह के मार्ग) में उन पदार्थों में से, जो तुम्हें प्रिय है, व्यय न करोगे- सुकृत्य को कदापि न प्राप्त कर सकोगे। और, कोई सी वस्तु भी व्यय करो, अल्लाह उसको जानता है।

(२) कुल्लु-त्तअ़ाऽमि काऽना हिल्लऽल्लि बनी३ इस्राईला इल्लाऽ माऽ हर्रमा इस्राईलु अ़ला: नफ़्सिही मिन्क़ब्लि अन्तुनज़्ज़ल-तउ्रातु; कुल् फ़अ्तूऽ बि-त्तउ्राति फ़ऽत्लू हा३ इन्कुन्तुम् सादिक़ीन् ॥९२॥

जो वस्तु याकूब ने अपने निमित्त अखाद्य (हराम) कर ली थी, उसको छोड़ कर तौरेत उतरने से पूर्व समस्त खाद्य

पदार्थ ईस्राईल के वंश के लिये भक्ष्य (हलाल) थे। (हे पैग़म्बर ! इन यहूदियों से) कहो कि, यदि तुम सच्चे हो, तो तौरेत ले आओ, और, उसको (हमारे सन्मुख) पढ़ो।

(३) फ़मानिऽफ़्तरा अ़लऽल्लाहिऽल् कज़िबा मिन् ऽँ बअ़्दि ज़ालिका फ़ उलाऽइका हुमुऽज़्ज़ालिमून् ॥९३॥

फिर उस (विवाद) के उपरान्त भी यदि कोई अल्लाह पर असत्य आक्षेप आरोपित करे, तो (समझो कि) ऐसे ही मनुष्य हठ धर्मी हैं।

(४) क़ुल् सदक़ऽल्लाहु फ़ऽत्तबिऊऽ मिल्लता इब्राहीम हनीफ़ऽन् ; वमाऽ काऽना मिनऽल् मुश्रिकीन् ॥९४॥

(हे पैग़म्बर ! इन यहूदियों से) कहो कि, अल्लाह ने सत्य कहा। सो (उसी के कथनानुसार) इब्राहीम की विधि का अनुसरण करो, जो एक (अल्लाह) के ही (आराधक) होकर रहे थे, और, जो द्वैतवादियों (मुश्रिकों) में से न थे।

(५) इन्ना अऽव्वला बय्तिऽव्व ज़िअ़ा लिन्नाऽसि लल्लज़ी बिबक्कता मुबारकऽव्व हुदल्लिल् अ़ालमीन् , ॥९५॥

लोगों के लिये जो पहला घर निश्चित हुआ, वह यही है,

जो मक्का में है। (यह घर) समर्थक* और संसार भर के मनुष्यों के लिये शिक्षा (प्रद है)।

(६) फ़ीहि आयातुन् ॅ बय्यिनातुम्मक़ाऽमु इब्राहीमु। व मन् दख़लहू काऽना आमिनऽन्; व लिल्लाहि अ.ल-न्नाऽसि हिज्जुऽल् बयूति मनिऽस्तताऽअ.। इलयहि सबीलऽन्; व मन् कफ़रा फ़ इन्नऽल्लाहा ग़निय्युन् अ.निऽल् अ.ालमीन।६६।

इस में अनेक प्रगट चिन्ह हैं:—इब्राहीम के खड़े होने का स्थान*। और, जिसने इस घर में प्रवेश प्राप्त कर लिया, वह सुरक्षित हो गया। और, लोगों का कर्त्तव्य है कि, अल्लाह के लिये काबा‡ के गृह की यात्रा (हज) करें। जिस को उस तक पहुँचने की सामर्थ्य† हो, और जो (सामर्थ्यवान् होते हुये हज को न जा कर) कृतघ्नता करे, तो अल्लाह संसार से पृथक है।

---

* बरकत देने वाला।

* 'मक़ामु इब्राहीम;' इब्राहीम का प्रार्थना-स्थान, जिसकी इमारत आठ आठ फीट ऊंचे ६ सतूनों पर खड़ी है।

‡ कहा जाता है कि काबा को इब्राहीम और इस्माईल ने बनाया।

† हज मुसलमानों का मज़हबी फ़र्ज़ है। परन्तु जिन मनुष्यों पर धन है और स्वयं हज को नहीं जा सकते, उन्हें अपने स्थान में अन्य मनुष्य को किराया करके भेज देना चाहिये। क्योंकि मुसलमान मानते हैं कि काबा की यात्रा की ओर जाने के लिये उठने वाला प्रत्येक पग १ पाप को नाश कर देता है। और, जो मनुष्य मक्के के मार्ग में मर जाते हैं, उनका नाम शहीदों की सूची में लिख लिया जाता है। हज की यात्रा में क्या २ करना होता है, यह अन्यत्र विदित होगा।

(७) कुल् याऽ अह्लऽल् किताबि लिमा तक्फुरूना बिआयातिऽ ल्लाहि: वऽल्लाहु शहीदुन् अ़ला माऽ तअ़्मलून् ॥९७॥

(हे पैग़म्बर! लोगों से) कहो कि, हे पुस्तक वालो! अल्ला की आज्ञा से क्यों पराङ्मुख होते हो? और, जो कुछ भी तुम कर रहे हो, अल्लाह उसका साक्षी है।

(८) कुल् याऽ अह्लऽल् किताबि लिमा तसुद्दूना अ़न् सबीलिऽल्लाहि मन् आमना तब्ग़ूनहाऽ इ़वाजऽव्व अन्तुम् शुहदाऽउ; वमऽऽल्लाहु बि ग़ाऽफ़िलिन् अ़म्माऽ तअ़्मलून् ॥९८॥

(हे पैग़म्बर! इनसे) कहो कि, हे पुस्तक वालो! जान-बूझ कर अल्लाह के मार्ग में (व्यर्थ) दोष निकाल-निकाल कर ईमान वालों को क्यों रोकते हो? और, जो कुछ भी तुम कर रहे हो, अल्लाह उससे बेख़बर नहीं।

(९) याऽ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ इन् तुतीऊ़ऽ फ़रीक़ऽम्मिनऽल्लज़ीना ऊतुऽऽल् किताबा यरुद्दूकुम् बअ़्दा ईमाऽनिकुम् काफ़िरीन् ॥९९॥

मुसल्मानो! यदि तुम पुस्तक वालों के किसी भी समुदाय की आज्ञा मानोगे, तो वह, तुम्हारे (इस्लाम पर) ईमान लाये पीछे, तुमको फिर काफ़िर बना छोड़ेंगे।

(१०) व कय्फ़ा तक्फ़ुरूना व अन्तुम् तुत्ला अ़लय्कुम् आयातुऽल्लाहि व फ़ी कुम् रसूलुहू; व मँय्यअ़्तसिम् बिऽल्लाहि फ़क़द् हुदिया इला सिराऽतिम्मुस्तक़ीम् ॥१००॥

और तुम कैसे कुफ़्र करने लगोगे, जब कि, अल्ला की आयतें तुम को पढ़-पढ़ कर सुनाई जाती हैं, और उसके प्रेषित (रसूल) तुममें उपस्थित हैं। और जो मनुष्य अल्ला को दृढ़ता से पकड़े रहे, तो वह सन्मार्ग पर आ गया।

(११) याऽ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनुऽऽत्तक़ुऽऽल्लाहा ह़क़्क़ा तुक़ातिही वलाऽ तमूतुन्नाइल्लाऽ व अन्तुम्मुस्लिमून् ॥१०१॥

मुसल्मानो! अल्ला से भय करो, जैसा उस से भय करने का अधिकार है। और, इस्लाम पर ही मरना।

[१२] वऽअ़्तसिमूऽ बिह़ब्लिऽल्लाहि जमीअ़ऽ व्वलाऽ तफ़र्रक़ूऽ; वऽज़्कुरूऽ निअ़्मतऽल्लाहि अ़लय्कुम् इज़्कुन्तुम् अअ़्दाऽअन् फ़अल्लफ़ा बय्ना क़ुलूबिकुम् फ़अस्बह़्तुम् बिनिअ़्मतिहीऽ इख़्वाऽनऽन्, व कुन्तुम् अ़ला शफ़ाऽ ह़ुफ़्रतिम्मिन-न्नाऽरि फ़ अन्क़ज़कुम्मिन्हाऽ; कज़ालिका युबय्यिनुऽल्लाहु लकुम् आयातिही लअ़ल्लकुम् तह्तदून् ॥१०२॥

और सब (मिलकर) दृढ़ता से अल्लाह (के दीन) की डोरी को पकड़े रहो, और एक दूसरे से प्रथक न होना। और, अल्लाह का वह उपकार स्मरण करो, जब तुम (एक-दूसरे के) शत्रु थे। फिर अल्लाह ने तुम्हारे अन्तःकरण (मनों) में प्रेम उत्पन्न किया. और तुम उसके अनुग्रह से (परस्पर) भाई (भाई) हो गये। और, तुम आग के गड्ढे अर्थात् दोज़ख़ के किनारे (पर) थे। फिर, उसने तुम को उससे बचा लिया। इसी प्रकार अल्ला अपनी आज्ञाएँ तुमसे स्पष्टतः वर्णन करता है, जिस से कि, तुम सीधे मार्ग पर आ जाओ।

(३) वल्तकुम्मिन्कुम् उम्मतु य्यद्ऊ़ना इलऽल् ख़य्रि व यअ्मुरूना बिऽल् मअ्.रूफ़ि व यन्हउ्ना अ.निऽल् मुन्करि; व उलाइका हुमुऽल् मुफ़्.लहून् ॥१०३॥

और, तुम में एक ऐसा समुदाय भी होना चाहिये, जो (मनुष्यों को) सत्कर्मों की ओर बुलाये, और शुभ कार्य्य (करने की प्रेरणा करे, और, बुरे कर्म से रोके। और, (अन्त में) ऐसे ही मनुष्य अपने मनोरथ को प्राप्त करेंगे।

(४-५) वलाऽ तकूनूऽ कऽल्लज़ीना तफ़र्रकूऽ वऽख़्तलफ़ूऽ मिन् ब.अ्.दि माऽ जाइआ हुमुऽल् बय्यिनातु; व उलाइका लहुम् अ.ज़ाऽबुन् अ.ज़ीमु य्यउ्मा तब्यज़्ज़ु वजूहुव्व तस्वद्दु वुजूहुन्, फ़ अम्माऽऽल्लज़ीनऽस्वद्दत् वुजूहुहुम् अकफ़्.तुम्

वअ्.दा ईमाऽनिकुम् फ़ज़ूक़ूऽऽल् अ.ज़ाऽबा बिमाऽ कुन्तुम् तक्फ़ुरून् ॥१०५॥

और, उन जैसे न बनो, जो एक दूसरे से बिछुड़ गये। और, अपने पास स्पष्ट आज्ञाएँ आने के पश्चात्, परस्पर विरोध (मत-भेद) बढ़ाने लगे। और यही हैं, जिन पर (अन्त में) प्रचण्ड प्रकोप होगा; जिस दिन कुछ मनुष्यों के मुख श्वेत होंगे और (कुछ के) मुख श्याम! तब जो मनुष्य कृष्ण-मुख होंगे, उन से कहा जायगा कि, तुम ईमान लाये पश्चात् काफ़िर हो गये थे क्या? लो, अब अपने कुफ़्र के दण्ड में आतङ्क (दुःख) का आस्वादन करो।

(६) व अम्माऽऽल्लज़ीनऽब् यज़्ज़त् वुजूहुहुम् फ़फ़ी रह्मतिऽल्लाहि; हुम् फ़ीहाऽ ख़ालिदून् ॥१०६॥

और जो लोग श्वेत मुख होंगे, (वह) अल्लाह की अनुग्रह (अर्थात् बहिश्त) में होंगे। (और) वह उसी में निरन्तर निवास करेंगे।

(७) तिल्का आयातुऽल्लाहि नत्लूहाऽ अ.लयका बिऽल् ह.क़्क़ि; वमाऽऽल्लाहु युरीदु ज़ुल्मऽल्लिल् अ.ालमीन् ॥१०७॥

हे पैग़म्बर! यह वास्तव में अल्ला की आयतें हैं, जो हम तुमको पढ़-पढ़कर सुनाते हैं। और, अल्ला दुनियां के मनुष्यों पर अत्याचार नहीं करना चाहता।

(८) व लिल्लाहि माऽफ़ि-स्समावाति वमाऽ फ़िऽल् अर्ज़ि; व इलऽल्लाहि तुर्जा उ.ऽल् उमूर् ॥१०८

और, जो कुछ आकाशों में है, और जो कुछ भूमि पर है। सब अल्लाह ही का है। और, (सब) कामों की पहुंच (अन्त में) अल्ला तक ही है।

(मं० १, पारा ४, रुकूअ. १२)

(१) कुन्तुम् ख़य्रा उम्मतिन् उख़्रिजत् लि-न्नाऽसि तअ्मुरूना बिऽल् मअ्रूफ़ि व तन्हउना अ.निऽल् मुन्करि व तुअ्मिनूना बिऽल्लाहि; वलउ् आमना अह्लुऽल् किताबि लकाऽना ख़य्रऽल्लहुम्; मिन्हुमुऽल् मुअ्मिनूना व अक्सरु हुमुऽल् फ़ासिक़ून् ॥१०९॥

मनुष्यों (के नेतृत्व) के लिये जितनी उम्मतें * उत्पन्न हुईं, उन में तुम (मुसल्मान) सब से उत्कृष्ट हो (क्यों) कि अच्छों† (काम करने) को कहते हो, और, बुरे (कर्म करने) से रोकते, और अल्लाह पर ईमान रखते हो। और, यदि पुस्तक वाले (यहूदी आदि) ईमान ले आते, तो उन के प्रति लाभ-

---

* प्रजा अर्थात् गिरोह जो किसी पैग़म्बर की प्रजा (अधीनता में) हो, जैसे नसारा, यहूदी और मुसलमान।

† इस्लाम के मन्तव्यानुसार ही 'अच्छा' अभिप्रेत है। वरन् वास्तविक 'अच्छा' तो वह है जो सर्वत्र और सब के लिये उपकारी और अच्छा सिद्ध हो।

कारी था। (परन्तु) उनमें से थोड़े ईमान लाये और (उनमें से) बहुसंख्यक विरोधी हुये।

(२) लँ य्यज़ुर्रूकुम् इल्ला३ अज़न्; वइँ य्यु क़ाऽतिलूकुम् युवल्लूकुमुऽल् अद्बाऽरा सुम्मा लाऽ युन्सरून् ॥११०॥

(मुसल्मानो ! साधारण) कष्ट देने के अतिरिक्त वह अन्य (कोई भारी) हानि तुम्हें न पहुंचा सकेंगे। और, यदि वह तुम से युद्ध करेंगे तो उन को तुम्हारी ओर पीठ फेरते ही बन पड़ेगी (और) फिर उन को (कहीं से) सहायता नहीं मिलेगी।

(३) ज़ुरिबत् अलय्हिमु-ज़िज़्ल्लतु अय्ना माऽ सुक़िफ़ू३ इल्लाऽ बिहब्लिम्मिनऽल्लाहि व हब्लिम्मिन-न्नाऽसि वबा३ऊ बि ग़ज़बिम्मिनऽ-ल्लाहि व ज़ुरिबत् अ.लय्हिमुऽल् मस्कनतु; ज़ालिका बि अन्नहुम् काऽनूऽ यक्फ़ुरूना बि आयातिऽल्लाहि व यक्तुलूनऽल अन् ्ँबिया३आ बिग़य्रि हक़्क़िन्; ज़ालिका बिमाऽ अ.सउऽव्व काऽनूऽ यअ्तदून् ॥१११॥

जहां देखो, उन (के शिर) पर अपमान (और अनादर) का आघात* है। परन्तु अल्लाह के कारण और अन्य लोगों के

* अर्थात् सब जगह उनकी ख्वारी है।

कारण (उनको कहीं शरण दे दी गई तो दूसरी बात है) और, अल्लाह के प्रकोप (से पीड़ित दशा) में पड़ेंगे। और (इसके अतिरिक्त) दरिद्रता है (जो) उनके पीछे पड़ी है। और यह इसका दण्ड है कि वह अल्ला की आयतों को अस्वीकार करतेथे, और नबियों को (भी) निरर्थक नष्ट (क़त्ल) किया करते थे। यह इसका दण्ड है कि, उन्होंने आज्ञा का उल्लङ्घन किया और मर्यादा से बढ़ गये थे।

(४) लयसूऽ सवा३अन्; मिन् अह्लिऽल् किताबि उम्मतुन् क़ा३इमतुय्यत्लूना आयातिऽ-ल्लाहि आना३अल्लय्लि वहुम् यस्जुदून् ॥११२॥

एक समान नहीं। पुस्तक वालों में से कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो रातों को (नमाज में) खड़े रह कर अल्लाह की आयतें पढ़ते, और, अल्लाह के आगे सिजदा करते हैं।

(५) युअ्मिनूना बिऽल्लाहि वऽल् यउ्मि-ऽल् आख़िरि व यअ्मुरूना बिऽल् मअ्रूफि. व यन्हउ्ना अ.निऽल् मुन्करि व युसाऽरिऊ़ना फ़िऽल् ख़य्राति; व उला३इका मिन-स्सालिहीन् ॥११३॥

अल्ला और अन्त के दिन पर विश्वास करते हैं और अच्छे काम करने को कहते, और बुरे कामों से रोकते, और (आप

भी) सत्कर्मों में लग पड़ते हैं, और, यही लोग सत् सेवकों में (सम्मिलित हो सकते) हैं।

(६) वमाऽ यफ़्अ़लूऽ मिन् ख़यरिन् फ़लँय्युक्फ़रूहु; वऽल्लाहु अ़लीमुन् ँ बिऽल् मुत्तक़ीन् ॥११४॥

और, सुकर्म किसी प्रकार भी करें, ऐसा कदापि न होगा कि, उस सुकर्म का सन्मान न किया जाय, और, अल्लाह संयमियों से सुपरिचित है।

(७) इन्नऽल्लज़ीना कफ़रूऽ लन् तुग़्निया अ़न्हुम् अम्वाऽलु हुम् वलाऽ अउ्लाऽदु हुम्मिनऽल्लाहि शय्अन् ; व उलाऽइका अस्हाबु-न्नारि, हुम् फ़ीहाऽ ख़ालिदून् ॥११५॥

जो लोग (इस्लाम से) विमुख हैं, उनकी सम्पति, और, उनकी सन्तित, अल्लाह के यहां कदापि उनके किसी (भी) स्वार्थ की न होगी। और यही लोग नारकी हैं, और निरन्तर नर्क ही में निवास करेंगे।

(८) मसलु माऽयुन्फ़िक़ूना फ़ी हाज़िहिऽल् ह़याति-द्दुन्याऽ कमसलि रीहिन् फ़ीहाऽ सिर्रुन् असाऽबत् ह़र्सा क़उ्मिन् ज़लमूऽ अन्फुसाहुम्

फ़ अह्लाकतहु; वमाऽ ज़लमा हुमुऽल्लाहु वला किन् अन्फ़ुसाहुम् युज़्लिमून् ॥११६॥

और संसार के इस जीवन में जो कुछ भी यह लोग (इस्लाम के विरोध में) व्यय करते हैं, उसका उदाहरण उस वायु का-सा है, जिसमें पाला था, और, वह उन लोगों के खेतों पर पड़ गया, जो (अल्ला की अवज्ञा से) अपना ही अनर्थ कर रहे थे, और, अन्त में उस (खेत) को (मार कर) नष्ट कर गया। और, अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया वरन् वह अपने ऊपर आप अत्याचार कर रहे थे।

(६) या३ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ लाऽ तत्तख़िज़ूऽ बिताऽनतम्मिन्दूनिकुम् लाऽ यअ्लूनकुम् ख़बाऽलऽन् ; वद्दूऽ माऽ अ़निन्तुम् , क़द् बदातिऽल् बग़्ज़ा३उ मिन् अफ़्वाऽहिहिम् , वमाऽ तुख़्फ़ी सुदूरुहुम् अक्बरु; क़द् बय्यन्नाऽ लकुमुऽल् आयाति इन्कुन्तुम् तअ्क़िलून् ॥११७॥

मुसलमानो ! अपने लोगों को छोड़ कर अन्य किसी को अपना भेदी न बनाओ। क्योंकि वह (दूसरे) तुम्हारी हानि में न्यूनता नहीं करते। (वह) चाहते हैं कि, तुमको दुख पहुंचे, और, बैर-भाव तो उनकी बातों से विदित हो-ही चुका है। और, जो (कुछ द्वेष-भाव) उनके हृदयों में (भरे) हैं, वह (इससे भी) बढ़ कर हैं। हमने तुमको पते की बातें बतादीं हैं, (हां,) यदि तुममें बुद्धि है।

(१०) हाऽ अन्तुम् उलाऽइ तुहिब्बूनहुम् वलाऽ युहिब्बूनकुम् व तुअ्मिनूना बिऽल् किताबि कुल्लिही, व इज़ाऽ लकूकुम् क़ाऽलूऽ आमन्नाऽ, व इज़ाऽ ख़लउऽ अ़ज़्ज़ूऽ अ़लयकुमुऽल् अनाऽमिला मिनऽल् ग़यज़ि; कुल् मूतूऽ बि ग़यज़िकुम्; इन्नऽल्लाहा अ़लीमुन् ॱ बिज़ाऽति-स्सुदूर् ॥११८॥

सुनो जी! तुम लोग उनके मित्र हो; और वह तुम्हारे मित्र नहीं। और, तुम सब पुस्तकों को मानते हो, (परन्तु वह तुम्हारे क़ुरान को नहीं मानते) और जब तुमसे मिलते हैं, तो कह देते हैं कि, हम भी ईमान ले आये हैं, और जब अकेले होते हैं, तो तुम पर (विरोध की बाण वर्षा करने के लिये) रोष के मारे अपनी उंगलियों को * काट काट खाते हैं। (हे पैग़म्बर इनसे) तू कह कि, अपने क्रोध में (जल) मरो। अल्लाह तुम्हारे मनों की वासनाओं को जानता है।

(११) इन्तम्सस्कुम् ह़सनतुन् तसुअ्हुम व इन्तुसिब्कुम् सय्यिअतुय्यफ़्ह़ूऽ बिहाऽ; व इन्त-

---

* 'अनामिल' असल में उंगलियों के पोरुओं को कहते हैं। परन्तु अनामिल के काटने का भाव 'उंगलियां काटकाट खाना' इस मुहाविरे में भले प्रकार घटता है।

स्विरू ऽ व तत्तकू ऽ ला ऽ यजुरु कुम् कय्दुहुम् शय्-अ ऽन् ; इन्न ऽल्लाहा बिमा ऽ यअ्मलूना मुहीत् ॥ ११६ ॥

मुसलमानो ! यदि तुमको कोई आनन्द (लाभ) हो, तो इन को बुरा लगता है; और यदि तुम पर कोई आपदा आजाये तो (यह यहूदो) प्रसन्न होते हैं। और यदि तुम सन्तोष (अर्थात् दृढ़ता धारण) करो, और (बदले में अनर्थ से) बचे रहो, तो उनके कपट से तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगड़ेगा। क्यों कि जो कुछ यह कर रहे हैं, सब अल्लाह के वश * में है

[मं० १, पारा ४, रुकूअ. १३]

(१) व इज् ग़दउ्ता मिन् अह्लिका तुबव्वि-उ ऽल मुअ्मिनीना मक़ा ऽइ.दा लिल् क़िता ऽलि; व ऽल्लाहु समीउ़न् अ.लीम् ॥१२०॥

और (हे पैग़म्बर !) एक समय वह भी था कि तुम प्रातः-काल अपने गृह से चले (और) मुसलमानों को युद्ध † के स्थलों पर बिठाने लगे। और, अल्ला (सब की सब कुछ) सुनता और जानता है।

---

*मुहीत का अर्थ अहाता अथवा घेरा है। परन्तु शाह अब्दुल क़ादिर ने 'वश' ही किया है।

† अभिप्राय उहुद की लड़ाई से है।

(२) इज़् हम्मत्ताइफ़तानि मिन्कुम् अन्त.फ़्शला-अ़ल्लाहु वलिय्युहुमा; व अ.लल्लाहि फ़.ल् यतावक्कलिल् मु अ्मिनून् ॥१२१॥

यह उसी समय की घटना है कि तुममें से दो(अन्सारी) दलों ने साहस छोड़ देना चाहा परन्तु अल्ला उनकी सहायता पर (उपस्थित) था। और, मुसलमानों को उचित है कि, अल्ला ही पर भरोसा रक्खें।

(३) वलक़द् नसरा कुमुल्लाहु बिबद्रिव्व अन्तुम् अज़िल्लतुन्, फ़त्तक़ुल्लाहा लअ.ल्लकुम् तश्कुरून् ॥१२२॥

और, यद्यपि बद्र (के युद्ध) में अल्ला तुम्हारी सहायता कर ही चुका था, यद्यपि तुम तुच्छ थे। तुम अल्लाह से भय करते रहो, कदाचित तुम (उसकी) कृतज्ञता स्वीकार करो।

(४) इज़् तक़ूलु लिल् मु अ्मिनीना अलँ य्यक्फ़ियाकुम् अँय्युमिद्दकुम् रब्बुकुम् बिसलासति आलाफ़िम्मिनल् मलाइकति मुन्ज़लीन्; ॥१२३॥

और (हे पैग़म्बर ! वह समय स्मरण करो) जब तुमने मुसलमानों से कहा कि, क्या तुम्हारे लिये इतना पर्य्याप्त नहीं कि, तुम्हारा अल्लाह तुम्हारी सहायता के लिये ३००० फ़रिश्ते आसमान से उतारे।

(५) बला३ इन्तस्बिरू व तत्तक़ूऽ व यअ्तू कु-म्मिन् फ़ौ रिहिम् हाज़ाऽ युम्दिद्कुम् रब्बुकुम् बिख़म्सति आलाऽफ़िम्मिनऽल् मला३इकति मुसव्विमीन् ॥१२४॥

वरन यदि तुम दृढ़ रहो और (अल्ला तथा रसूल की आज्ञा उल्लंघन करने से) बचो। और, शत्रु भी तुम पर इसी समय आक्रमण करदे, तो तुम्हारा पालनकर्त्ता ५ सहस्र फरिश्तों से तुम्हारी सहायता करेगा (और) जो बड़ी सज-धज से आ * उपस्थित होंगे।

(६) वमाऽ जअ़लहुऽल्लाहु इल्लाऽ बुश्रा लकुम् व लितत्मइन्ना क़ुलूबुकुम् बिही; वमऽ-न्नस्रु इल्लाऽ मिन् इन्दिऽल्लाहिऽल् अ़ज़ीज़िऽल ह़कीम् —॥१२५॥

---

* यह सब उहुद के युद्ध का वर्णन है इस में मुहम्मद साहब की काफ़िरों के विपक्ष में पराजय हुई। ७० मुसलमान मारे गये और अल्लाह के प्रेषित पैग़म्बर मुहम्मद साहब भी घायल हुए और मुर्दों में पड़ गये। लोगों ने समझा कि मुहम्मद सा० क़तल कर दिये गये और इस समाचार को सुन कर मदीना निवासी बहुत घबरा गये। इस लड़ाई में एक तीर के लगने से मुहम्मद सा० के (दो) दांत टूट गये। और हज़रत गढ़े में गिर गये। आप के शिर में भी चोट आई तो उस समय हज़रत को बड़ा क्रोध आया और काफ़िरों के लिये बद्दुआ करनी चाही; परन्तु (लिखा है कि) अल्ला ने रोक दिया।

और यह सहायता तो अल्ला ने केवल तुम्हारे प्रसन्न करने को की, और, इसलिये की कि, तुम्हारे मन परितोष प्राप्त करें। वरन् वास्तविक सहायता तो अल्लाह ही की ओर से है जो बड़ा बलशाली और बुद्धिमान् है।

(७) लि यक़्तअ़ा तरफ़ऽम्मिनऽल्लज़ीना कफ़रू३ अउ् यक्बितहुम् फ़यन्क़लिबू ख़ाइबीन् ॥१२६॥

और सहायता भी दी तो इसलिये (दी) कि काफ़िरों (की संख्या) को कुछ न्यून करे* अथवा (उन्हें) इतना तिरस्कृत करें कि (खिसिया कर) निराश लौट जावें।

(८) लय्सा लका मिनऽल् अम्रि शय्उन् अउ् यतूबा अ़लय्हिम् अउ् युअ़ज़्ज़िबहुम् फ़इन्नहुम् ज़ालिमून् ॥१२७॥

(हे पैग़म्बर!) तुम्हारा तो कुछ भी अधिकार नहीं। चाहे अल्लाह उन पर दया करे अथवा उनके अत्याचारों पर दृष्टि (विचार) करके उनको दण्ड दे।

(९) व लिल्लाहि माऽफ़ि-स्समावाति वमाऽ फ़िऽल् अर्ज़ि; यग़्फ़िरु लिमँ य्यशाउ व युअ़ज़्ज़िबु मँ य्यशाउ वऽल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम् ॥१२८॥

---

* अल्लाह का मुसलमानों की सहायता करना और काफ़िरों को कम करने की बात केवल मुसलमानों को युद्ध के लिये प्रोत्साहित करना मात्र प्रतीत होता है। सं०।

और, जो कुछ आसमानों में है, और, जो कुछ भूमि पर है, सब अल्ला है। (वह) जिसको चाहे क्षमा करे और जिसको चाहे, दण्ड देवे। और, अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।

[मं० १, पा० ४, रु० १४॥]

(१) या३ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ लाऽ तअ्‌कुलुऽ-र्रिबा३ अज़्‌अ़ा फ़ऽम्मु ज़ाअ़फ़ातन्‌ : वऽत्तक़ुऽऽल्लाहा लअ़ल्लकुम्‌ तुफ़्लहून्‌ ॥१२६॥

मुसलमानो! दुगुना चौगुना ब्याज न खाओ (कि मूल में मिल २ कर) दुगुना चौगुना (होता चला जाय) और अल्ला से डरो! आश्चर्य नहीं (अन्त में) तुम

(२) वऽत्तक़ुऽ-न्नाऽरऽल्लती३ उ इ़द्दत्‌ लिल्का फ़िरीन ॥१३०॥

और दोज़ख का भय करते रहो जो क़ाफिरों के निमित्त तय्यार है।

(३) व अतीउऽऽल्लाहा व-र्रसूला लअ़ल्लकुम्‌ तुर्हमून्‌ ॥१३१॥

और अल्लाह और पैग़म्बर की आज्ञा मानो जिससे आश्चर्य नहीं, तुम पर दया दर्शाई जाय।

(४-५) वसाऽरिऊ़३ इला मग़्फ़िरातिम्मिर्रब्बि कुम्‌ व जन्नतिन्‌ अ़र्ज़ुहऽ-स्समावातु वऽल्‌ अ़र्ज़ु

उइ.द्दत् लिल् मुत्तक़ीनऽल्लज़ीना युन्फ़िक़ूना फ़ि-स्सर्राइ व-ज़्ज़र्राइ वऽल् काऽज़िमीनऽल् ग़यज़ा वऽल् आऽफ़ीना अ़नि-न्नाऽसि; वऽ-ल्लाहु युहिब्बुल् मुह्सिनीन ॥१३२-१३३॥

और, दौड़ो! अपने पालनकर्त्ता की क्षमा और बहिश्त की ओर, जिसका विस्तार इतना है जितना आकाश और धरती का (विस्तार। और, जो) संयमियों के लिये तैयार है। जो वैभव और विपत्ति (दोनों दशाओं) में व्यय करते हैं, और रोष को रोकते हैं, और, मनुष्यों के अपराधों को टालमटूल कर देते हैं, और, मनुष्यों के साथ उपकार करने वालों को अल्ला मित्र रखता है।

(६)वऽल्लज़ीना इज़ाऽ फ़अ़लूऽ फ़ाऽहिशतन अउ ज़लमूऽ अन्फ़ुसाहुम् ज़करुऽऽल्लाहा फ़ऽस्त-ग़्फ़रूऽ लिज़ुनूबिहिम् व मँय्यग़्फ़िरु-ज़्ज़ुनूबा इल्लऽल्लाहु वलम् युसिर्रूऽ अ़ला माऽ फ़अ़लूऽ वहुम् यअ़्लमून ॥१३४॥

और, वह लोग ऐसे हैं कि, जब कोई निर्लज्जता का कार्य्य कर बैठते हैं अथवा अपना अनर्थ कर लेते हैं, तो अल्ला को स्मरण करके अपने पापों की क्षमा-याचना करते हैं। और पापों का क्षमा करने वाला अल्ला के अलावा (अन्य) है ही

कौन ? और, जो, (अनुचित) कार्य कर बैठते हैं, उस पर जान बूझ कर आग्रह नहीं करते !

(६) उला३इका जज़ा३उ हुम्मग़्फ़िरतुम्मिर्रब्बिहिम् व जन्नातुन् तज्री मिन्तह़्तिहऽऽल् अन्हारु ख़ालिदीना फ़ीहाऽ; व निअ्मा अज्रुऽल् आ़मिलीन् ॥१३५॥

यही लोग हैं। जिन को उनके पालनकर्त्ता की ओर से दया-दान का पुरस्कार है। और (इसके अतिरिक्त बहिश्त के) बाग़, जिनके निकट नहरें बह रहीं होंगी, उनमें (यह) निरन्तर निवास करेंगे। और, (सत) कर्म करने वालों को भी प्रशस्त पुरस्कार है।

(७) क़द् ख़लत् मिन्क़ब्लिकुम् सुनानुन् फ़सीरूऽ फ़िऽल् अर्ज़ि फ़ऽन्ज़ुरूऽ कय्फ़ा काऽना आ़ऽक़िबतुऽल् मुकज़्ज़िबीन् ॥१३६॥

(मुसल्मानो!) तुमसे पूर्व घटनाएँ घटित हो चुकी हैं तो देश पर्यटन (भ्रमण) करो, और, देखो कि जिन लोगों ने मिथ्या बतलाया उनका कैसा परिणाम हुआ।

(८) हा ज़ा बयाऽनु ल्लिन्नाऽसि व हुदव्व मऊ़ इज़तुल्लिल् मुत्तक़ीन् ॥१३७॥

इससे लोगों को समझाना (अभीष्ट) है परन्तु इससे वही लोग शिक्षा और उपदेश उपलब्ध करते हैं, जिनके हृदय में अल्लाह का भय है।

(१०) वलाऽ तहिनूऽ वलाऽ तह्ज़नूऽ व अन्तुमुऽल् अअ्लउ्ना इन्कुन्तुम्मुअ्मिनीन् ॥१३८॥

और हिम्मत न हारो और (इस पराजय से) निराश न हो। यदि तुम सच्चे मुसलमान हो तो (अन्त में) तुम्हारी ही विजय है।

(११,१२) इँय्यम्सस्कुम् क़र्हुन् फ़क़द् मस्सऽल् क़उमा क़र्हुम्मिस्लुहू; व तिलकऽल् अय्याऽमु नुदाऽविलुहाऽ बयन्न्नाऽसि, व लियअ्लमऽल्लाहुऽल्लज़ीना आमनूऽ व यत्तख़िज़ा मिन्कुम् शुहदाऽअा; वऽल्लाहु लाऽ युहिब्बुऽज़्ज़ालिमीन। व लियुमह्हिसऽल्लाहुऽल्लज़ीना आमनूऽ वयम्हक़ऽल काफ़िरीन् ॥१३९, १४०॥

यदि तुमको (इस युद्ध में) चोट लगी है) तो वह लोग भी (बद्र के युद्ध में) ऐसी ही चोट खा चुके हैं। और, यह अवसर-(अवसर) की घटनायें हैं जो हमारी आज्ञा से क्रमशः सब के सम्मुख उपस्थित होती रहती हैं। और, अल्लाह को (सच्चे) मुसलमानों का देखना * अभीष्ट था, और, कुछ

* आज़माइश

(लोगों) को बलिदान (शहादत) की पदवी प्रदान करनी थी। वरन् (वैसे तो) अल्ला अत्याचारियों (अर्थात् काफ़िरों) का पक्ष-पोषक नहीं। और इसलिये कि, अल्ला मुसलमानों को निखारे और काफ़िरों (के बल) को मिटा दे।

(१३) अम् ह सिब्तुम् अन्तद् ख़ुलुऽऽल् जन्नता व लम्माऽ यअ़्लमिऽल्लाहुऽल्लज़ीना जाऽहदूऽ मिन्कुम् व यअ़्लम-स्साबिरीन् ॥१४१॥

क्या तुम इस विचार में हो कि, जन्नत में जा घुसोगे। यद्यपि अल्ला ने न तो उन मनुष्यों की परीक्षा ली, जो तुम में से जेहाद (युद्ध) करने वाले हैं, और,(न) उन लोगोंकी परीक्षा ली, जो (युद्ध में) स्थिर रहते हैं।

(१४) वला क़द् कुन्तुम् तमन्नउ नऽल् मउता मिन् क़ब्लि अन् तल्क़उहु : फ़क़द्रा अयतुमूहु व अन्तुम् तन्ज़ुरून् ॥१४२॥

और, तुम तो मृत्यु के आगमन से पूर्व (अल्लाह के मार्ग में) मरने की विनय किया करते थे, सो अब तो तुमने उस को अपनी आंखों से देख लिया।

[म० १; पारा ४; रु० १५]

(१) वमाऽ मुह म्मदुन् इल्लाऽ रसूलुन्, क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहि-र्रुसुलु; अफ़ाऽइँम्माऽता अउ क़ुति-

लऽन् क़ुतिल्तुम् अ़लाऽ अअ़्क़ाऽबिकुम्; व मँय्यन्क़लिब् अ़ला अ़क़िबय्हि फ़लँ य्यज़ुरऽल्लाहा शय्अन्; वसा यज्ज़िऽल्लाहु-श्शाकिरीन् ॥१४३॥

और मुहम्मद * इससे बढ़कर और क्या कि, एक पैग़म्बर हैं। और, इनके अतिरिक्त अन्य पैग़म्बर (विद्यमान) रह चुके हैं। अतः यदि (मुहम्मद सा०) मर जावें अथवा मारे जावें तो क्या तुम अपने उलटे पैरों पुनः (कुफ़्र की ओर) लौट जाओगे। वह अल्लाह का तो कुछ अनहित नहीं कर सकेगा। और जो लोग (इस्लाम की अनुग्रहों के) कृतज्ञ हैं, उनको अल्ला शीघ्र (शुभ) परिणाम प्रदान करेगा।

[२] वमाऽ काऽना लि नफ़्सिन् अन्तमूता इल्लाऽ बि इज़्निऽल्लाहि किताबऽम्मुअज्जलऽन्; व मँय्युरिद् सवाऽब-द्दुन्याऽ नुअ्तिही मिन्हाऽ, व मँय्युरिद् सवाऽबल् आख़िरति नुअ्तिही मिन्हाऽ; व सा नज्ज़ि-श्शाकिरीन् ॥१४४॥

और कोई मनुष्य अल्लाह की आज्ञा के बिना मर नहीं सकता, (प्रत्येक की मृत्यु का) नियत समय लिखा हुआ है। और जो, संसार में अपनी कृति का परिणाम चाहता है, हम उसका परिणाम यहीं (पर) दे देते हैं। और जो अन्त में (क़यामत में) फल (प्राप्ति) की अभिलाषा रखता है, हम उसको वहीं देंगे,

* उहुद के युद्ध में मुहम्मद की मृत्यु के समाचार से मुहम्मदी निराश हुये तब यह आयत उतरी। कोई इसका कर्ता अबूबकर को ही बताते हैं।

और जो, लोग (इस्लाम के उपकारों के) कृतज्ञ हैं, हम उनको शीघ्र ही शुभ फल देंगे।

(३) वकाअय्यिम्मिन्नबिय्यिन् क़ातला मअ़ाहू रिब्बिय्यूना कसीरुन्, फ़माऽ वहानूऽ लिमा२ असाऽबहुम् फ़ी सबीलिऽल्लाहि वमाऽ ज़अ़ुफ़ूऽ व मऽऽस्तकाऽनूऽ; वऽल्लाहु युहिब्बु-स्साबिरीन् ॥१४५

और, अनेक पैग़म्बर हो चुके हैं, जिनके साथ रह कर बहुत से अल्लाह के अभिलाषी (शत्रुओं से) लड़े हैं। फिर अल्ला के मार्ग में जो विपत्ति उन पर आई, उसके कारण न तो उन्होंने हिम्मत हारी, और न कायरता दिखाई, और न (दुश्मनों से) दबे। और, अल्लाह दृढ़ रहने वालों को मित्र रखता है।

(४) वमाऽ काऽना क़ौलहुम् इल्ला२अन् क़ाऽलूऽ रब्बनऽऽग़्फ़िर्लनाऽ ज़ुनूबनाऽ व इस्राऽफ़नाऽ फ़ी२ अम्रिनाऽ व सब्बित् अक़्दाऽ मनाऽ वऽन्सुर्नाऽ अ़लऽल् क़ौ मिऽल् काफ़िरीन् ॥१४६॥

और, इसके अतिरिक्त उनके मुख से (शिकायत की) एक बात भी तो नहीं निकली (और यह) कि, प्रार्थनाएँ करने लगे कि, हे हमारे पालनकर्ता! हमारे पाप क्षमा कर, और हमारे कार्यों में, जो हमसे अनीति हुई हैं: उन्हें भी क्षमा करदे। और (युद्ध में) हमारे पांव जमाये रख, और, काफ़िरों के झुण्ड पर हमें विजय प्रदान कर।

(५) फ़ अताहुमुऽल्लाहु सवाऽब-द्दुन्याऽ व हुस्ना सवाऽबिऽल् आख़िरति; वऽल्लाहु युहिब्बु-ऽल् मुह्सिनीन् ॥१४७॥

तो अल्ला ने संसार में फल दिया (सो दिया) अन्त में भी शुभ परिणाम प्रदान किया। और, अल्ला निस्वार्थ-भाव से नेकी करने वालों को चाहता है।

[म० १, पा० ४, रु० १६]

(१) याऽ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ इन् तुती-उ्ऽऽल्लज़ीना कफ़रूऽ यरुद्दूकुम् अलाऽ अअ्क़ाऽ-बिकुम् फ़ तन्क़लिबूऽ ख़ासिरीन् ॥१४८॥

मुसलमानो! यदि तुम काफ़िरों के कहे में आ जाओगे, तो वह तुमको उलटे पैरों (कुफ़ की ओर) लौटा कर ले जायँगे। फिर तुम ही उलटे टोटे में रहोगे।

(२) बलिऽल्लाहु मउ्लाकुम्, व हुवा ख़ैरु्-न्नासिरीन् ॥१४९॥

(काफ़िर तुम्हारे शुभेच्छु नहीं) वरन् तुम्हारा वास्तविक शुभचिन्तक अल्लाह है। और, वह सब सहायकों से श्रेष्ठ (सहायक) है।

(३) सनुल्क़ी फ़ी क़ुलूबिऽल्लज़ीना कफ़रुऽ-र्रुअ्बा बिमाऽअश्रकूऽ बिऽल्लाहि माऽ लम् युन-

ज़िज़ल् बिही सुल्तानऽन्, व माअ्वाहुमु-न्नाऽरु;
व बिअ्सा मस्व-ज़्ज़ालिमीन् ॥१५०॥

हम शीघ्र ही तुम्हारा भय काफ़िरों के हृदय में बिठा कर रहेंगे। क्योंकि उन्होंने उन वस्तुओं को अल्ला का साझी निश्चय किया है, जिन (के शरीक होने) का अल्लाह ने कोई प्रमाण प्रेषित नहीं किया। और, उन लोगों का निवास नर्क है। और, अत्याचारियों का निवास निकृष्ट है।

(४) वला क़द् सदक़ाकुमुऽल्लाहु वअ्दहू३ इज़् तहुस्सूनहुम् बि इज़्निही, हत्ता इज़ाऽ फ़शिल्तुम् व तनाऽज़अ्तुम् फ़िऽल् अम्रि व अ्सयतुम्मिन् ्ँ बअ्दि मा३ अराकुम्माऽ तुहिब्बूना; मिन्कुम्मँ य्युरीदु-द्दुन्याऽ व मिन्कुम्मँय्युरीदुऽल् आख़िरता, सुम्मा सराफ़कुम् अन्हुम् लि यब्तलियकुम्, वलाक़द् अफ़ाऽअन्कुम्; वऽल्लाहु ज़ू फ़ज़्लऽन् अलऽल् मुअ्मिनीन् ॥१५१॥

मुसलमानो! जब तुम अल्ला की आज्ञा से काफ़िरों को क़तल कर रहे थे, (उस समय) अल्ला ने अपनी प्रतिज्ञा * सत्य (सिद्ध) कर दिखाई—यहां तक कि तुम को तुम्हारी इच्छानुकूल विजय दिखा दी। इस के पश्चात् तुम कायर हो

* मुसल्मानों के विश्वासानुसार अल्लाह ने युद्ध में उन्हें विजय-प्रदान करने की प्रतिज्ञा की थी।

गये, और, तुमने परस्पर (रसूल की) आज्ञा के विषय में विवाद किया, और, (रसूल की) आज्ञा का उल्लंघन किया। अल्ला को तुम्हारी परीक्षा अभिप्रेत थी। और (फिर भी) अल्लाह ने क्षमा किया। और मुसल्मानों पर अल्लाह का अति अनुग्रह है।

(५) इज़् तुस् इ.दूना वलाऽतल्वूना अ.लाऽ अह.ादिव्व-र्रसूलु यद्ऊ.कुम् फ़ीऽ उख़्.ाकुम् फ़आ-साऽबकुम् ग़म्मऽन् ॱ बिग़म्मिल्लिकय्‌लाऽ तह्.-ज़नूऽ अ.ला माऽ फ़ाऽ तकुम् वलाऽमाऽ असाऽ-बकुम्; वऽल्लाहु ख़बीरुन् ॱ बिमाऽ तअ्.मलून्
॥१५२॥

(उस समय को स्मरण करो) जब तुम भागे चले जाते थे, और, यद्यपि रसूल तुम्हारे पीछे (खड़े) तुम को बुला रहे थे, तुम मुड़ कर किसी ओर को नहीं देखते थे। अतएव (रसूल के) इस शोक का फल-स्वरूप अल्लाह ने तुमको (पराजय का) शोक प्रदान किया, जिससे कि, जब कभी तुम से कोई कार्य बिगड़ जावे अथवा तुम पर कोई आपत्ति आपड़े, तो तुम इस का शोक न करो। और, तुम कुछ भी करो, अल्लाह को उस का बोध है।

(६) सुम्मा अन्ज़ला अ.लय्‌कुम्मिन् ॱ बअ्.दिऽल् ग़म्मि आमनातन्नुअ.ाऽसऽय्यग़्शा ताऽइफ़तम्मिन्कुम् व ताऽइफ़तुन् क़द् अहम्मतहुम्

अन्फुसुहुम् यज़ुन्नूना बिऽल्लाहि ग़ैरल् ह.क़्क़ि जह्लिऽल् जाऽहिलिय्यति; यक़ूलूना हल्लनाऽ मिनऽल् अम्रि मिन् शय्इन्; क़ुल् इन्नऽल् अम्रा कुल्लहू लिल्लाहि; युख़्फ़ू.ना फ़ी३ अन्फु.सि हिम्माऽ लाऽ युब्दूना लका; यक़ूलूना लउ् काऽना लनाऽ मिनऽल् अम्रि शय्उम्माऽ क़ुतिल्नाऽ हाहुनाऽ; क़ुल्लउ् कुन्तुम् फ़ी बुयूतिकुम् ल बराज़ऽल्लज़ीना क़ुतिबा अ.लय्हिमुऽल् क़त्लु इला मज़ाऽजि इ.हिम्, व लियब्तलियऽल्लाहु माऽफ़ी सुदूरिकुम् व लियुमह्.हि.सा माऽ फ़ी क़ुलूबि कुम्; वऽल्लाहु अ.लीमुन् ँ बिज़ाऽति-स्सुदूर् ॥१५३॥

फिर शोक के पश्चात् अल्लाह ने तुम पर एक शान्ति को उतारा कि, तुम में से एक (सच्चे मुसलमानों के झुण्ड के) झुण्ड को निद्रा ने आ दबाया, और, कुछ (मुनाफ़िक़) जिन को अपने प्राणों की चिन्ता थी, अल्लाह के सम्बन्ध में अज्ञानियों की भांति व्यर्थ दुर्विचार कर रहे थे, और, कह रहे थे कि हमारे वश की क्या बात है ? (हे पैग़म्बर !) तुम इन से कह दो कि सब काम अल्लाह ही के आधीन है । (हे पैग़म्बर !) इन के मनों में और २ भी बातें छिपी हैं । उनको तुम पर प्रगट नहीं करते (वह) कहते हैं कि, यदि हमारा कुछ भी वश चलता होता, तो हम यहां मारे ही न जाते । (हे पैग़म्बरो इन लोगों से) कह दो कि, तुम अपने घरों में भी होते त!

जिन के भाग्य * में मारा जाना लिखा था, (गृहों से) निकल कर (स्वयं अपने) अपने पछड़ने के स्थान में आ उपस्थित होते और अल्लाह को अभीष्ट था कि, तुम्हारी सहनशीलता की परीक्षा करे, और तुम्हारे मानसिक विचारों को (अविश्वास के मल से रहित और) पवित्र करे और अल्लाह तो सब के हृदय की बात जानता है।

(७) इन्नऽल्लजीना तवल्लउ ऽ मिन्कुम् यउ मऽल् तक़ऽल् जम.अ.ानि इन्नमऽऽस्तज़ल्ला हुम् -श्शय्तानु बि बअ्.जि. माऽ कसबूऽ, वला क़द् अ.फ़ऽऽल्लाहु अ.न्हुम्, इन्नऽल्लाहा ग़फ़ू रुन् ह.लीम् ॥१५४॥

जिस दिन (उहुद में मुसल्मान और क़ाफ़िरों के) दो दल परस्पर भिड़ गये। (और) तुम (मुसल्मानों) में से बहुत मनुष्य भाग खड़े हुये तो उन के केवल कतिपय पापों (अर्थात् मुहम्मद सा० की आज्ञा का विरोध करने) के कारण शैतान ने उन के पांव उखाड़ दिये और निस्सन्देह, अल्ला ने उन (के इस अपराध) को भुला (क्षमा कर) दिया। हां, अल्ला क्षमा करने वाला, सहनशील है।

(म०; १, पा०; ४, रु० १७)

(१) या३ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ लाऽ तकू-नूऽ कऽल्लज़ीना कफ़रूऽ व क़ाऽलूऽ लि इख़्वाऽनि हिम्

---

* भाग्य अथवा तक़दीर की धारणा कितनी विघातक उन्नति की विरोधी है। यह सब पर विदित है।

इज़ाऽ ज़रबूऽ फ़िऽल् अर्जि. अउ् काऽनूऽ गुज़्ज़ाऽल्लउ् काऽनूऽ इ.न्दनाऽ माऽ माऽतूऽ वमाऽ कुतिलूऽ, लि यज्-अ.लऽल्लाहु ज़ालिका ह.स्रतन् फ़ी कुलूबिहिम्; वऽल्लाहु युह्यी व युमीतु; वऽल्लाहु बिमाऽ तअ्.म-लूना बसीर् ॥१५५॥

हे मुसल्मानो ! उन (मनुष्यों) सरीखे मत बनो जो, (मन से मुसल्मानियत से) मुनकिर हैं, और उन के भाई-बन्धु पर-देश में गये हों अथवा जिहाद करने गये हों (और वहां वे मर जावें) तो कहने लगते हैं कि, हमारे समीप होते तो, न मरते और न मारे जाते। अल्ला ने इन लोगों के ऐसे विचार इसलिये कर दिये हैं कि (आयु पर्य्यन्त) इन के मनों में यही अभिलाषा रहे। और (वैसे तो) अल्लाह ही जीवित करता और अल्लाह ही मारता है। और, जो कुछ भी तुम कर रहे हो, अल्ला उस को देख रहा है।

(२) वला इन् कुतिल्तुम् फ़ी सबीलिऽल्लाहि अउ् मुत्तुम् लमग़्फ़िरातुम्मिनऽल्लाहि व रह्.मतुन् ख़ैरुम्मिम्माऽ यज्मऊ.न ॥१५६॥

और. अल्लाह के मार्ग में यदि तुम मारे जाओ अथवा मर जाओ. तो अल्लाह की अनुग्रह और अनुकम्पा (जो प्रलय के दिन तुम पर होगी,) उस (धन-धाम) से जिसे, मनुष्य (जीवित रह कर) संचित कर लेते हैं, अधिक श्रेयष्कर है।

(३) व लाइँम्मुत्तुम् अउ् कुतिल्तुम् लाऽ इलऽ-ल्लाहि तुह्शरून् ॥१५७॥

और (अपनी मौत) मरो अथवा मारे जाओ (अन्त में) अल्लाह ही के समीप एकत्रित होगे ।

(४) फ़ बिमाऽ रह्मतिम्मिनऽल्लाहि लिन्ता लहुम्, व लउ् कुन्ता फ़ज़्ज़ऽन् ग़लीज़ऽल् क़ल्बि लऽऽन्फ़-ज़्ज़ूऽ मिन् हउ्लिकाः फ़ऽअ्फु अ़न्हुम् वऽस्तग़्फ़िर्लहुम् वशाऽविर्हुम् फ़िऽल् अम्रि, फ़ इज़ाऽ अ़ज़म्ता फ़तवक्कल् अ़लऽल्लाहि; इन्नऽल्लाहा युहिब्बुऽल् मुतवक्किलीन् ॥१५८॥

तो (हे पैग़म्बर ! यह भी) अल्लाह की इनपर अतीव अनुकम्पा है कि, तू (प्रकृति का) नम्र (नबी) इनको मिला है। और यदि तू परुष और पामर-प्रकृति (पैग़म्बर) हो, तो यह पुरुष तेरे पास से प्रथक हो गये होते । तुम इन के अपराध क्षमा करो ! और अल्लाह से भी इन के अपराधों की क्षमा मांगो) और (संग्राम तथा सन्धि के) कार्य्यों में इन की सम्मति ले लिया करो, पुनः (सम्मति लेने के प्रश्चात्) तुम्हारे हृदय में एक बात निश्चित हो जावे (तो उसे कर डालो परन्तु) विश्वास अल्लाह पर ही करना । जो अल्लाह का विश्वास रखते हैं, अल्लाह उन्हें (अपना) मित्र बनाता है ।

(५) इँय्यन्सुरु्कुमुऽल्लाहु फ़लाऽ ग़ाऽलिबा लकुम्, व इँय्यख़्ज़ुल्कुम् फ़मन्ज़ऽऽल्लज़ी यन्सुरु- कुम्मिन् ॐ बअ्दिही; व अ़लऽऽल्लाहि फ़ल् यत- वक्कलिऽल् मुअ्मिनून् ॥१५६॥

हे मुसल्मानो! यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करता है, तो फिर कोई भी तुम पर विजय पाने वाला नहीं। और यदि वह तुम को त्यागदे, तो उस के पश्चात् (दूसरा) कौन है, जो तुम्हारी सहायतार्थ सन्नद्ध हो ? और, मुसल्मानों को उचित है कि, अल्लाह ही का भरोसा रक्खें।

(६) वमाऽ काऽना लिनबिय्यिन् अँय्यग़ुल्ला; व मँयग़्लुल् यअ्ति बिमाऽग़ल्ला यउमऽल् क़ियामति, सुम्मा तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम्माऽ कसाबत् वहुम् लाऽ युज़्लमून् ॥१६०॥

और यह पैग़म्बर की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल है कि (पैग़म्बर हो कर धरोहर की) चोरी* करे। और जो चोरीके दोषका अपराधी होगा, तो जो चीज़ चुराई है, क़यामत के दिन उसको (अल्लाह

---

* बद्र के युद्ध में जो लूट का धन मुसलमानों के हाथ लगा था, वह इस उद्देश्य से कि अन्त में सब सेना के मध्य वितीर्ण कर दिया जाय, एक स्थान पर जमा किया जा रहा था। उसमें से ओढ़ने की १ लुंगी गुम हो गई। और, किसी सेना के मनुष्य ने मुहम्मद साहब पर सन्देह किया। यह आयत इसी सन्देह के समाधान करने के उद्देश्य से बतलाई जाती है।

के आगे) वही चीज़ प्रस्तुत करनी पड़ेगी। फिर जिसने जैसा किया है, उसको उसका पूरा २ प्रतिफल दिया जायगा। और, किसी पर अत्याचार (और अनर्थ) न होगा।

(७) अफ़ा मनित्तबाअ़ा रिज़्वानल्लाहि कमन् बा३आ बिसाख़तिम्मिनल्लाहि व मअ्वाहु जहन्नमु; व बिअ्सल् मसीर् ॥१६१॥

भला, जो पुरुष अल्लाह की अभिलाषाके आधीन हो, (उन से) उस मनुष्य जैसा (पाप) कार्य हो सकता है, जो अल्लाह के प्रकोप (की परिधि) में आगया हो। और, उस (पापी) का निवास नर्क है। और, वह अत्यन्त निकृष्ट स्थान है।

(८) हुम् दरजातुन् इन्दल्लाहि; वल्लाहु बसीरुन् ॰ बिमा यअ्मलून् ॥१६२॥

अल्लाह के यहां मनुष्यों की (पृथक् २) श्रेणियां (Classes) हैं। और, वह लोग जो कुछ भी कर रहे हैं, अल्ला उसे देख रहा है।

(९) लक़द् मन्नल्लाहु अ़लल् मुअ्मिनीना इज़् बअ़सा फ़ीहिम् रसूलम्मिन् अन्फ़ुसिहिम् यत्लू अ़लय्हिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व युअ़ल्लिमुहुमुल् किताबा वल्

हिक्मता, व इन् काऽनूऽ मिन् क़ब्लु लफ़ी ज़ला-लिम्मुबीन् ॥१६३॥

अल्लाह ने मुसलमानों पर (यह अत्यन्त) अनुग्रह किया कि उनमें उन्हीं में का एक पैग़म्बर प्रेषित किया, जो उन को अल्लाह की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाता है ? और, उनको (कुफ़्र और शिर्क जैसे पापाचरणों से) पृथक् करता है और अल्लाह की पुस्तक (क़ुरान की) तथा बुद्धिमानी की शिक्षा देता है। वरन् (इनके आने से) पूर्व तो यह लोग प्रत्यक्ष पथ-भ्रष्ट थे।

(१०) अवालम्माऽ असाऽबत्कुम्मुसीबतुन् क़द् असब्तुम्मिस्लय्हाऽ क़ुल्तुम् अन्ना हाज़ाऽ; क़ुल हुवा मिन् इ.न्दि अन्फ़ुसिकुम् ; इन्नऽल्लाहा अ.ला कुल्लि शय्इन् क़दीर् ॥१६४॥

क्या हुआ, जब तुम (मुसल्मानों) पर (उहुद के युद्ध में पराजय-प्राप्ति की) आपत्ति आ पड़ी?यद्यपि तुम (बद्र के युद्ध में) इससे द्विगुण आपत्ति (अपने शत्रुओं पर) डाल चुके हो, तो (भी) तुम (हिम्मत हार कर) कहने लगे कि कहां से (ऐसी आपत्ति आई) ? हे पैग़म्बर ! इन मनुष्यों से कहो कि, तुम्हारे किये से ही यह (आपत्ति आई) ! निसन्देह, अल्लाह की प्रत्येक पदार्थ में प्रबल प्रकृति (विद्यमान) है।

(११) वमाऽ असाऽब कुम् यउ मऽल् तक़ऽल् जम्

अ.ानि फ़.बिइज़्नि.नऽल्लाहि व लियअ्.लमऽल् मुअ्-मिनीन्—॥१६५॥

और जिस दिन (उहद के संग्राम में मुसलमान और काफ़िरों के) दो दल भिड़ गये। और, तुम (मुसलमानों) पर (पराजय की) विपत्ति आई, तो अल्लाह की आज्ञा ही इस प्रकार थी। और, (उसका एक) उद्देश्य यह था कि, अल्लाह (सच्चे) मुसलमानों को परखे।

(१२) व लियअ्.लमऽऽल्लज़ीना नाऽ.फ़कूऽ व कीला लहुम् तअ्.ाऽलउऽ काऽतिलूऽ .फ़ी सबी-लिऽल्लाहि अविऽद्.फ़ऊ.ऽ; काऽलूऽ लउ नअ्.लम् किताऽलऽल्लऽऽत्तबअ्.नाकुम्; हुम् लिल्कुफ़्रि यउमा इज़िन् अक़्रबु मिन्हुम् लिल् ईमाऽनि, यकूलूना बिअफ़्.वाऽहिहिम्माऽ लयसा .फ़ी कुलू-बिहिम्; वऽल्लाहु अअ्.लमु बिमाऽ यक्तु-मून्॥१६६॥

और, मुनाफ़िक़ों को भी परखले, और मुनाफ़िक़ों से कहा गया कि आओ अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो अथवा (शत्रु को) हटा दो, तो कहने लगे कि यदि हम समझते कि (आज) युद्ध (होगा) तो हम अवश्य आपके साथ हो लेते। यह लोग उस दिन ईमान की अपेक्षा कुफ़्रके अधिक निकट थे। और यह मुखसे ऐसी बातें कहते हैं, जो इनके हृदय में नहीं। और जिस को गुप्त रखते हैं, अल्लाह उसको भली भांति जानता है।

(१३) अल्लज़ीना क़ालूऽ लिइख़्वाऽनिहिम् वक़ाअ़दूऽ लउ् अताऽऊनाऽ माऽक़ुतिलूऽ; क़ुल् फ़ऽद्‌रऊऽअ़न् अन्फ़ुसि कुमुऽल् मउता इन्कुन्तुम् सादिक़ीन् ॥१६७॥

यह वह लोग हैं, जो आप चैन से बैठे और अपने भाइयों के सम्बन्ध में लगे कहने कि, हमारा कहा मानते, तो मारे न जाते! (हे पैग़म्बर! इन लोगों से कहो कि, भाई! यदि तुम्हारी धारणा) सत्य है, तो अपनी मृत्यु न आने देना।

(१४) वलाऽ तह्‌सबन्नऽल्लज़ीना क़ुतिलूऽ फ़ी सबीलिऽल्लाहि अम्वाऽतऽन्; बल् अह्‌याऽउन् इ़न्दा रब्बिहिम् युर्ज़क़ून्—॥१६८॥

और (हे पैग़म्बर!) जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे गये हैं, उनको मृतक न समझना (अर्थात् यह मरे नहीं) वरन् अपने पालनकर्त्ता के समीप जीते (मौजूद) हैं, (और उसके अनुग्रह से) भोजन पाते हैं।

(१५) फ़रिहीना बिमाऽ आताहुमुऽल्लाहु मिन् फ़ज़्लही व यस्तब्शिरूना बिऽल्लज़ीना लम् यल्‌हक़ूऽ बिहिम्मिन् ख़ल्फ़िहिम्, अल्लाऽ ख़उफ़ुन् अ़लय्हिम वलाऽ हुम् यह्‌ज़नून् ॥१६९॥

और, जो कुछ अल्लाह ने उन्हें अपने अनुग्रह से दे रक्खा है, उस में प्रसन्न हैं। और, जो लोग इन के पीछे जीवित रहे, और अभी इन में आकर सम्मिलित नहीं हुये, उनके विषय में यह सोचकर हर्ष मनाते हैं कि इन को भी, न किसी प्रकार का भय हो, और न इन्हें किसी प्रकार की लालसा ही रहे।

[१६] यस्तब्शिरूना बिनिअ्‌मतिम्मिनऽल्लाहि व फ़ज़्लिव्व अन्नऽल्लाहा लाऽ युज़ीउ अज्रऽल् मुअ्‌मिनीन् ॥१७०॥

अल्लाह के अनुग्रह की और (उस के) प्रताप की प्रसन्नता मना रहे हैं, और, इसकी (भी) कि, अल्लाह ईमान वालों के फल को नष्ट नहीं होने देता।

[म० १, पा० ४, रु० १८]

[१] अल्लज़ीनऽस्तजाऽबूऽ लिल्लाहि व-र्रसूलि मिन् ब्अ्‌दि माऽ असाऽबहुमुऽल् क़र्हु; लिल्लज़ीना अह्‌सनूऽ मिन्हुम् वऽत्तक़ौ अज्रुन् अ़ज़ीम् ॥१७१॥

जो लोग (युद्ध में) घायल होने के पश्चात् अल्लाह और उस के पैग़म्बर के बुलाने पर चलने को उद्यत होगये, ऐसे सज्जनों और सदाचारियों के लिये बड़े शुभ परिणाम हैं।

(२) अल्लज़ीना क़ाऽला लहुमु-न्नाऽसु इन्न-न्नाऽसा क़द् जमाऊ़ऽ लकुम् फ़ऽख़्शउ हुम् फ़ज़ाऽद-हुम् ईमाऽनऽ व्वक़ाऽलूऽ हस्बुनऽऽल्लाहु व निअ्मऽल् वकील् ॥१७२॥

यह वह लोग हैं, जिन को लोगों ने आकर समाचार दिया कि, (विरोधी) लोगों ने तुम्हारे (साथ लड़ने के) लिये बड़ी भीड़ एकत्रित की है; उन से डरते रहना, तो इस से उनको (इस्लाम पर) विश्वास अधिक (दृढ़) हो गया। और, बोल उठे कि, हम को अल्ला ही पर्य्याप्त है, और वह, श्रेष्ठ कर्त्ता है।

(३) फ़ऽन् क़लबूऽ बिनिअ्मतिम्मिनऽल्लाहि व फ़ज़्लिल्लम् यम्सस्हुम् सूउ व्वऽत्तबाऊ़ऽ रिज़्वा-ऽनऽल्लाहि; वऽल्लाहु ज़ू फ़ज़्लिन् अ़ज़ीम् ॥१७३॥

तात्पर्य्य (यह) कि, यह लोग अल्ला के उपकारों और अनुग्रह के साथ (गृहों को) लौट आये, और, उन का कुछ अपयश नहीं हुआ। और, अल्ला की अभिलाषा का अनुसरण किया। और, अल्लाह का अनुग्रह महान् है।

(४) इन्नमाऽ ज़ालिकु मु-श्शय्तानु युख़व्विफु अउलियाऽअहू : फ़लाऽ तख़ाऽफ़ूहुम् वख़ाऽफ़ूनि इन्कुन्तुम्मुअ्मिनीन् ॥१७४॥

यह (दूत) बस एक शैतान था, जो (तुम मुसल्मानों को) अपने प्रेमियों का भय दिखाता था, तो तुम इनसे (तनिक भी) भय न करो, और, (सच्चे) मुसल्मान हो, तो हमारा ही भय करना।

(५) वलाऽ यह्.ज़ुन्कऽल्लज़ीना युसाऽरिऊ.ना फ़ि़ऽल् कुफ़्रि, इन्नहुम् लँय्यज़ुरूऽऽल्लाहा शय्अन्; युरीदुऽल्लाहु इल्लाऽ यज्अ़ला लहुम् ह.ज़्ज़ऽन् फ़ि़ऽल् आख़िरति, व लहुम् अ.ज़ा.ऽबुन् अ.ज़ीम् ॥१७५॥

और (हे पैग़म्बर!) जो लोग कुफ़्र के प्रसार में प्रयत्नशील हैं, तुम उन लोगों के कारण निराश न होना। क्योंकि यह लोग अल्लाह का कुछ भी अनहित नहीं कर सकते। वरन अल्लाह की अभिलाषा है कि प्रलय के दिन (परिणाम) में इन्हें कोई बांट न दे। और, उन को दारुण दुख होना है।

(६) इन्नऽल्लज़ीनऽश्तरवुऽऽल् कुफ़्रा बिऽल् ईमाऽनि लँय्यज़ुरूऽऽल्लाहा शय्अऽन्, व लहुम् अ.ज़ा.ऽबुन् अलीम् ॥१७६॥

जिन लोगों ने दीन देकर कुफ़्र क्रय किया, (वह) अल्ला को तो कुछ हानि पहुंचा नहीं सकेंगे, वरन् उन्हीं को दुसह दुःख होगा।

(७) वलाऽ यह्सबन्नऽल्लज़ीना कफ़रू३ अन्नमाऽ नुम्ली लहुम् ख़यरुल्लि अन्फ़ुसिहिम् ; इन्नमाऽ नुम्ली लहुम् लियज़्दाऽदूर इस्माऽन्, वलहुम् अ़ज़ाऽबुम्मु ह़ीन् ॥१७७॥

जो लोग (इस्लाम से) इनकार कर रहे हैं, (वह) इस ध्यान में न रहें कि, हम जो उनको स्वतन्त्रता दे रहे हैं, यह कुछ उन के निमित्त लाभकारी है। हम तो इन को केवल इसलिये स्वाधीनता दे रहे हैं कि, जिस से यह पाप-संचय करलें और अन्त में इन को अपमान जनक दण्ड (मिलना) है।

(८) माऽ काऽनऽल्लाहु लि यज़रऽल् मुअ्मिनीना अ़ला माऽ अन्तुम् अ़लय्हि ह़त्ता यमीज़ऽल् ख़बीसा मिन–त्तय्यिबि; वमाऽ काऽनऽल्लाहु लि युत्लिअ़ाकुम् अ़लऽल् ग़यबि वला किन्नऽल्लाहा यज्तबी मि-र्रुसुलिही मँय्यशाउ : फ़आमिनूऽ बिऽल्लाहि वरुसुलिही, व इन्तुअ्मिनूऽ वतत्तक़ूऽ फ़ लकुम् अज्रुन् अ़ज़ीम् ॥१७८॥

(मुनाफ़िको !)अल्लाह ऐसा नहीं है कि, जिस अवस्था में तुम हो, भले बुरे का परिचय-प्राप्त किये ही बिना, इसी अवस्था में मौमिन * (मुसल्मानों) को (तुम में सम्मिलित) रहने

* ईमान वाले पक्के।

दे । और, अल्लाह ऐसा भी नहीं कि, तुम को परोक्ष (ग़ैब) की बातें बतादे । हां, अल्लाह अपने पैग़म्बर में से जिस को चाहता है, छांट * लेता है । तो (तुम) अल्लाह और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाओ । और, यदि ईमान लाओगे, और (द्वेष से) दूर रहोगे, तो तुम को महान् फल प्राप्त होगा !

(९) वलाऽ यह्सबन्नऽल्लज़ीना यब्ख़लूना बिमाऽ आताहुमुऽल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही हुवा ख़य्रऽल्लहुम्; बल् हुवा शर्रुल्लहुम्; सयुतव्वकूना माऽ बख़िलूऽ बिही यउमऽल् क़ियामति; व लिल्लाहि मीराऽसु-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि; वऽल्लाहु बिमाऽ तअ्मलूना ख़बीर् ॥१७९॥

और जिन लोगों को अल्लाह ने अपने अनुग्रह से (धन) दिया है, और वह उस के व्यय करने में कृपणता करते हैं। वह इसे अपने निमित्त हित-प्रद न समझें । क्योंकि जिस धन की कृपणता करते हैं, क़यामत के दिवस के लगभग (वह) सांकल (तौक़) † बनाकर उनके गर्दन में डाला जायगा । और, जो (कुछ भी) तुम लोग कर रहे हो, अल्लाह को (उससबका) चेत है ।

---

* यह उस आक्षेप का उत्तर है कि जो मुहम्मद सा० पर किया गया था कि वास्तविक और झूठे बनावटी मुसलमानों में पहचान न कर सके ।

† मुसल्मानी रवायत है कि कृपण का धन क़यामत के दिन सर्प की सूरत में तब्दील हो जायगा । और, उस कृपण की गर्दन के चारों ओर वह लपेटा जायगा ।

[मं० १, पा० ४, रु० १६॥]

(१) लक़द् समि अ्ऽल्लाहु क़उ्लऽल्लज़ीना क़ाऽलू३ इन्नऽल्लाहा फ़क़ीरुव्व नह़्नु अग़्नियाऽ३उ सनक्तुबु माऽक़ाऽलूऽ व क़त्लहुमुऽल् अन्ॅ बि-याऽ३आ बिग़य्रि ह़क़्क़िव्व नक़ूलु ज़ूक़ूऽ अ़ज़ाऽ-बऽल् ह़रीक़् ॥१८०॥

जो लोग अल्लाह को दरिद्र * (मुहताज) और अपने को धनाढ्य बतातेहैं, उनका (यह) प्रलाप अल्लाहने सुना। यह लोग जो पैग़म्बरों का व्यर्थ बध करते आये हैं, उस के साथ हम उन के इस प्रलाप को भी (उन के ऐमालनामे में) लिखे रखते हैं। और, उन का उत्तर (क़ियामत के दिन) हमारी ओर से यह होगा कि, दोज़ख़ के दुःख (के स्वाद) को चखलो।

(२) ज़ालिका बिमाऽ क़द्दमत् अय्दीकुम् व अन्नऽल्लाहा लय्सा बिज़ल्लाऽमिल्लिल् अ़बीद्, ॥१८१॥

यह उन्हीं कृत्यों का परिणाम है, जिनको तुम ने पूर्व से अपने हाथों भेजा है, वरन् अल्ला तो अपने अनुचरों पर किसी प्रकार अत्याचार नहीं करता।

---

* यहूदी मुहम्मद सा० से कहते थे कि अल्ला दरिद्र और भूखा है जो तुम उसके नाम पर कर मांगते हो। इसका उत्तर इस आयत में है।

(३) अल्लज़ीना क़ाऽलूऽ इन्नऽल्लाहा अ.हिदा इलय्नाऽ अल्लाऽ नुअ्मिना लि रसूलिन् ह.त्ता यअ्तियनाऽ बिक़ुर्बाऽनिन् तअ्कुलु हुऽन्नाऽरू; कुल् क़द् जाऽअकुम् रुसुलुम्मिन् क़ब्ली बिऽल् बय्यिनाति व बिऽल्लज़ी कुल्तुम् फ़लिमा क़तल्तुमू हुम् इन्कुन्तुम् सादिक़ीन् ॥१८२॥

(यह वही लोग हैं) जो कहते हैं कि, अल्ला ने हम से कह रक्खा है कि जब तक कोई पैग़म्बर हम को नज़रोनियाज़ (का प्रत्यक्ष चमत्कार=मुऔज़िज़ा) न दिखाये कि, उस को (आस्मान से) अग्नि (आकर) चट कर जाये, तब तक हम उस पर ईमान न लायें। (हे पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि मुझसे पूर्व (अनेक) पैग़म्बर तुम्हारे समीप स्पष्ट चिह्न लाये। और जिस (चिह्न) की तुम अभिलाषा करते हो (वह भी लाये) तो यदि तुम (अपनी धारणा में) सच्चे हो, तो फिर तुमने इन का किस लिये वध किया ?

(४) फ़ इन् कज़्ज़बूका फ़क़द् कुज़्ज़िबा रुसुलुम्मिन् क़ब्लिका जाऽऊ बिऽल् बय्यिनाति वज़्ज़ुबुरि वऽल् किताबिऽल् मुनीर् ॥१८३॥

(हे पैग़म्बर!) यदि इतने पर वह भी झुठलाते चले जांय, तो कोई बात नहीं। क्यों कि तुमसे पूर्व (भी अनेक) पैग़म्बरोंने

स्पष्ट चमत्कार दिखलाये, * और (पुस्तकों के) पत्र और चमकती किताब (तौरेत भी लाये) फिर भी लोगों ने उनको झुठलाया।

(५) कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाइक़तुऽल् मउति; व इन्नमाऽ तुवफ़्फ़उना उजूरकुम् यउमऽल् क़ियामति; फ़मन् ज़ुह्ज़िहा अनि-न्नाऽरि व उद्खिलऽल् जन्नता फ़क़द् फ़ाऽज़ा; वमाऽऽल्ह़यातुद्दुन्याइ इल्लाऽ मताऽउऽल् ग़ुरूर् ॥१८४॥

प्रत्येक पुरुष मृत्यु (का फल) चखेगा, और (तुम्हारे कर्मों का) पूरा २ परिणाम तो तुम्हें प्रलय के दिन ही प्रदान किया जायगा। तो उस दिन जो नर्क की अग्नि से परे हटा दिया गया और उसको निवास के निमित्त नर्क में स्थान दिया गया, तो उस का (मनोनीत) मनोरथ पूर्ण हुआ और सांसारिक जीवन तो केवल धोखे का (जीवन) धन है।

(६) ल तुब्लवुन्ना फ़ीऽ अम्वाऽलि कुम् व अन्फ़ुसिकुम् व ला तस्मउन्ना मिनऽल्लज़ीना ऊतुऽऽल्

---

* इस्राईल के वंशजों में कुछ पैग़म्बरों के समक्ष यह समस्या समुपस्थित हुई कि उन्होंने अल्लाकी नियाज़की और आस्मानसे आग आई और नियाज़ को जला गई। जिससे विदित हुआ कि शरें स्वीकृत हुई। यहूदियों ने मुहम्मद साहब से अपनी पैग़म्बरी प्रमाणित करने के लिये यह चमत्कार दिखाने को कहा, तो उत्तर में अल्ला की ओर से यह आयत आई।

किताबा मिन् क़ब्लि कुम् व मिनऽल्लज़ीना अश्र-कू२ अज़न् क़सीरऽन्; व इन् तस्बिरूऽ व तत्तक़ू फ़ इन्ना ज़ालिका मिन् अ.ज़्मिऽल् उमूर् ॥१८५॥

मुसलमानो! तुम्हारी सम्पत्ति (की हानि) और तुम्हारे जीवनों (के लेने) में अवश्य तुम्हारी परीक्षा की जायगी। और जिन मनुष्यों को तुम से पहले पुस्तक प्रदान की जा चुकी है, उन (यहूद और नसारा) से और (मक्का के) मुश्रिकों से तुम बहुत से कष्ट-प्रद वाक्य सुनोगे। और सन्तोष करते रहो, और संयम (रक्खो), तो निस्सन्देह यह (बड़े) साहस के कार्य्य हैं।

(७) व इज़् अख़ज़ऽल्लाहु मीसाऽक़ऽल्लज़ीना ऊतुऽऽल् किताबा लतु बय्यिनुन्नहू लिन्नाऽसि वलाऽ तक्तुमूनहू फ़ नाबज़ूहु वराऽ२आ ज़ुहूरिहिम् वश्तरउ ऽ बिही समनऽन् क़लीलऽन्; फ़ बिअ्स माऽ यश्तरून् ॥१८६॥

और (हे पैग़म्बर)! पुस्तक वालों को वह समय (स्मरण कराओ) जब अल्ला ने पुस्तक वालों से प्रतिज्ञा धारण कराई कि अन्य लोगों से इस (तौरेत) का स्पष्ट आशय वर्णन कर देना और इस को छिपाना मत परन्तु उन्होंने उसको भी अपने पीठ पीछे फेंक दिया, और इसके परिवर्तन में अल्प मूल्य (अर्थात् सांसारिक यश) प्राप्त किया। सो क्या ही बुरा (व्यौपार) है, जो यह लोग ले रहे हैं।

(८) ला ऽ तह् सबन्नऽल्लज़ीना यफ़्हूना बिमाऽ अतउ ऽ व्व युहिब्बूना अँय्युह्मदू ऽ बिमाऽ लम् यफ़् अ़ लू ऽ : फ़ लाऽ तह् सबन्नहुम् बिमफ़ ाऽज़तिम्मिनऽल् अ ज़ाऽबि, वलहुम् अ ज़ा-ऽ बुन् अलीम् ॥१८७॥

जो लोग अपनी कृति से प्रसन्न होते, और किया (कराया तो कुछ है) नहीं, इस पर (भी) चाहते हैं कि उनकी प्रशंसा हो (तू हे पैग़म्बर!) ऐसे लोगों को विषय में कदापि विचार न करना कि, यह लोग दुख से रक्षित रहेगे वरन् इनके लिये (तो) दुसह दुख (मिलना) है।

(६) व लिल्लाहि मुल्कु-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि; वऽल्लाहु अ ला कुल्लि शयइन् क़दीर् ॥१८८

और आसमान और भूमि का (सब) स्वामित्व अल्ला-ही का है। और प्रत्येक वस्तु पर अल्लाह शक्तिशाली है।

(म० १, पारा ४, रुकूअ. २०)

(१-२) इन्ना फ़ी ख़ल्क़ि-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि वऽख़्तिलाऽफ़िऽल्लय्लि व-न्नहाऽरि ल आ-यातिल्लिउ लिऽल् अल्बाऽबिऽल्लज़ीना यज़्कुरूनऽ ल्लाहा क़ियाऽमऽव्वक़ुऊ दऽव्व अ ला जुनूबिहिम् व यतफ़क्करूना फ़ी ख़ल्क़ि-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि,

रब्बनाऽ माऽ ख़लक़्ता हाज़ा बाऽतिलऽन् ; सुब्हा-नका फ़क़िनाऽ अ़ज़ाऽब-न्नाऽर् ॥१८९-१९०॥

कुछ सन्देह नहीं कि, आसमानों और भूमि की रचना, और रात-दिन के परिवर्त्तन में बुद्धिमानों के (समझने के) लिये (पर्य्याप्त) चिन्ह विद्यमान हैं। जो खड़े और बैठे, और, पड़े अल्ला का स्मरण करते और आसमानों और भूमि की रचना पर ध्यान देते हैं, (और सहसा कह उठते हैं कि.) हे हमारे पालनकर्त्ता ! तूने इस (संसार) को व्यर्थ (अनियमित) नहीं बनाया। तेरा व्यक्तित्व पवित्र है। तू हम को दोज़ख़ के दुख से दूर रख ?

(३) रब्बना२ इन्नका मन्तुद्ख़िलि-न्नाऽरा फ़क़द् अख़्ज़यतहू; वमाऽ लिज़्ज़ालिमीना मिन् अन्साऽर् ॥१९१॥

हे हमारे पालनकर्त्ता ! जिसको तूने नर्क में डाला, उसको (बहुत) ख़्वार किया और, (वहां) पापियों का कोई सहायक नहीं।

(४) रब्बना२ इन्ननाऽ समिअ्नाऽ मुनाऽदि-यऽय्युनाऽदी लिल् ईमाऽनि अन् आमिनू बिरब्बि-कुम् फ़ आमन्नाऽ : रब्बनाऽ फ़ऽग़्फ़िर्लनाऽ ज़ुनूबनाऽ व कफ़्फ़िर् अ़न्नाऽ सय्यिआतिनाऽ वतवफ़्फ़नाऽ मअ़ऽल् अब्राऽर् ॥१९२॥

हे हमारे पालनकर्त्ता! हमने एक सन्देश देने वाले (अर्थात् पैग़म्बर) को सुना कि, ईमान का ढिंढोरा पीट रहे थे, और, लोगों को समझा रहे थे कि, अपने पालनकर्त्ता पर ईमान लाओ। अस्तु, हे हमारे पालनकर्त्ता हम को हमारे अपराध क्षमा कर दे, और हम से हमारे पाप प्रथक कर। और, सत् सेवकों के साथ हमारी समाप्ति (मृत्यु) होवे।

(५) रब्बनाऽ व आतिनाऽ माऽ व अ.त्तनाऽ अ.ला रुसुलिका वलाऽ तुख़्ज़िनाऽ यउमऽल् क़िया-मति; इन्नका लाऽ तुख़्लिफ़ुऽल् मीअ़ाऽद ॥१९३॥

और, हे हमारे पालनकर्त्ता! तूने हम से जैसी (जैसी) अनुग्रहादि की प्रतिज्ञायें पैग़म्बर के द्वारा कही हैं, उन को हमें प्राप्त करा। और, प्रलय के दिन हम को अपमानित न करना (और) तू प्रतिज्ञा के प्रतिकूल तो (कभी किया) नहीं करता।

(६) फ़ऽस्तजाऽबा लहुम् रब्बुहुम् अन्नी लाऽ उज़ीउ अ.मला अ.ाऽमिलिम्मिन्कुम्मिन्ज़करिन् अउ उन्सा, बअ.ज़ुकुम्मिन् ँ बअ.ज़िन्, फ़ऽल्ल-ज़ीना हाऽजरूऽ व उख़्रि.जूऽ मिन्दियाऽरिहिम् व ऊज़ूऽ फ़ी सबीली व क़ातलूऽ व क़ुतिलूऽ ला उक-फ़्फ़िरन्ना अ.न्हुम् सय्यिआतिहिम् वला उद्-ख़िलन्नहुम् जन्नातिन् तज्री मिन्तह्. तिहऽऽल्

अन्हारु, सवाऽबऽम्मिन् इ़न्दिऽल्लाहि वऽल्लाहु इ़न्दहू ह़ुस्नु-स्सवाऽब् ॥१६४॥

उनके पालनकर्त्ता ने उन की प्रार्थना स्वीकार करली (और कहा) कि, हम तुम में से (सत्) आचरण करने वाले के सत्कार्य्य को निष्फल नहीं जाने देते । (चाहे वह) पुरुष हो, अथवा स्त्री * क्योंकि तुम एक दूसरे से निकले हो । तो जिन लोगों ने हमारे लिये देश छोड़े और (हमारे ही कारण) अपने गृहों से निकाले और सताये गये, और लड़े और मारे गये, हम उनके अपराधों को (उनके ऐमाल नामों) अवश्य निकाल देंगे और उनको ऐसे (बहिश्त के) बाग़ में ले जाकर प्रविष्ट करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। अल्लाहके यहांसे उन की कृति का यह प्रतिफल है । और, शुभ परिणाम तो अल्लाही के यहां है ।

(७) लाऽ यग़ुर्रन्नका तक़ल्लुबुऽल्लज़ीना कफ़-रूऽ फ़िऽल् बिलाऽद्; ॥१६५॥

हे पैग़म्बर ! काफ़िरों का नगरों † में चलना फिरना तुम को भ्रम में न डाले ।

---

* कहा जाता है कि मुहम्मद सा० की बीवियों में से एक ने पूछा कि क्या कारण है कि अल्ला सदा देश छोड़ने वाले पुरुषों ही की प्रशंसा करता है और स्त्रियों की चर्चा भी नहीं चलाता, उस समय यह आयत आई ।

† उहुद के युद्ध के पश्चात् मक्का निवासी वे रोक टोक एक स्थान से दूसरे स्थान को व्योपार को जाया करते थे । यह बात मुसल्मानों को बुरी लगती थी, उस समय यह आयत उतरी ।

(८) मताऽउ.न् क़लीलुन् सुम्मा मअ्वाहुम् जहन्नमु, व बिअ्‌सऽल् मिहाऽद् ॥१९६॥

(यह) थोड़े से (स्थायी) सुख हैं। फिर (अन्त में) इनका निवास नर्क है। और वह बहुत ही बुरा स्थान है।

(९) ला किनिऽल्लज़ीनऽत्तक़ऊऽ रब्बहुम् लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन्तह् तिहऽऽल् अन्हारु ख़ालिदीना फ़ीहाऽ नुज़ु लऽम्मिन् इ.न्दिऽल्लाहि; वमाऽ इ.न्दिऽल्लाहि ख़ैरुल्लिल् अब्राऽर् ॥१९७॥

परन्तु जो लोग अपने पालनकर्त्तासे भय करते रहे (अन्त में) उनके निमित्त बाग़ है, जिनके नीचे नहरें बह रहीं होंगी। और; वह (वहां) निरन्तर निवास करेंगे (और) अल्ला के उनका यह अतिथि-सत्कार होगा और जो, (सामग्री) अल्ला के यहां भले आदमियों के निमित्त (हैं, वह दुनियां की सामग्री से) अधिक श्रेयष्कर है।

(१०) व इन्ना मिन् अह्लिऽल् किताबि लमँय्युअ्मिनु बिऽल्लाहि वमा३ उन्ज़िला इलयकुम् वमा३ उन्ज़िला इलयहिम् ख़ाशिईना लिल्लाहि लाऽ यश्तरूना बिआयातिऽल्लाहि समनऽन् क़ली-

* अर्थात् तुम्हारे मन में यह विचार उत्पन्न हो कि अल्ला तो कुफ़् से अप्रसन्न है। फिर काफ़िर दुनियां में किस प्रकार रहते, बसते, चलते, और खाते-पीते हैं और क्यों इनका जीवन आराम के साथ व्यतीत होता है।

लऽन् ; उलाइइका लहुम् अज्रुहुम् इन्दा रब्बि-हिम् ; इन्नऽल्लाहा सरीउऽल् ह़िसाऽब् ॥१६८॥

और पुस्तक वालोंमें से, निस्सन्देह, कुछ मनुष्य ऐसे (भी) हैं, जो अल्लाह पर ईमान रखतेहैं। और. जो पुस्तक तुम (मुसल्मानों) पर उतरी है, और, जो उन पर उतरी है उन पर (भी) ईमान रखते हैं। (और सदा) अल्ला के आगे झुकते रहते हैं। और अल्ला की आयतों के, परिवर्तन में किञ्चित मूल्य (सांसारिक लाभ) ग्रहण नहीं करते। यही वह पुरुष हैं, जिनके फल उनके पालनकर्ता के यहां विद्यमान हैं। और अल्ला शीघ्र लेखा ले वाला है।

(११) याऽ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनुऽऽस्बिरूऽ बसाऽबिरूऽ वराऽबितूऽ; वऽत्तक़ुऽऽल्लाहा लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून् ॥१६६॥

मुसल्मानो! (जो कष्ट अल्लाह के मार्ग में आवें उन्हें) सहन करो, और एक दूसरे को सन्तोष की शिक्षा दो और शत्रु के मुक़ाबिले के लिये उद्यत रहो। और, अल्ला से भय करो जिससे तुम (अन्त में) अभीष्ट को प्राप्त करो।

(सूरये आलि इम्रान् समाप्त)

(पारा लन्तनालू का शेषांश)

(१) या३ अय्युहऽ-न्नाऽसुऽत्तकूऽ रब्बकुमुऽ-ल्लज़ी ख़लक़कुम्मिन्नफ़्स व्वाऽहि.दतिं व्व ख़लक़ा मिन्हाऽ ज़उ़जहाऽ व बस्सा मिन्हुमाऽ रिजाऽलऽन् कसीरऽव्व निसा३अन्, वऽत्तक़ुल्लाहऽल्लज़ी तसा३अलूना बिही वऽल् अर्हा़ऽमा; इन्नऽल्लाह्‌ा काऽना अ़लय्‌कुम् रक़ीब् ॥१॥

हे! मनुष्यो! अपने पालनकर्ता का भय करो, जिसने तुमको एक मात्र अङ्ग (आदम) से उत्पन्न किया, और (यह

---

* यह सूरत मदीने में उतरी इसमें २४ रुकूअ और १७० आयतें हैं।

इस भांति (के पहले) उससे उसकी बीबी (हव्वा) को पैदा किया और उन दो (मियां-बीबी) से अनेक पुरुष-स्त्री (संसार में) फैला दिये। और जिस अल्लाह का वास्ता दे-दे कर तुम कितने कार्य सिद्धकर लेते हो। उसका और सम्बन्धों का (पूर्ण) विचार रक्खो क्योंकि अल्लाह तुम्हारी दशा का निरीक्षक है।

(२) व आतुऽऽल् यतामाᳵ अम्वाऽलहुम् वलाऽ तताबद्दलुऽऽल् ख़बीसा बि-त्तय्यिबि : व लाऽ तअ्-कुलूᳵ अम्वाऽ लहुम् इ लाᳵ अम्वाऽ लिकुम् ; इन्नहू काऽना हूबऽन् कबीर् ॥२॥

और, अनाथों का धन उनके हवाले करो और अपनी पवित्र पूंजी के परिवर्तन में मलीन माल * न लो। और, उनकी सामग्री अपनी सामग्री में सम्मिलित करके गड़बड़ न करो। क्योंकि यह बहुत बड़ा पाप है।

(३) व इन् ख़िफ़्तुम् अल्लाऽ तुक़्सितूऽ फ़िऽल् यतामा फ़ऽन्किहूऽ माऽ ताऽबा लकुम्मिन-न्नि-साᳵइ मस्ना व सुलासा व रुबाआ, फ़इन्

---

* लोग अपने निकृष्ट माल से अनाथों का अच्छा माल बदल लेते थे। अल्लाह ने कहा कि तुम्हारा माल यद्यपि निकृष्ट है, परन्तु हलाल है और अनाथों का माल चाहे अच्छा हो, परंतु तुम पर हराम है।

ख़िफ़्तुम् अल्ला ऽ तअ्दिलू ऽ-फ़्वाऽहिदतऽन् अउ्माऽ मलकत् अय्माऽनुकुम्; ज़ालिका अद्ना२ अल्ला ऽ तऊ्लूऽ; ॥३॥

और, यदि तुमको इस बात की आशङ्का हो कि, अनाथ बालिकाओं* के प्रति न्याय न रख सकोगे, तो अपनी अभिलाषा के अनुकूल दो-दो, तीन-तीन और† चार-चार स्त्रियों से निकाह कर लो। फिर यदि तुमको इस बात की आशङ्का हो कि, (अनेक स्त्रियों में) समता (का सलूक स्थिर) न रख सकोगे, तो (इस दशा में) एक ही (स्त्री करना) अथवा (लोंडी‡ जो तुम्हारे हाथ की सम्पति है पर्य्याप्त है)

* अनाथ लड़कियों के विषय में न्याय न करने की अवस्था यह थी कि, यदि अनाथ लड़की किसी की संरक्षता में होती, तो वह उसके धन और सुन्दरता के कारण उससे निकाह तो कर लेता, परन्तु निकाह के पश्चात् उसके मिहर के धन (मोल) आदि की कुछ भी चिन्ता न करता था। क्योंकि इस बेचारी का कोई वाली-वारिस न तो होता तथा, जो ठोक-बजाकर उसका मोल भर लेता। अस्तु, अल्ला ने कहा कि, जब तुम न्याय ही नहीं कर सकते, तो उनसे निकाह मत करो और अन्यों से एक छोड़ चार-चार से निकाह करलो। संसार में स्त्रियों का अकाल नहीं।

† इस्लाम अनेक बीबियाँ रखने की संसार में आज्ञा देता ही है इसके अतिरिक्त बहिश्त में भी बहुत सी बीबियां विद्यमान मिलेंगी।

‡ शरअ के अनुसार वह काफ़िर लोंडी ग़ुलाम हैं, जो जिहाद (अर्थात् मज़हबी लड़ाई) में पकड़े जावें। फिर गिरफ्तारी हुये पीछे मालकी भाँति उनका क्रय विक्रय होता है।

(४) व आतुऽ-न्निसा२आ सदुक़ातिहिन्ना निह्लतन्; फ़इन् तिब्ना लकुम् अ़न् शयइम्मिन्हु न.फ्सऽन् फ़कुलूहु हनी२अऽम्मरी२आ ॥४॥

और, स्त्रियों को उनके महर का मूल्य प्रसन्नता-पूर्वक दे दो। पुनः यदि वह हर्षित हृदय से उसमें से कुछ तुम पर छोड़दें, तो उसे रचता-पचता खाओ।

(५) वलाऽ तुअ्तुऽ-स्सुफ़.हा२आ अम्वाऽलकुमुऽ ल्लती जअ़लऽल्लाहु लकुम् क़ियाऽमऽव्वऽ-र्ज़ुकूहुम् फ़ीहाऽ वऽक्सूहुम् वकूलूऽ लहुम् क़ौलऽ-म्मअ़रूफ़ा ॥५॥

और, धन जिसको अल्ला ने तुम्हारे निमित्त एक प्रकार का आश्रय बनाया है, उन (अनाथों) को न सौंपो, जो बुद्धिविहीन हों। हां, उसमें से उनके भोजन-वस्त्र (आदि कार्यों) में व्यय करो, और उनको नम्रता से समझा दो।

(६) वऽब्तुऽऽल् यतामा ह़त्ता२ इज़ाऽ बलग़ुऽ-न्निकाऽहा, फ़ इन् आनस्तुम्मिन्हुम् रुश्दऽन् फ़ऽद्फ़ऊ२ इलय्हिम् अम्वाऽलहुम्, वलाऽ तअ्कुलूहा२ इस्राऽफ़ऽव्व बिदारऽन् अँय्यक्बरूऽ; व मन्काऽना ग़निय्यऽन् फ़ल् यस्तअ़फ़िफ़्, व मन्

काऽना फ़क़ीरऽन् फ़ल् यअ्कुल् बिऽल् मअ्रूफ़ि; फ़ इज़ाऽदफ़अ्तुम् इलयहिम् अम्वाऽ लहुम् फ़ अश्हिदूऽ अ़लयहिम्; व कफ़ा बिऽल्लाहि ह़सीब् ॥६॥

और, जब तक विवाह (के वय) को प्राप्त हों (तब तक) अनाथों को (काम-धन्धे में लगा कर) सुधारते रहो। फिर यदि उनमें तुम्हें चातुर्य्य चमकता हो तो, उनका धन उनको सौंप दो। और, ऐसा न करना कि उनके बड़े होने के विचार में व्यर्थ व्यय करके शीघ्र ही उनका धन भुगता डालो। और जो (संरक्षक) धनाढ्य हो, उसको (अनाथ का धन खाने से) बचना चाहिये। और जो दरिद्र हो, तो नियमानुकूल (आवश्यकता-वश) खाले (तो कोई हानि नहीं।) फिर जब उनका धन उनको सौंपने लगो, तो लोगों को साक्षी कर लो. (तो अच्छा है.) वरन् (वास्तव में) लेखा लेने वाला, तो, अल्ला-ही पर्याप्त है।

(७) लिर्रिजाऽलि नसीबुम्मिम्माऽ तरकऽल् वाऽलिदानि वऽल् अक़्रबूना : व लिन्निसाइ नसीबुम्मिम्माऽ तरकऽल् वाऽलिदानि वऽल् अक़्रबूना मिम्माऽ क़ल्ला मिन्हु अउ् कसुरा; नसीबऽम्मफ़्रूज़ ॥७॥

*माता-पिता और समीपी सम्बन्धी, जो (सम्पत्ति) छोड़ मरें, (वह) थोड़ा हो अथवा बहुत, उसमें पुरुषों का बांट है। और (इसी प्रकार) माता पिता और सम्बन्धियों की सम्पति में स्त्रियों का भी बांट है। और, यह बांट हमारा निश्चय किया हुआ (है) जब कि, बांट (हो)

(८) व इज़ाऽ ह़ज़रऽल् क़िस्मता उलुऽऽल् क़ुर्बा वऽल् यतामा वऽल् मसाकीनु फ़ऽर्ज़ुक़हुम्मिन्हु वक़ूलूऽ लहुम् क़उ्लऽम्मअ्रूफ़् ॥८॥

और जब बांट के समय दूर के सम्बन्धी, अनाथ बालक और दरिद्र उपस्थित हों, तो उसमें से उनको भी कुछ खिला दो। और, (यदि न खिला सको तो) नम्रता से कह दो।

(९) वऽल् यख़्शऽल्लज़ीना लउ् तरकूऽ मिन् ख़ल्फ़िहिम् ज़ुर्रिय्यतन् ज़िअ़ाफ़ऽन् ख़ाऽफ़ूऽ अ़लय्हिम् : फ़ल् यत्तक़ुऽऽल्लाहा वल् यक़ूलूऽ क़उ्लऽन् सदीद् ॥९॥

और उचित यह कि, वह लोग (दरिद्रों से कठोर व्यवहार करने में) डरें, (क्यों) कि यदि वह (भी) निर्बल सन्तान

---

* इससे लेकर ११ वीं आयत तक की सभी आयतें साबित के पुत्र ओस की पत्नी उमकुहा के सम्बन्ध में उस समय उतरीं; जब उसका पति उहुद के युद्ध में मारा गया और उसके चचेरे भाई सवेद और उफ़ंज़ा सब धन ले गये। उसकी पत्नी और तीनों पुत्रों में से किसी को कुछ नहीं दिया। जब उसने पैग़म्बर सा० से प्रार्थना की, तब यह आयतें आईं

छोड़ मरें, तो उन (की अवस्था) पर उनको (कैसी) दया आवे। अतः उचित है कि, अल्लाह से डरें और, (उनसे) सीधी तरह बातें करें।

(१०) इन्नऽल्लज़ीना यअ्कुलूना अम्वाऽलऽल् यतामा ज़ुल्मऽन् इन्नमाऽ यअ्कूलूना फ़ी बुतूनिहिम् नाऽरऽन्; वसा यस्लूना सई.र् ॥१०॥

जो लोग व्यर्थ अनाथों का धन खाते हैं, वह अपने उदर में उल्का उंडेलते हैं * और शीघ्र (नर्क की) अग्नि में प्रविष्ट होंगे।

[म० १, पारा ४, रुकूअ. २]

(१) यूसीकुमुऽल्लाहु फ़ीऽ अउ्लादिकुम् लिज़्ज़करि मिस्लु ह.ज़्ज़िऽल् उन्स यय्नि, फ़ इन् कुन्ना निसाऽअन् फ़उ्क़ऽस्नतय्नि फ़लाहुन्ना सुलुसाऽ माऽ तरका, व इन् काऽनत् वाऽहि.दतन् फ़.लाहऽ-न्निस्फ़ु; वलि अबवय्हि लिकुल्लि वाऽहि.दिम्मिन्हु-मऽ-स्सुदुसु मिम्माऽ तरका इन् काऽना लहू वलदुन्, फ. इल्लम् यकुल्लहू वलदुन्वा वरिसहूऽ अबवाहु .फलिउम्मिहि-स्सुलुसु .फ

* पेट में अंगारे भरते हैं।

इन् का ऽना लहू२ इख्वातुन् .फलि उम्मिहि-स्सुदुसु मिन् ् बअ़्दि वसिय्यतिय्यूसी बिहा२ अउ दय्-निन् ; आबा२उ कुम् व अब्ना२उ कुम् , ला ऽ तद्रूना अय्युहुम् अक़्रबु लकुम् नफ़्अ़ऽन् ; .फरीज़त-म्मिनऽल्लाहि; इन्नऽल्लाहा का ऽना अ़लीमऽन् ह़कीम् ॥११॥

(मुसल्मानो !) तुम्हारी सन्तान [के बांट के विषय] में अल्ला की आज्ञा तुमको दी हुई है कि, पुत्र को दो पुत्रियों के बराबर बांट (दिया करो।) फिर यदि पुत्रियां (दो अथवा) दो से अधिक हों, तो बांट में उनका (बांट) दो-तिहाई। और यदि अकेली हो, तो उसको आधा और मरने वाले के माता पिता को-दोनों में प्रत्येक को-सम्पत्ति का $\frac{1}{6}$ भाग उस दशा में जब कि मरने वाले के सन्तान हो। और, यदि उसके सन्तान न हो, और उसके वारिस माता-पिता हों, तो उसकी माता का भाग $\frac{1}{3}$ (और शेष पिता का) फिर यदि (माता पिता के अतिरिक्त) उस के भाई हों तो माता का $\frac{1}{6}$ भाग परंतु यह बांट मरने वाले की वसीयत (की पूर्ती) और ऋण (चुका देने) के पश्चात् दिये जावें।) तुम्हारे माता, पिता और पुत्रों में, तुमको विदित नहीं कि कौन (तुम्हारे कार्य्य में उपयोगी बन कर नाते में) तुम्हारे समीप सिद्ध हो। इस प्रकार का विभाजन अल्ला का निश्चित किया हुआ हुआ है। अल्ला ज्ञानी और बुद्धिमान है।

(२) वलकुम् निस्फ़ु मा ऽ तरका अज़्वाऽजु-कुम् इल्लम् यकुल्लहुन्ना वलदुन् , फ़ इन् का ऽना

लहुन्ना वलदुन् .फ़लकुमु-र्रुबुउ, मिम्मा5 तरक्ना मिन् ॅ बअ्.दि वसिय्यतिंय्यूसीना बिहा३ अउ् दैनिन् ; वलहुन्न-र्रुबुउ, मिम्मा5 तरक्तुम् इल्लम् यकुल्लकुम् वलदुन्, फ़. इन् का5ना लकुम् वलदुन् फ़.लाहुन-स्सुमुनु मिम्मा5 तरक्तुम्मिन् ॅ बअ्.दि वसिय्यतिन् तूसूना बिहा३ अउ् दय्निन्, व इन् का5ना रजुलुय्यूरसु कलालतन् अविऽम्रा अतुंव्व लहू३ अखुन् अउ् उख़्तुन् .फ़ लिकुल्लि वा5हिदिम्मिन्हुमऽ-स्सुदुसु, .फ़इन् का5नू३ अक्सरा मिन् ज़ालिका फ़हुम् शुरका३उ फ़ि-स्सुलुसि मिन् ॅ बअ्.दि वसिय्यतिंय्यूसा बिहा३ अउ् दय्निन्—ग़ैर्रा मुज़ा३र्रिन्, वसिय्यतम्मिनऽ-ल्लाहि, वऽल्लाहु अ.लीमुन् ह.लीम.; ॥१२॥

और जो (कुछ) तुम्हारी स्त्रियाँ छोड़ मरें, यदि उनके सन्तान नहीं, तो उनके छोड़े में तुम्हारा आधा । और यदि उन के सन्तान है, तो उनके छोड़े धन में तुम्हारा चौथाई (लेने का अधिकार है) परंतु वसीयत (की पूर्ति) और ऋण (चुकाने) के पश्चात् । और यदि तुम कुछ छोड़ मरो, और तुम्हारे कोई सन्तान न हो, तो स्त्रियों का (बांट) चौथाई । और यदि तुम्हारे सन्तान हो, तो तुम्हारे धन में से स्त्रियों का आठवां (भाग,) तुम्हारी वसीयत (की पूर्ति) और ऋण (को

चुकाने) के पश्चात् (मिलना चाहिये।) और यदि कोई पुरुष अथवा स्त्री छोड़ मरे और उसके पिता पुत्र न हो और उसके भाई अथवा बहिन हो, तो उनमें से प्रत्येक का १/६ और यदि एक से अधिक हों तो १/३ में सब समान (प्रकार से) सम्मिलित है। यह बांट भी मरण समय के बांट की वसीयत (की पूर्ति) और ऋण चुकाने के पश्चात् दिये जांय। परन्तु शर्त यह कि मरने वाले ने किसी को हानि * न पहुंचाई हो। यह अल्ला की आज्ञा है। और, अल्ला (सब कुछ) जानता है, और सहनशील है।

(३) तिल्का हुदूदुऽल्लाहि; व मँय्युति इऽल्लाहा व रसूलहु युद्खिल्हु जन्नातिन् तज्री मिन्तह्तिहऽऽल् अन्हारु ख़ालिदीना फ़ीहाऽ; व ज़ालिकऽल् फ़उ ज़ुऽल् अज़ीम् ॥१३॥

यह अल्ला की निश्चय की हुई सीमाएं हैं। और जो अल्ला और उसके प्रेषित (पैग़म्बर) की आज्ञा पर चलेगा, उसको अल्ला ऐसे (वहिश्त के) बाग़ों में प्रविष्ट करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। और वह उनमें निरन्तर निवास करेंगे। और यही बड़ी सफलता है।

---

* मरने वाले को अपनी सम्पति के १/३ तक का वसियत करने का अधिकार है। अधिक की वसीयत हो तो समझो कि वारिस को हानि पहुंचाने के विचार से की गई है, और उसकी पूर्ति आवश्यक नहीं।

(४) व मँय्यअ्सिऽल्लाहा व रसूलहू व यता-अद्दा हुदूदहू युद्ख़िल्हु नाऽरऽन् ख़ाऽलिद्ऽन् फ़ीहाऽ वलहू अ़ज़ाऽबुम्मुहीन् ॥१४॥

और जो अल्ला और उसके रसूल की आज्ञा का उल्लङ्घन करे. और अल्लाह की (निश्चित् की हुई) सीमाओं से बढ़ (कर) चलें (तो अल्लाह) उसको नर्क में प्रविष्ट करेगा। और, वह उस में निरन्तर निवास करेगा, और उसको अपमान का दण्ड दिया जावेगा।

(म०; १, पा०; ४, रु० ३)

(१) वऽल्लाती यअ्तीनऽल् फ़ाऽहि़शता मिन्निसाइ कुम् फ़ऽस्तशहिदूऽ अ़लय्हिन्ना अर्बअ़ातम्मिन्कुम्, फ़ इन् शहिदूऽ फ़ अम्सिकू हुन्ना फ़िऽल् बुयूति ह़त्ता यतवफ़्फ़ा हुन्नऽल् मउ्तु अउ् यज्अ़लऽल्लाहु लहुन्ना सबील् ॥१५॥

हे मुसलमानो! तुम्हारी स्त्रियों में से जो (स्त्रियां) व्यभिचार से दूषित हुई हों, तो उन पर अपने पुरुषों से चार की साक्षी लो। अस्तु यदि साक्षी (उसके व्यभिचार का) समर्थन करें, तो उनको (दण्ड-स्वरूप) गृहों में बन्दी रक्खो * यहां तक कि मृत्यु उन की समाप्ति कर दे अथवा अल्ला उनके लिये कोई अन्य मार्ग निश्चित कर।

---

* स्त्रियां जो दूषित सिद्ध होती थीं दीवार में चुनवादी जाती थीं, और वहां वे मर जाती थीं। उपरान्त यह नियम जारी हुआ कि कुमा-

(२) वऽल्लज़ानि यअ्ति यानिहाऽ मिन्कुम् फ़ आज़ूहुमाऽ, फ़ इन् ताऽबाऽ व अस्लहा ऽ फ़ अअ्रिज़ूऽ अ न्हुमाऽ; इन्नऽल्लाहा काऽना तव्वाऽ-बऽर्रहीम् ॥१६॥

और, जो दो पुरुष तुम मनुष्यों में व्यभिचार (के दोष) के अपराधी हों, तो उनको मारो-पीटो। फिर यदि तोबा (प्रायश्चित) करें, और अपनी दशा का सुधार कर लें, तो उनसे (अधिक) छेड़छाड़ न करो, क्योंकि अल्ला क्षमा-प्रार्थना अर्थात् तोबा स्वीकार करने वाला और दयालु है।

(३) इन्नमऽ-त्तउ्बतु अ़लऽल्लाहि लिल्लज़ीना यअ्मलून-स्सूइ्आ बिजहाऽलातिन् सुम्मा यतूबूना मिन् क़रीबिन् फ़ उलाइ्इका यतूबुऽल्लाहु अ़लय्हिम्; व काऽनऽल्लाहु अ़लीमऽन् हकीम् ॥१७॥

अल्ला क्षमा-प्रार्थना (तोबा तो) स्वीकार करता (ही) है। परंतु उन ही लोगों की जो अज्ञानता से कोई बुरा काम कर बैठें और फिर शीघ्र ही तोबा करले, तो अल्लाह भी ऐसों

रियों में १०० कोड़े लगाये जांय और १ साल के लिये घर से निकाल दी जांय, और विवाहिता पत्थरों से मारी जांय। समझ में नहीं आता कि ऐसा ही नियम इसी अपराध से युक्त पुरुषों के निमित्त क्यों नहीं निर्धारित किया गया जिससे कि व्यभिचार बिल्कुल बन्द हो जाता।

की तोबा स्वीकार कर लेता है। और, अल्ला (सब) जानता और (सब की दशाओं से) परिचित है।

(४) व लय्‌सति-त्तउ्‌बतु लिल्लज़ीना यअ्‌-मलून-स्सय्यिआति, हत्ता३ इज़ाऽ ह.ज़रा अहदा हुमुऽल्‌ मउ्‌तु क़ाऽला इन्नी तुब्तुऽल्‌ आना वलऽऽ-ल्लज़ीना यमूतूना वहुम्‌ कुफ़्फ़ारुन्‌; उलाइका अअ्‌तद्‌नाऽ लहुम्‌ अ.ज़ाऽबऽन्‌ अलीम्‌ ॥१८॥

और उन लोगों की क्षमा-प्रार्थना (तोबा) भी (स्वीकार) नहीं, जो समस्त आयु बुरे कार्य्य करते रहे यहां तक कि, जब किसी के सन्मुख मृत्यु आ कर खड़ी हो, तो कहने लगे कि, अब मेरी तोबा (है) और, इसी प्रकार उनकी भी तोबा नहीं, जो काफ़िर ही मर गये। यही हैं, जिनके लिये हमने (दोज़ख़ का) दुखदायक दण्ड तय्यार किया है।

(५) याऽ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ लाऽ यहि.ल्लु लकुम्‌ अन्तरिसुऽ-न्निसाऽआ कर्हऽन्‌; वलाऽ तअ्‌.जुलूहुन्ना लितज्‌हबूऽ बि बअ्‌ज़ि माऽ आतय्‌तुमू हुन्ना इल्लाऽ अँय्यअ्‌तीना बि-फ़ाऽहिशातिम्मुबय्यिनातिन्‌, व अ.ाऽशिरू हुन्ना बिऽल्‌ मअ्‌रूफ़ि, फ़ इन्‌ करिह्‌तुमू हुन्ना फ़

अ़ासा३ अन्तक्रहू़ऽ शय्अऽव्व यज्अ़लऽल्लाहु फ़ीहि ख़य्रऽन् कसीर; ॥१६॥

हे मुसह्मानो! यह उचित नहीं कि, तुम स्त्रियों को मीरास समझ कर उन पर बलात्कार अपना स्वत्व जमा लो, और जो कुछ तुमने उनको दिया है, उसके अपहरण की अभिलाषा से उनको (घरों में) बन्दी न रक्खो, जिससे (कि वह अन्य से निकाह न करने पायें।) हां, यदि उन पर किसी स्पष्ट कुकर्म का अपराध हुआ हो (तो बन्दी रखने में दोष नहीं) और स्त्रियों के साथ सुव्यवहार सहित रहन-सहन करो। और, यदि तुमको (किसी कारण से) स्त्री अरुचिप्रद (प्रतीत) हो, तो आश्चर्य्य नहीं कि, तुमको एक वस्तु अरुचिकर प्रतीत हो, और अल्ला उसमें बहुत सी वृद्धि* दे।

(६) व इन् अरत्तुमुऽस्तिब्दाऽला ज़उ्जिम्म-काऽना ज़उ्जिव्व आतय्तुम् इह्दाहुन्ना क़िन्ताऽ-रऽन् फ़लाऽ तअ्ख़ुज़ूऽ मिन्हु शय्अऽन्; अतअ्ख़ुज़ूनहू बुह्ताऽनऽव्व इस्मऽम्मुबीन् ॥२०॥

और, यदि तुम्हारा विचार एक बीबी को बदल कर उस के स्थान पर दूसरी करने का हो, और (उस) एक को बहुत सा मोल दे चुके हो, तो उसमें से कुछ भी फिर वापिस न लेना। क्या (तुम्हारी आत्मा चाहती है कि) किसी प्रकार का दोष लगा कर और बिल्कुल अनुचित कार्य्यवाही द्वारा अपना दिया हुआ (इससे वापिस) लेते हो?

---

* अर्थात् कदाचित् उससे बहुत सी सन्तान हो यद्यपि वह सुन्दर न हो।

(७) व कय्फ़ा तअ्ख़ुज़ूनहू व क़द् अफ़्ज़ा बअ्ज़ुकुम् इला बअ्ज़िव्व अख़ज़्ना मिन्कुम्मी-साऽक़ऽन् ग़लीज़ा ॥२१॥

और, दिया हुआ कैसे (वापिस) लेलोगे जब कि, एक दूसरे के साथ सुहबत (भोग) कर चुके, और (बीवियाँ) तुम से पक्की प्रतिज्ञा करा चुकी हैं।

(८) वलाऽ तन्किहू ऽ माऽ नकह़ा आबाउ कुम्मिन-न्निसाइ इल्लाऽ माऽक़द् सलफ़; इन्नहू काऽना फ़ाऽहिशत व्व मक़्तऽन्; व साअा सबील् ॥२२॥

और, जिन स्त्रियों के साथ तुम्हारे पिता ने निकाह किया हो, उनके साथ तुम निकाह न करना। परन्तु जो (एकवार) पूर्व हो चुका (सो हो चुका। तो भी) यह नितान्त निर्लज्जता और आश्चर्य्य का कार्य था, और अत्यन्त निकृष्ट नियम* था।

---

* इस्लाम के प्रादुर्भाव से पूर्व पुरुषों का अपनी स्त्रियों के साथ अत्यन्त निकृष्ट व्यवहार था। यहां तक कि यदि कोई पुरुष मर जाता तो उसके वारिस उसकी स्त्री को मीरास समझ कर अपने अधिकार में ले आते और उस से बिना मिहर स्वयं निकाह कर लेते अथवा दूसरे से कर देते और मिहर स्वयं ले लेते। और यदि चाहते, उसे बिठा रखते। वारिसों के अतिरिक्त यदि अन्य कोई पुरुष स्त्री पर कपड़ा डाल देता तो वही उसका अधिकारी समझा जाता। सुन्दरी होती, तो उससे आप निकाह कर लेता, और

[म० १, पा० ४, रु० ४]

(१) हुर्रिमत् अ़लयकुम् उम्महातुकुम् व बना-तुकुम् व अख़वातुकुम् व अ़म्मातुकुम् व ख़ाला-तुकुम् व बनातुऽल् अख़ि व बनातुऽल् उख़्ति व उम्महातु कुमुऽल्लाती२ अर्ज़अ़्ना कुम् व अख़वा-तुकुम्मिन-र्रज़ाऽअ़ति व उम्महातु निसा२इ कुम् व रबा२इ बुकुमुऽल्लाती फ़ी हुजूरिकुम्मिन्निसा२इ कुमुऽल्लाती दख़ल्तुम् बिहिन्ना फ़इल्लम तकूनूऽ दख़ल्तुम् बिहिन्ना फ़लाऽ जुनाऽहा अ़लयकुम् व ह़लाइलु अब्ना२इ कुमुऽल्लज़ीना मिन् अस्लाऽबिकुम् व अन् तज्मऊ़ऽ बयनऽल् उख़्तयनि इल्लाऽ माऽ क़द् सलफ़ ; इन्नऽल्लाहा काऽना ग़फ़ूरऽर्रहीम् ॥२३॥

(मुसलमानो !) माता और तुम्हारी पुत्री, और तुम्हारी भगिनी और तुम्हारी फूफी, और, तुम्हारी ख़ाला (अर्थात्

कुरूपा होने पर उसे तब तक निकाह नहीं करने देता, जब तक कि वह कुछ तावान (Tax) के तौर पर न दे देती अथवा वहीं उसके यहां मर जाती। अभिप्राय यह कि इतनी पतित अवस्था थी कि यदि पुत्र भी अपने पिता का वारिस होता, तो अपनी सौतेली माता से निकाह कर लेता। अल्ला ने इन आयतों से इन को निषिद्ध निश्चित् किया।

मौसी) और भतीजी, और भानजी और तुम्हारी [रज़ाई] माताएं, जिन्होंने तुमको दूध पिलाया और तुम्हारी दूध की [सम्मिलित] बहिनें और तुम्हारी सास [यह सब] तुम्हारे [निकाह के] निमित्त निषिद्ध हैं। और जिन स्त्रियों के साथ भोग कर चुके हो, उनकी जारज* पुत्रियां जो तुम्हारी गोदों में पलती हैं [निषद्ध हैं।] परन्तु यदि इन बीबियों के साथ तुमने प्रसंग न किया हो, तो तुम पर [जारज पुत्रियों के साथ] निकाह कर लेने में कोई दोष नहीं, और तुम्हारे [अपने] पुत्रों की पुत्रियां [तुम्हारे लिये त्याज्य हैं] और दो बहिनों का एक साथ निकाह में रखना भी [निषिद्ध है] परन्तु जो हो चुका [सो हो चुका] निस्सन्देह अल्ला क्षमा करने वाला दयालु है।

[पारावल्मुह्सनात् समाप्त]

* अर्थात् पहले बाप की सन्तान जो मा के साथ आवे अर्थात् वर्णसङ्कर।

पारा वऽल्मुह्सनातु ।

(२) वऽल् मुह्.सनातु मिन-न्निसाऽइ इल्लाऽ माऽ मलकत् अय्माऽनुकुम् किताबऽल्लाहि अ.लय्-कुम्, व उहि.ल्ला लकुम्माऽ वराऽअा ज.ालिकुम् अन्तब्तग़ूऽ बि अम्वाऽलिकुम्मुह्.सिनीना ग़य्रा मुसाऽफि.ह्.ीना; फ.मऽऽस्तम्तअ्.तुम् बिही मिन्हुन्ना फ. आतूहुन्ना उजूर हुन्ना फ.रीज.तन्; वलाऽ जुनाऽहा अ.लय्कुम् फ.ीमाऽ तराऽज.य्-तुम् बिही मिन् ॱ॑ बअ्.दिऽल् फ.रीज.ति; इन्नऽ-ल्लाहा काऽना अ.लीमऽन् ह.कीम् ॥२४॥

और वह स्त्रियां [भी त्याज्य हैं] जो दूसरों के निकाह में] बंधी हों, परन्तु वह (हाथ का माल है,) जो [काफ़िरों की लड़ाई में क़ैद हो कर] तुम्हारे अधिकार में आई हैं। (यह) अल्लाह की लिखित आज्ञा है, जो तुम पर [उचित ठहराई जाती है ।] और [स्त्रियां तुम्हारे निमित्त निषिद्ध निश्चित् की गईं,] उनको

छोड़ कर अन्य सब स्त्रियों, को काम-वासना की पूर्ति के लिये नहीं, वरन् [निकाह के] बन्धन में लाने के उद्देश्य से धन के बदले [निकाह में लेना] चाहो(तो लेलो)। फिर जिन जिन स्त्रियों से तुमने [भोग करके] आनन्द लिया है, तो उनसे जो (कुछ) ठहराया हो, उनको* देदो। और, ठहराये पीछे [चाहे कम हो अथवा अधिक परन्तु तुम] आपस में राज़ी हो जाओ, तो तुम्हारे लिये इस में कोई पाप नहीं। निस्सन्देह, अल्ला (सबकी दशा से) परिचित और (प्रत्येक कार्य) नीति (नियम) से करता है।

(३) व मँल्लम् यस्ततिअ् मिन्कुम् तउ्लऽन् अँय्यन्किहऽल् मुह्सनातिऽल् मुअ्मिनाति फ़मिम्माऽ मलकत् अय्माऽनुकुम्मिन् फ़तया-तिकुमुऽल् मुअ्मिनाति; वऽल्लाहु अअ्लमु बि ईमाऽनिकुम्; बअ्ज़ुकुम्मिन् ब्अ्ज़िन्, फ़ऽन्किहू हुन्ना बि इज़्नि अह्लि हिन्ना व आतू-हुन्ना उजूरहुन्ना बिऽल् मअ्रूफ़ि मुह्सनातिन् ग़य्रा मुसाफ़िहाति व्व लाऽ मुत्तख़िज़ाति अख़्दाऽनिन्, फ़ इज़ा उह्सिन्ना फ़इन् अतय्ना बि फ़ाऽहिशतिन् फ़अ्लय्हिन्ना निस्फ़ु माऽ अलऽ-ल् मुह्सनाति मिनऽल् अज़ाऽबि; ज़ालिका लि

---

* इस आयत के आधार पर शिया मुताअ् मान्य ठहराते हैं।

मन् ख़शियऽल् .अनता मिन्कुम् ; व अन् तस्बिरूऽ ख़यूरुल्लकुम् , वऽल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम् ॥२५॥

और, यदि तुममें से जिस (किसी) को मुसलमान (हुई) महिलाओं के साथ निकाह नसीब न हो, तो (वह) लौंडियां [लेलो] जो [काफ़िरों की लड़ाई में] तुम मुसलमानों के हाथका माल है, और, यदि वह ईमान रखती हों। और अल्ला तुम्हारे ईमान को खूब जानता है। तुम एक दूसरे के भाई हो अतएव लौंडी वालों के इज़्न से उनके साथ निकाह करलो। नियमानुसार उनके मिहर उनको देदो, परन्तु यदि (वह निकाह के) बन्धन में आ चुकी हों [और जो तुमसे] न बाज़ारी स्त्रियों का-सा सम्बन्ध रखना चाहती हों और न ख़ानगियों * का-सा। फिर यदि [निकाह से] बन्धन में बँधे पश्चात् कोई निर्लज्जता का कार्य करें तो जो दण्ड ब्याही का उससे आधी लौण्डी को। लौण्डी से निकाह कर लेने की आज्ञा उसी को है, जिसकी तुममें से पाप करने की शङ्का हो और यदि संतोष करो, तो यह तुम्हारे निमित्त हितकर है। और अल्ला क्षमा करने वाला दयालु है।

---

* शाह अब्दुलक़ादिर ने 'मुसाफ़िहातिन् का अर्थ 'जो मस्ती निकाल लेती हैं' और मुत्तख़िज़ाति अख़दान का अर्थ 'छिप कर यार कर लेती हैं' ऐसा किया है। शाह वलीउल्ला और शाह रफ़ीउद्दीन के अनुवादों को भी हमने देखा उन्होंने जो अर्थ किये हैं, उन का भी यही आशय है। मुसाफ़िहातिन् के अर्थ खुले ख़ज़ाने व्यभिचार और मुत्तख़िज़ात अख़्दान का अर्थ चोरी-छिपे आशनाई के हैं अर्थात् पहली प्रकार की स्त्रियां बाज़ारी वेश्या, और दूसरी प्रकार की ख़ानगी अथवा पुंश्चली कहलाती हैं। (अनु०)

(मं० १, पारा ५, रुकूअ. ५)

(१) युरीदुऽल्लाहु लियुबय्यिना लकुम् व यह्दि-याकुम् सुननऽल्लज़ीना मिन् क़ब्लिकुम् व यतूबा अ़लय्कुम् ; वऽल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम् ॥२६॥

अल्ला चाहता है कि, जो [पैग़म्बर आदि] तुमसे पूर्व (पैदा) होचुके हैं, उनके नियम तुमसे स्पष्टतः वर्णन करे । और, तुमको उनके ही नियमों पर चलाया, और तुम पर दया (की दृष्टि) रक्खी । और अल्लाह (सब कुछ) जानता (और प्रत्येक कार्य) विधि (से) करता है ।

(२) वऽल्लाहु युरीदु अँय्यतूबा अ़लय्कुम् व युरीदुऽल्लज़ीना यत्तबिऊ़न-श्शहवाति अन्तमीलूऽ मय्लऽन् अ़ज़ीम् ॥२७॥

और अल्लाह चाहता है कि, तुम पर दया (की दृष्टि) रक्खे । और जो लोग (विपरीत) विषय वासनाओंके वशीभूत* हैं, उनका अभिप्राय यह है कि, तुम (सन्मार्ग से) बहुत दूर हट जाओ ।

(३) युरीदुऽल्लाहु अँय्युख़फ़्फ़िफ़ा अ़न्कुम् , व ख़ुलिक़ऽल् इन्साऽनु ज़ई़फ़ु ॥२८॥

* जो लोग नफ़्सानी ख़्वाहिशों के पीछे पड़े हुए हैं ।

अल्ला तुम (पर) से (भार) हल्का करना चाहता है, क्यों कि मनुष्य (स्वभाव ही से) निर्बल पैदा किया गया है।

(४) या२ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ लाऽतअ्-कुलू२ अम्वाऽलकुम् बय्नकुम् बिऽल् बाऽतिलि इल्ला२ अन्तकूना तिजाऽरतन् अ्न्तराऽज़िम्मिन्कुम् व लाऽ तक़्तुलू२ अन्फ़ुसाकुम् ; इन्नऽल्लाहा काऽना बिकुम् रहीम् ॥२६॥

मुसलमानो ! व्यर्थ एक-दूसरे के धन को न पचाओ। हां, पारस्परिक प्रसन्नतापूर्वक क्रयविक्रय किया करो। और, आत्म-हनन * न करो (यह आज्ञा इसलिये दी जाती है कि) तुम्हारी अवस्था पर अल्ला का अनुग्रह है।

(५) व मँय्यफ़्अ्ल् ज़ालिका उ़द्वाऽनऽव्व ज़ुल्मऽन् फ़ सउ़्फ़ा नुस्लीहि नाऽरऽन् ; व काऽना ज़ालिका अ्लऽल्लाहि यसीर् ॥३०॥

और, यदि अत्याचार और अनर्थ से कोई ऐसा करेगा (अर्थात् पराई पूंजी पचावेगा) तो हम उसको (क़यामत के दिन दोज़ख़ की) आग में झोंक देंगे। और, यह अल्ला के निमित्त सरल (सी बात) है।

---

* इसका अर्थ अभिप्राय: कोई आत्म-पतन तथा कोई आत्म-बध बताते हैं।

(६) इन्तज्‌ तनिबूऽ कबाइरा माऽ तुन्हउना अ.न्हु नुकफ्फ़िर्‌ अ.न्कुम्‌ सय्यिआति कुम्‌ व नुद्‌खिल्कुम्मुद्‌खलऽन्‌ करीम्‌ ॥३१॥

जिन (कर्मों) का तुमको निषेध किया जाता है, यदि उन में से तुम बड़े २ पापों से बचते रहोगे तो हम तुम्हारे (छोटे छोटे) अपराध (तुम्हारे ऐमालनामें अर्थात्‌ characte book) में से काट देंगे, और तुमको ले जाकर प्रतिष्ठा के स्थान अर्थात्‌ स्वर्ग में स्थान देंगे ।

(७) वलाऽ ततमन्नउऽ माऽ फ़ज़्ज़लऽल्लाहु बिही बअ.ज़कुम्‌ अ.ला बअ.ज़िन्‌ ; लिर्रिजाऽलि नसी-बुम्मिम्माऽऽक्तसबूऽ; व लिन्निसाइइ नसीबुम्मि-म्माऽऽक्तसब्ना; वस्‌अलुऽऽल्लाहा मिन्‌ फ़ज़्लिही; इन्नऽल्लाहा काऽना बिकुल्लि शयइन्‌ अ.लीम्‌॥३२

और अल्लाह ने जो तुममें एक को दूसरे से उत्कृष्टता प्रदान की है, उसका विचार न करो * पुरुषों ने जैसे कार्य किये हों, उनका भाग (उनको) और स्त्रियोंने जैसे कार्य किये हों,

---

* मुहम्मदी मन्तव्यों की दृष्टि में स्त्रियों को अल्लाह ने इस ढंग का पैदा कियाहै कि लोक और परलोक दोनोंमें वह पुरुषोंकी समता नहीं करसंकतीं। जिसके कारण उनके मन में सम्भवतः यह विचार उठता होगा कि, हम पुरुष क्यों नहीं हुईं । अस्तु, इस आयत में अल्ला ने इसी विचार का उत्तर उपस्थित करने का उद्योग किया है ।

उनको उनका भाग (मिलेगा) और अल्लाह से उसकी अनुग्रह की प्रार्थना करते रहो। अल्लाह प्रत्येक पदार्थ से परिचित है।

(८) व लि कुल्लिन् जअ़ल्नाऽ मवाऽलिया मिम्माऽ तरकऽल् वाऽलिदानि वऽल् अक़्रबूना; वऽल्लज़ीना अ़क़दत् अय्माऽनुकुम् फ़ आतूहुम् नसीबहुम्; इन्नऽल्लाहा काऽना अ़ला कुल्लि शय्-इन् शहीद् ॥३३॥

और जो (कुछ) माता-पिता और सम्बन्धी छोड़ मरें, तो हमने प्रत्येक (मीरास) के अधिकारी निश्चित कर दिये हैं। और जिन लोगों के साथ तुमने प्रतिज्ञा की है, तो (स्वयं ही) कुछ बांट उन को भी दे दो। प्रत्येक पदार्थ का अल्लाह ही साक्षी है।

[म० १, पा० ५, रु० ६]

(१) अर्रिजाऽलु क़व्वाऽमूना अ़लन्निसा३इ बिमाऽ फ़ज़्ज़लऽल्लाहु बअ़्ज़हुम् अ़ला बअ़्ज़िव्व बिमा३ अन्फ़क़ूऽ मिन् अम्वाऽलिहिम्; फ़स्साऽलिहातु क़ानितातुन् हाफ़िज़ातुल्लिल्ग़य्बि बिमाऽ हफ़िज़ऽल्लाहु; वऽल्लाती तख़ाऽफ़ूना नुशूज़हुन्ना, वऽहजुरू हुन्ना फ़िऽल् मज़ाऽजिइ वऽज़्रिबू हुन्ना फ़इन् अतअ़्ना कुम् फ़लाऽ तब्ग़ूऽ अ़ल-

यहिन्ना सबील; इन्नऽल्लाहा काऽना अ.लि-
य्यऽन् कबीर ॥३४॥

पुरुष स्त्रियों के शासक हैं; कारण यह कि अल्लाह ने एक (पुरुष) को एक (स्त्री) से (अधिक) प्रतिष्ठा प्रदान की है। और, इस कारण भी कि, पुरुषों ने (स्त्रियों के ऊपर) अपना धन व्यय किया है। जो (स्त्रियां) नेक हैं, (पुरुषों की) आज्ञा पालन करती हैं। और, अल्लाह की अनुग्रह से (उन की) पीठ पीछे (प्रत्येक पदार्थ की) रक्षा करती हैं। और, तुमको जिन स्त्रियोंके सिरपर चढ़ने की आशङ्का हो, तो, उन को समझाओ। और, उन के साथ सोना छोड़ दो, और मारो (पीटो)। फिर यदि तुम्हारी आज्ञा मानने लगें, तो तुम उनके (व्यर्थ) छिद्रान्वेषण न किया करो। निस्सन्देह, अल्लाह ही सब से प्रबल और महान है।

(२) व इन् खिफ़्.तुम् शिक़ाऽक़ा बय्नि हिमा फ़ऽब्अ.सूऽ ह.कमऽम्मिन् अह्लिही व ह.कमऽम्मिन् अह्लिहाऽ, इँ य्युरीदा२ इस्लाऽह.ऽय्युवफ़्फ़ि.क़्-क़िऽल्लाहु बय्नहुमाऽ; इन्नऽल्लाहा काऽना अ.ली-मऽन् ख़बीर् ॥३५॥

यदि तुम्हें भय हो कि दोनों (पति-पत्नी) में परस्पर विरोध (विद्यमान) है, तो एक पंच पति के परिवार में से और एक पंच पत्नी के परिवार में से (नियत करो *) यदि

* एक विद्वान् की सम्मति है कि यह प्रबन्ध तलाक़ को रोकने के

पंचों की (आन्तरिक) आकांक्षा सन्धि करादेने की होगी, तो अल्लाह उन पंचों के समझाने से उन (पति-पत्नी) में प्रेम करा देगा। निस्सन्देह, अल्लाह ज्ञानवान और परिचायक है।

(३-४) वऽअ्बुदुऽऽल्लाहा वलाऽ तुश्रिकूऽ बिही शय्अऽव्व बिऽल् वाऽलिदय्नि इह्साऽनऽ व्व बिज़िऽल् कुर्बा वऽल् यतामा वऽल् मसाकीनि वऽल्जाऽरि ज़िऽल् कुर्बा वऽल् जाऽरिऽल् जुनुबि व-स्साऽहिबि बिऽल् जन्ऽबि वऽब्नि-स्सबीलि वमाऽ मलकत् अय्माऽनुकुम्; इन्नऽल्लाहा लाऽ युहिब्बु मन् काऽना मुख्ताऽलऽन् फ़ख़ूराऽ-- (नि)ऽल्लज़ीना यब्ख़लूना वयअ्मुरूनन्नाऽसा बिऽल् बुख़्लि व यक्तुमूना माऽ आताहुमुऽल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही; व अअ्तद्नाऽ लिल्काफ़िरीना अ़ज़ाऽबऽम्मुहीन् ॥३६-३७॥

अल्ला की आराधना करो, और किसी को उस के साथ साझी न करो। और, माता पिता और समीपी सम्बन्धियों अनाथों और दरिद्रों, और पास के पड़ोसियों और अपरिचित पड़ोसियों, और पास के बैठने वालों और पथिकों, और

लिया किया गया था। क्योंकि यदि मारने-पीटने में सफलता न मिले तो पंच फैसला कराया जाय।

जो (लौंड़ी और ग़ुलाम) तुम्हारे हाथ का माल है, उन सब के साथ सुव्यवहार करते रहो । क्योंकि अल्लाह को नहीं भाते, (वह मनुष्य) जो गर्व करते और (अपने मुँह अपनी) प्रशंसाके पुल बाँधते फिरते हैं,और वह जो (स्वयं) कृपणता करते हैं, और दूसरों को (भी) कृपणता करना सिखाते हैं, और जो उन को अल्ला ने अपनी अनुग्रह दिया है उसे गुप्त रखते हैं । और हमने [ऐसे] क़ाफ़िरों के लिये, जो कृतघ्नता करें, दुःख-दारिद्रय का दण्ड (नियत किया) है ।

(५) वऽल्लज़ीना युन्फ़िक़ूना अम्वाऽ लहुम् रिआ३अ-न्नाऽसि वलाऽ युअ्मिनूना बिऽल्लाहि वलाऽ बिऽल् यउ्मिऽल् आख़िरि; व मँ य्यकुनि-श्शय्तानु लहू क़रीनऽन् फ़साऽ३आ क़रीन् ॥३८॥

और, वह जो अपना द्रव्य दुनियां को दिखाने को व्यय करते हैं । और न अल्ला पर विश्वास रखतेहैं, और न अन्तिम दिन पर । और जिस का शैतान (मित्र) हो,तो वह (बहुत ही) बुरा साथी है ।

(३) व माऽज़ाऽ अलय्हिम् लउ् आमनूऽ बिऽल्लाहि वऽल् यउ्मिऽल् आख़िरि व अन्फ़क़ूऽ मिम्माऽ रज़क़ाहुमुऽल्लाहु; व काऽनऽल्लाहु बिहिम् अलीम् ॥३६॥

और यदि (यह मनुष्य) अल्ला और प्रलय के दिवस पर ईमान लाते, और जो कुछ अल्ला ने इन्हें दे रक्खा है, उसे (अल्लाह के मार्ग में) व्यय करते, तो इन का क्या बिगड़ता? और अल्ला तो इन की दशा से परिचित [ही] है।

(४) इन्नऽल्लाहा लाऽ यज़्लिमु मिस्क़ाऽला ज़र्रातिन् व इन्तकु ह़.सनत य्युज़ाइ. फ़ुहाऽ व युअ्.ति मिल्लदुन्हु अज्रऽन् अ.ज़ीम् ॥४०॥

अल्ला किसी पर तनिक भी अत्याचार नहीं करता, वरन् [कोई तनिक भी] नेकी करे तो उस को बढ़ाता, और अपने पास से प्रचुर (शुभ) परिणाम प्रदान करता है।

(५) फ़ कय्फ़ा इज़ाऽ जिअ्.नाऽ मिन् कुल्लि उम्मतिन् ँ बि शहीदि व्व जिअ्.नाऽ बिका अ.लाहाउ उलाउइ शहीदा; ॥४१॥

भला, (उस दिन उन लोगों का) क्या हाल होगा, जब हम प्रत्येक पैग़म्बर की प्रजा (अर्थात् प्रत्येक उम्मत) में से साक्षी बुलायेंगे। और (हे पैग़म्बर!) हम तुम को बुलायेंगे कि उन लोगों के सम्बन्ध में साक्षी दो।

(६) यउ्मा इज़िय्यवद्दुऽल्लज़ीना कफ़रूऽ व अ.सवुऽ-र्रसूला लउ् तुसव्वा बिहिमुऽल् अर्ज़ु; वलाऽ यक्तुमूनऽल्लाहा ह़.दीसन् ॥४२॥

जिन लोगों ने [इस्लाम से] इनकार किया, और [पैग़-म्बरी की] आज्ञा का उल्लङ्घन किया, [उन की] उस दिन आकांक्षा होगी कि हम धरती में धंस जाय। और, उस दिन यह लोग अल्ला से कोई बात भी नहीं छिपा सकेंगे।

(मं० १ पा० ५ रु० ७)

(१) या३ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ लाऽ तक़्बुऽ-स्सलाता व अन्तम् सुकाऽरा ह्.त्ता तअ्.-लमूऽ माऽ तकूलूना वलाऽ जुनुबऽन् इल्लाऽ अ.ाऽ-बिरी सबीलिन् ह्.त्ता तग़्तसिलूऽ; व इन्कुन्तुम्म-ज़.ी३ अउ् अला सफ़रिन् अउ् जा३आ अह्.दु-म्मिन्कुम्मिनऽल् ग़ा३इति अउ्ला मस्तुमु-न्निसा३ आ फ़.लम् तजिदूऽ मा३अन् फ़.तयम्ममूऽ सई.दऽन् तय्यिबऽन् फ़.ऽम्सहूऽ बि वुजूहिकुम् व अय्दी कुम्; इन्नऽल्लाहा काऽना अ.फ़ुव्वऽन् ग़फ़ूरा॥४३॥

मुसलमानो! जब तुम नशे की हालत में हो, तो नमाज़ के निकट भी न जाना। यहां तक कि नशा उतर जाये, और जो कुछ तुम [मुंह से] कहते हो, उस को समझने लगो। और [इसी प्रकार यदि स्नान की आवश्यकता हो तो भी नमाज़ के निकट न जाना, यहां तक कि स्नान करलो। हां, (यात्रा की दशा में) मार्ग चले जा रहे हो (और पानी प्राप्त न हो तो तहम्मुम करके नमाज़ पढ़लो)। और, यदि तुम रुग्ण हो अथवा, यात्रा में हो अथवा तुम में से कोई आवश्यकता (शौच,

अथवा लघुशंका) से निवृत होके आवे अथवा स्त्रियों से प्रसंग किया हो, और, तुम को पानी प्राप्त न हो, तो शुद्ध मिट्टी से अपने मुंह और हाथों को मलो । निस्सन्देह, अल्लाह सहन करने वाला और क्षमा शील है * ।

(२) अलम् तरा इलऽल्लज़ीना ऊतूऽ नसीबऽम्मिनऽल् किताबि यश्तरून-ज़्ज़लालता व युरीदूना अन्तज़िल्लुऽ-स्सबील् ; ॥४४॥

हे पैग़म्बर ! क्या तुमने उन लोगों पर दृष्टि नहीं डाली, जिन को [आसमानी] पुस्तक से खण्ड दिया गया था, वह [इस के उपरान्त भी] भ्रष्ट पथ को अपनाने लगे। और चाहते हैं, कि तुम मुसल्मान भी पथ-भ्रष्ट हो जाओ।

(३) वऽल्लाहु अअ्लमु बि अअ्दाइकुम् व कफ़ा बिऽल्लाहि वलिय्यऽव्व कफ़ा बिऽल्लाहि नसीर् ॥४५॥

और अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं को भली भांति जानता है। और, अल्ला (जैसा) पक्षपोषक (तुम्हारे लिये) पर्य्याप्त है, और अल्ला (जैसा) सहायक (भी) पर्य्याप्त है।

(४) मिनऽल्लज़ीना हाऽदूऽ युहर्रिफ़ूनऽल् कलिमा अम्मवाऽज़िही व यक़ूलूना समिअ्नाऽ

---

*यह आयत उस समय उतरी जब कि मुसल्मानों पर शराब हराम नहीं थी।

व अ.सय्नाऽ वऽस्मअ. ग़यरा मुस्मइ.व्व राऽइ.नाऽ लय्यऽन् ᳚ बिअल् सिनतिहिम् व तअ.नऽन् फि-द्दीनि; वलउ. अन्नहुम् क़ाऽलूऽ समिअ.नाऽ व अतअ.ना वऽ-स्मअ. वऽन्ज़ुर्नाऽ लकाऽना ख़य्रऽल्लहुम् व अक़्वमा वला किल्लअ.न-हुमुऽल्लाहु बि कुफ्रिहिम् फ़लाऽ युअ.मिनूना इल्लाऽ क़लील् ॥४६॥

हे पैग़म्बर! यहूदियों में कुछ (लोग ऐसे भी) हैं, जो शब्दों को उनके स्थान (अर्थात् असली अर्थ) से बदल देते हैं। और अपनी जीभ ऐंठ कर और मत (इस्लाम) का तिरस्कार करने के विचार से 'समिअ.ना' व 'अ.सय्ना' और 'इस्मअ. ग़य्रा मुस्मइन्' और 'राइ.ना' कह कर तुम्हें सम्बो-धित करते हैं। और यदि वह 'समिअ.ना व अतअ.ना, और 'इस्मअ.' और 'उन्ज़रना' कह कर बुलाते, तो (यह) उनके निमित्त हितप्रद होता, और बातभी स्पष्ट होती। परंतु उनपर तो उनके कुफ्र के कारण अल्लाह की फटकार है। अतः उनमें से अल्प मनुष्य ईमान लावेंगे।

---

* यहूदी जब मुहम्मद सा० के समीप आते तो उन्हें ताने देते। यहां तीन बातों का वर्णन है:—

एक 'समिअ.ना व 'अ.सय्ना' अर्थात् 'हमने आपका कहना सुना परंतु स्वीकार नहीं किया'। दूसरी बात है 'इस्मअ. ग़य्रा मुस्मइन्' अर्थात् 'हम

(५) या३ अय्युहऽऽल्लज़ीना ऊतुऽऽल् किताबा आमिनूऽ बिमाऽ नज़्ज़ल्नाऽ मुसद्दिक़ऽल्लिमाऽ मअ़ाकुम्मिन् क़ब्लि अन्नत्मिसा वुजूहऽन् फ़नारुद्दहाऽ अ़ला३ अद्बा३रिहा३ अउ् नल्अ़नाहुम् कमाऽ लअ़न्ना३ अस्हाब-स्सब्ति; व काऽना अम्रुऽल्लाहि मफ़्ऊ़ल् ॥४७॥

हे पुस्तक वालो! (कुरान) जो हमने उतारा है, और वह उस पुस्तक का जो तुम्हारे पास है, समर्थन भी करता है। उस पर ईमान ले आओ। परन्तु इससे पूर्व कि, हम मुंह बिगाड़ कर उलटे उनकी पीठों की ओर लगावें अथवा जिस प्रकार सप्ताह के दिन वालों * को तिरस्कृत किया था, उसी

जो निवेदन करते हैं आप उसको भी तो सुनिये, परंतु ईश्वर 'आपको न सुनवाये'। इसमें दूसरे वाक्यके दो आशय होसकतेहैं अर्थात यदि मित्रसे कहा जाय, तो उसका आशय होगा कि 'ईश्वर तुम्हें बुरी बात न सुनवाये' परंतु इसीको शत्रु के लिये प्रयुक्त करने वाले की तो यही नियत समझी जायगी कि 'ईश्वर तुमको बधिर बना दे'। तीसरे शब्द 'राइना' और 'उन्ज़ुर्ना' का आशय सूरये बकर प्रथम खण्ड में बता चुके हैं वहां, देख लें। सारांश यह कि अल्ला कहता है कि यह धूर्त लोग अपनी धूर्तता से बाज़ आते और 'अस-मे़ना' के स्थान पर 'अतअ़्ना' जिस का अर्थ है 'हम ने सुना और स्वीकार किया" और 'अस्मअ़् ग़ैरा मुस्मअ़' के स्थान में केवल 'इस्मअ़' और 'राइना के बदले 'उन्ज़ुर्ना' कहते हैं।

* इसका पहले सूरयेबकर में वर्णन कर चुके हैं १ खण्ड में देख लें।

प्रकार इनको भी तिरस्कृत करें। और, जो अल्ला को अभीष्ट है, वह तो होकर ही रहेगा।

(६) इन्नऽल्लाहा लाऽ यग़्फ़िरु अँय्युश्रका बिही व यग़्फ़िरु माऽ दूना ज़ालिका लिमँय्यशाऽउ, व मँय्युश्रिक् बिऽल्लाहि फ़क़दिऽफ़्तराऽ इस्मऽन् अज़ीम् ॥४८॥

अल्ला तो इस अपराध को क्षमा करने वाला नहीं है कि, उसके साथ (किसीको) साझी बतायाजाय। हां, इसके अतिरिक्त अन्य अपराध, जिसको चाहे, क्षमा करदे और, जिसने (किसी को) अल्लाह का साझी बतलाया, तो उसने (अल्लाह पर) आक्षेप किया, (और) भारी अपराध (किया)

(७) अलम् तरा इलऽल्लज़ीना युज़क्कूना अन्फ़ुसाहुम्; बलिऽल्लाहु युज़क्की मँय्यशाऽउ व लाऽ युज़्लमूना फ़तील् ॥४९॥

(हे पैग़म्बर !) क्या तुमने उन लोगों (की दशा) पर दृष्टि नहीं डाली, जो आप बड़े पवित्र बनते हैं? परंतु अल्लाह जिस को चाहता है, पवित्र बनाता है। और; (अल्लाह के यहां) लोगों पर एक रेशे बराबर भी अत्याचार नहीं होगा।

(८) उन्ज़ुर्कयफ़ा यफ़्तरूना अ़लऽल्लाहिऽल् कज़िबा; व कफ़ा बिहीऽ इस्मऽम्मुबीन् ॥५०॥

(हे पैग़म्बर !) देखो, यह लोग अल्ला पर किस प्रकार असत्य (आक्षेप) आरोपित कर रहे हैं। और, प्रत्यक्ष पाप के लिये तो यही पर्य्याप्त है।

(म० १, पा० ५, रु० ८)

(१) अलम् तरा इलऽल्लज़ीना ऊतूऽ नसी-बऽम्मिनऽल् किताबि युअ्मिनूना बिऽल् जिब्ति व-त्ताऽग़ूति व यक़ूलूना लिल्लज़ीना कफ़रूऽ हाउलाइ अह्‌दा मिनऽल्लज़ीना आमनूऽ सबील् ॥५१

(हे पैग़म्बर !) क्या तुमने उन लोगों (की दशा) पर दृष्टि नहीं डाली, जिनको (आसमान की) पुस्तक से खण्ड दिया गया, तो वह मूर्तियों और शैतान का वाक्य कहने लगे, और द्वैतवादियों के सम्बन्ध में (भी) कहने लगे कि, मुसल्मानों से तो यही मनुष्य अधिक सीधे पथ पर हैं ?

[२] उलाइकऽल्लज़ीना लअ़नाहुमुऽल्लाहु; व मँय्यल्‌अ़निऽल्लाहु फ़लन् तजिदा लहू नसीर्; ॥५२॥

(हे पैग़म्बर !) यही लोग हैं, जिन को अल्ला ने तिरस्कृत किया। यह सम्भव नहीं कि, तुम्हें उन का (कोई) सहायक मिले।

(३) अम् लहुम् नसीबुम्मिनऽल् मुल्कि फ़ इज़ऽल्लाऽ युअ्तून-न्नाऽसा नक़ीर-॥५३॥

अथवा इनके पास राज्य का कोई खण्ड है। और, इस कारण लोगों को तिल * बराबर भी नहीं देना चाहते।

(४) अम् यह्सुदून-न्नाऽसा अ़ला माऽ आताहुमुऽल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही, फ़क़द् आतय्नाऽ आला इब्राहीमऽल् किताबा वऽल् हिक्मता व आतय्नाहुम्मुल्कऽन् अ़ज़ीम् ॥५४॥

अथवा अल्लाह ने जो अपने अनुग्रह से लोगों को (क़ुरान की) कृपा प्रदान की है, उस पर जले मरे जाते हैं। (सो यह कोई बात नहीं पहले भी) हमने इब्राहीम वंश (के लोगों) को पुस्तक और ज्ञान दिया, और उनको विस्तृत राज्य भी प्रदान किया।

(५) फ़ मिन्हुम्मन् आमना बिही व मिन्हुम्मन् सद्दा अ़न्हु; व कफ़ा बि जहन्नमा सई़रा॥५५॥

---

* नक़ीर के अर्थ उस गड्ढे के हैं, जो छुआरे की गुठली में होता है। अरब में छुआरों की अधिकता है, इसलिये उनकी भाषा में अति न्यूनता प्रगट करने के लिये उस गड्ढे का उदाहरण उपस्थित किया जाता है। हमें अपनी भाषानुसार 'नक़ीर' के लिये 'तिल' ही प्रशस्त प्रतीत हुआ।

फिर मनुष्यों में से कोई तो उस पुस्तक पर ईमान लाया, और कोई उससे प्रथक रहा। अस्तु जो, इससे प्रथक रहा, उसके निमित्त धधकती हुई नर्क (की अग्नि) पर्य्याप्त है।

(६) इन्नऽल्लज़ीना कफ़रूऽ बि आयातिनाऽ सउ्फ़ा नुस्लीहिम् नाऽरा; कुल्लमाऽ नज़िजत् जुलूदुहुम् बद्दल्नाहुम् जुलूदऽन् ग़य्रहाऽ लि य.जूक़ुऽल् अ.ज़ाऽबा; इन्नऽल्लाहा काऽना अ़ज़ी-ज़ऽन् ह.कीम् ॥५६॥

जिन मनुष्यों ने हमारी आयतों से इन्कार किया, हम उनको प्रलय के दिन नर्क में प्रविष्ट करेंगे। जब उनकी त्वचा गल जायगी. तो हम इस उद्देश्य से कि वह (अल्लाह के) प्रकोप को पूर्णतः (भली भांति) चख लें, गली हुई त्वचा के स्थान में उनकी दूसरी (नवीन) त्वचा पैदा करेंगे। निस्सन्देह, अल्ला अत्यन्त प्रयत्नवान है।

(७) वऽल्लज़ीना आमनूऽ व अ़ामिलुऽ-रसालि-हाति सनुद्ख़िलु हुम् जन्नातिन् तज्री मिन्तह्-तिहऽऽल् अन्हारु ख़ालिदीना फ़ी हाऽ अबदा; लहुम् फ़ीहाऽ अज़्वाऽजुम्मुतह्हरातु व्व नुद्ख़ि-लुहुम् ज़िल्लऽन् ज़लील ॥५७॥

और, जो लोग ईमान लाये, और जिन्होंने सत्कर्म भी किये, हम उनको अति शीघ्र ऐसे उपवनों में प्रविष्ठ करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। और, वह उनमें निरन्तर निवास करेंगे। उन बाग़ों में उनके निमित्त सुन्दर स्त्रियां भी होंगी। हम उनको सघन छाया में ले जा कर रक्खेंगे।

(८) इन्नऽल्लाहा यअ्मुरुकुम् अन्तु अद्ऽऽल् अमानाति इला२ अह् लिहाऽ, व इज़ाऽ ह़कम्तुम् बय्न-न्नाऽसि अन्तह़ कुमूऽ बिऽल् अ़द्लि; इन्नऽल्लाहा निइ़म्माऽ यइ़ज़ु कुम् बिही; इन्नऽल्लाहा काऽना समीअ़ऽन् ं बसीर ॥५८॥

(मुसल्मानो !) अल्ला तुम्हें आज्ञा देता है कि, धरोहर रखने वालों की धरोहर (जब मांगें) उनको दे दिया करो। और, मनुष्यों के पारस्परिक झगड़े निर्णय करो। अल्ला जो तुमको उपदेश देता है, तुम्हारे निमित्त हितप्रद है। इसमें सन्देह नहीं कि, अल्ला (सब को) सुनता है, और (सब कुछ) देखता है।

(६) या२ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनू२ अती-उऽऽल्लाहा व अतीउ़ऽ-र्रसूला व उलिऽल् अम्रि मिन्कुम्; फ़ इन् तनाऽज़अ़्तुम् फ़ी शय्इन् फ़रुद्दू हु इलऽल्लाहि व-र्रसूलि इन्कुन्तुम् तुअ़् मिनूना बिऽल्लाहि वऽल् यउ़मिऽल् आख़िरि; ज़ालिका ख़य्रुन्व अह़ सानु तअ़् वील ॥५९॥

(हे मुसल्मानो !) अल्ला की आज्ञा मानो। और पैग़म्बर की आज्ञा मानो और, जो तुम में से शासक हैं, उनकी भी (आज्ञा मानो) फिर यदि किसी कारणवश तुम (और शासक) परस्पर झगड़ा खड़ा कर दो, तो अल्ला और क़यामत के दिन पर ईमान लाने की प्रतिज्ञा यह है कि, उस काम में अल्ला और रसूल (की आज्ञा) की ओर झुको। यह तुम्हारे निमित्त हित-प्रद है। और, परिणाम के विचार से भी बहुत अच्छा है।

[म० १, पा० ५, रू० ६]

[१] अलम् तरा इलऽल्लज़ीना यज़्उ़मूना अन्नहुम् आमनूऽ बिमा३ उन्ज़िला इलय्का वमा३ उन्ज़िला मिन् क़ब्लिका युरीदूना अँ य्य-तहा़ऽ कमू३ इल-त्ताऽग़ूति वक़द् उमिरू३ अँ य्यकफ़ुरूऽ बिही; व युरीदु-श्शय्तानु अँ य्युज़ि-ल्लहुम् ज़लालन् ॰ बई़द ॥६०॥

(हे पैग़म्बर !) क्या तुमने उन (मुनाफ़िक़ मुसल्मानों की दशा) पर दृष्टि नहीं डाली, जिनका कुरान पर विश्वास है, जो कि तुम पर उतारा गया, और उन (पुस्तकों) पर भी, जो तुमसे पूर्व उतारी गईं, और चाहते हैं कि, अपना अभियोग एक दुष्ट पुरुष (काब बिन अशरफ़ यहूदी) पर ले जांय। यद्यपि उनको आज्ञा दीगई है कि, उसकी आज्ञा न मानें और शैतान चाहता है कि, उनको उत्तेजित करके (सन्मार्ग से) बहुत दूर ले जाया जाय।

(२) व इज़ाऽ क़ीला लहुम् तआ़ाऽलउ्ऽ इला माऽ अन्ज़लऽल्लाहु व इलर्रसूलि रअयतऽल् मुन्फ़िक़ीना यसुद्दूना अ़न्का सुदूद ॥६१॥

और जब, उनसे कहा जाता है कि, आओ अल्ला ने जो (आज्ञा) उतारी है, उसकी ओर, और पैग़म्बरकी ओर (चलें)। तो तुम (उन) मुनाफ़िकों को देखते हो कि, वह तुम्हारे समीप आने से रुकते हैं।

(३) फ़ कय्फ़ा इज़ाऽ असाऽबत्हुम्मुसीबतुन् ऽबिमाऽ क़द्दमत् अय्दीहिम् सुम्मा जाऽऊका यह्लिफ़ूना बिऽल्लाहि इन् अरद्नाऽ इल्लाऽ इह्साऽनऽ व्व तउ़फ़ीक़ ॥६२॥

तो कैसी (दशा होगी) जब उनही के कर्त्तव्यों के कारण उन पर कोई आपत्ति आ पड़े, तो तुम्हारे पास अल्लाह की शपथें खाते हुये (दौड़े) आयें कि, हमारा अभिप्राय तो सद्व्यवहार और मेल-मिलाप * था।

---

* एक यहूदी और मुनाफ़िक (बनावटी मुसलमान)केमध्य झगड़ा हुआ और वह मुहम्मदसा० के पास आया। और उन्होंने यहूदी को डिगरी करदी। मुनाफ़िक इससे असन्तुष्ट होकर यहूदी को हज़रत उमर के पास पकड़ ले गया। और, सोचता था कि हज़रत उमर मेरे मुसलमान होनेके धोखेमें आकर मेरा पक्ष लेंगे। परंतु यहूदी ने पहुँचते ही कह दिया कि, पैग़म्बर साहब के

(४) उलाऽइकऽल्लज़ीना यअ़्लमुऽल्लाहु माऽफ़ी क़ुलूबिहिम्; फ़ अ़अ़्रिज़् अ़न्हुम् व इ़ज़्हुम् व क़ूल्लहुम् फ़ीऽ अन्फ़ुसिहिम् क़उ़्लन् ऽ बलीग़ ॥६३॥

यह ऐसे (उपद्रवी) हैं कि, जो इनके मनों में है, अल्ला को विदित है। तो (हे पैग़म्बर!) इनके पीछे न पड़ो। और, इनको (फूट के फल) समझा दो। और, इनसे ऐसी बातें करो कि (कलह के कुपरिणाम) भली-भांति इनके हृदयस्थ हों।

(५) वमाऽ अर्सल्नाऽ मिर्रसूलिन् इल्लाऽ लियुताऽअ़ा बि इज़्निऽल्लाहि; व लउ् अन्नहुम् इज़्ज़लमूऽ अन्फ़ुसिहिम् जाऽऊका फ़ऽस्तग़्फ़रूऽऽल्लाहा वऽस्तग़्फ़रा लहुमुर्रसूलु लवा जदुऽऽल्लाहा तव्वाऽबऽर्रहीम् ॥६४॥

और जो पैग़म्बर हमने प्रेषित किया, उसके प्रेषित करने से हमारा प्रयोजन (सदैव) यही रहा है कि, अल्ला की आज्ञा से उसकी बात मानी जाय। और, (हे पैग़म्बर!) जब इन लोगों ने (तुम्हारी आज्ञा उल्लंघन करके) अपने ऊपर अत्या-

पास हम ही आये हैं और यह उनके फ़ैसले से राज़ी नहीं। हज़रत उमर ने यह सुन कर मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़वा दी। इसके वारिसों ने ख़ून का दावा किया कि, हम तो उमर के पास आपस में सन्धि कराने के लिये गये थे; फ़ैसला कराने को नहीं। तब यह आयतें आईं।

चार किया था। यदि (उस समय यह लोग) तुम्हारे पास आते, और अल्लाह से क्षमा-प्रार्थना करते, और, (तुम) पैग़म्बर उसकी क्षमा चाहते तो (यह लोग) देख लेते कि, अल्लाह कितनी प्रायश्चित-प्रार्थना (तोबा) स्वीकार करने वाला है।

(६) फ़लाऽ व रब्बिका लाऽ युअ्मिनूना ह.त्ता युह.क्किमूका फ़ी माऽ शजरा बय्नहुम् सुम्मा लाऽ यजिदूऽ फ़ी अन्फ़ुसिहिम् ह.रजऽम्मिम्माऽ क़ज.य्ता व युसल्लिमूऽ तस्लीम ॥६५॥

हे पैग़म्बर ! तुम्हारे ही पालनकर्ता की सौगन्ध है कि, जब तक यह लोग अपने पारस्परिक झगड़े तुमही से तै न करायें, और जो कुछ तुम निर्णय कर दो, उस से खिन्न-हृदय न हों, (वरन् उसे) स्वीकार कर लें (उस समय तक) इनको ईमान न होगा ।

(७, ८, ६) व लउ् अन्नाऽ कतब्नाऽ अ.लय्हिम् अनिऽक़्तुलूऽ अन्फ़ुसाकुम् अविऽख़्रुजूऽ मिन्दियाऽरिकुम्माऽ फ़अ.लूहु इल्लाऽ क़लीलुम्मिन्हुम् ; व लउ् अन्नहुम् फ़अ.लूऽमाऽ यू अ.ज़ूनाऽ बिही लकाऽना ख़य्रऽल्लहुम् व अशद्दा तस्बीतऽव्व इज़ऽल्ला आतय्नाहुम्मिल्लदुन्नाऽ अज्रऽन् अ.ज़ीमऽव्व ला हद्य्नाहुम् सिराऽतऽम्मुस्तक़ीम ॥६६-६७-६८॥

और, यदि हम इनको आज्ञा देते हैं कि, आत्म-बध करो अथवा ग्राम-गृह छोड़ (परदेश) चले जाओ, तो उनमें से कुछ मनुष्यों के अतिरिक्त(अन्य) इस (आज्ञा) का पालन करते नहीं। और जो कुछ इनको समझायाजाता, उसको यदि यहकार्य रूप दे देते, तो यह उनके निमित्त हित-प्रद होता। और, इसके कारण संसार में (दीन पर भी) दृढ़ता के साथ स्थिर रहते, और इस दशा में हम उनको अपनी ओर से अवश्य शुभ परिणाम प्रदान करते। और, इनको (भी) अवश्य सत्पथ पर प्रवृत्त कर देते।

(१०) व मँय्युतिइ.ऽल्लाहा व-र्रसूला फ़ उलाइका मात्र.ऽल्लज़ीना अन्अ.मऽल्लाहु .अलय्-हिम्मिन-न्नबिय्यीना व-स्सिद्दीक़ीना व-श्शुहदाइ व-स्सालिहीना, व हसुना उलाइका रफ़ीक़ ॥६९॥

और जो, अल्ला और रसूल की आज्ञा माने, तो ऐसे ही पुरुष (बहिश्त में) इन (मान्य पुरुषों) के साथ होंगे, जिन पर अल्ला ने बड़े उपकार किये अर्थात् नबी और सदीक़ और शहीद और अन्य नेक बन्दे, और यह लोग क्या ही अच्छे साथी * हैं।

(११) ज़ालिकऽल् फ़ज़्लु मिनऽल्लाहि; व कफ़ा बिऽल्लाहि अ.लीम ॥७०॥

---

* एक हदीस के आधार पर नबी मुहम्मदसाहब, सदीक़ हज़रत अबूबकर और शहीद हज़रत उमर और उस्मान ठहरते हैं।

यह अल्लाह का अनुग्रह है और अल्लाह ही का जानना पर्याप्त है।

(म०; १, पा०; ५, रु० १०)

(१) या अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ ख़ुज़ूऽ हिज़्रकुम् फ़ऽन् फ़िरूऽ सुबाऽतिन् अविऽन् फ़िरूऽ जमीअ. ॥७१॥

मुसल्मानो! अपनी सावधानी (और होशियारी) रक्खो और (शत्रु के मुक़ाबिले में) प्रथक-प्रथक पल्टन बना कर निकला करो अथवा सब इकट्ठे।

(२) व इन्ना मिन्कुम् लमल्लयुबत्तिअन्ना, फ़ इन् असाऽबत्कुम्मुसीबतुन् क़ाऽला क़द् अन् अ.मऽल्लाहु अ.लय्या इज़् लम् अकुम्मअ.हुम् शहीद् ॥७२॥

और तुम में कोई ऐसा भी है कि, वह (जिहाद में जाने से) अवश्य पीछे हट जायगा। फिर यदि तुम पर कोई आपत्ति आ पड़े तो कहने लगेगा कि, अल्लाह ने मुझ पर (बड़ा ही) उपकार किया कि मैं इन (मुसल्मानों) के साथ मौजूद न था।

(३) वला इन् असाऽबकुम् फ़ज़्लुम्मिनऽल्लाहि ल यक़ूलन्ना क अँल्लम् तकुन् ॅ बय्नकुम् व

अयनहू मवद्दतुय्या लयतनी कुन्तु मअ.हुम् फ़
अ.फ़ूज़ा फ़उ.ज़ऽन् अ.ज़ीम ॥७३॥

और यदि तुम पर अल्ला का अनुग्रह हो, तो मानो तुममें और उसमें मित्रता अर्थात् प्रेम था ही नहीं। बोल उठो कि, यदि मैं भी इनके साथ होता, तो मुझको बड़ी भारी सफलता होती।

(४) फ़ल् युक़ाऽतिल् फ़ी सबीलिऽल्लाहिऽ ल्लज़ीना यश्रूनऽल् हयात-द्दुन्याऽ बिऽल् आख़िरति; व मँय्युक़ाऽतिल् फ़ी सबीलिऽल्लाहि फ़ युक़्तल् अउ् यग़्लिब् फ़ सउ्फ़ा नुअ्तीहि अज्रऽन् अज़ीम ॥७४॥

सो जो लोग परलोक के परिवर्तन में इस दुनियां का जीवन (अर्थात् प्राण तक का) अर्पण कर देने को उद्यत हैं, उन को उचित है कि अल्लाह के मार्ग में शत्रुओं से युद्ध करें, और फिर मारा जावे अथवा विजय प्राप्त करे तो (दोनों दशाओं में प्रलय के दिन) हम उसको पूरा परिणाम प्रदान करेंगे।

(५) वमाऽ लकुम् लाऽ तुक़ाऽतिलूना फ़ी सबीलिऽल्लाहि वऽल् मुस्तज़् अ.फ़ीना मिन-र्रिजाऽलि व-न्निसाइ वऽल् विल्दाऽनिऽल्लज़ीना यक़ूलूना रब्बनाऽ अख़्रिज्नाऽ मिन् हाज़िहिऽल्

क़ुर्यति-ज़्ज़ाऽलिमि अह्लहाऽ, वऽज्‌ अ.ल्लनाऽ मिल्लदुन्का वलियऽव्वऽज्‌ अ.ल्लनाऽ मिल्लदुन्काऽ नसीर ॥७५॥

और (मुसल्मानो!) तुमको क्या हो गया है कि, अल्लाह के मार्ग में और उन निस्सहाय पुरुषों और स्त्रियों और बालकों के निमित्त (शत्रुओं से) युद्ध नहीं करते, जो (दुख से) प्रार्थनाएँ कर रहे हैं कि, हे हमारे पालनकर्ता ! हमको इस बस्ती (अर्थात् मक्के) से, जहां के निवासी हम पर अत्याचार कर रहे हैं, (कहीं) प्रथक कर, और अपनी ओर से किसी को हमारा पक्ष-पोषक बना, और अपनी ओर से (स्वयं) किसी को हमारा सहायक बना ।

(६) अल्लज़ीना आमनूऽ युक़ाऽतिलूना .फ़ी सबीलिऽल्लाहि, वऽल्लज़ीना कफ़.रूऽ युक़ाऽति-लूना .फ़ी सबीलि-त्ताऽग़ूति फ़. क़ाऽतिलूऽ अउ्‌लियाऽअ-श्शय्‌तानि इन्ना कय्‌द-श्शय्‌तानि काऽना ज़ई.फ़ ॥७६॥

जो ईमान रखते हैं, वह तो अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं । और, जो (इस्लाम से) विमुख हैं, वह शैतान के मार्ग में लड़ते हैं । फिर, (हे मुसलमानो !) तुम शैतान के पक्ष वालों से युद्ध करो । शैतान के जितने प्रयत्न हैं, सब पोच हैं ।

[म० १, पा० ५, रु० ११]

(१) अलम् तरा इलऽल्लज़ीना क़ीला लहुम् कुफ़्फ़ू३ अयदियाकुम् व अक़ीमुऽ-स्सलाता व आतुऽ-ज़्ज़काता, फ़ लम्माऽ कुतिबा अ़लयहिमुऽल् क़िताऽलु इज़ाऽ फ़रीक़ुम्मिन्हुम् यख़्शउ्नन्नाऽसा काख़्शयतिऽल्लाहि अउ् अशद्दा ख़श्यतन्, व क़ाऽलूऽ रब्बनाऽ लिमा कतब्ता अ़लयनाऽऽल् क़िताऽला, लउ्लाऽ३ अख़्ख़र्तनाऽ३ इलाऽ३ अजलिन् क़रीब्; कुल् मताऽउ्-द्दुन्याऽ क़लीलुन्, वऽल् आख़िरतु ख़यरुल्लिमनिऽत्तक़ा वलाऽ तुज़्लमूना फ़तील ॥७७॥

हे पैग़म्बर! क्या तुमने उन लोगों (की दशा) पर दृष्टि-पात नहीं किया, जिन को अल्ला ने आज्ञा दी कि अपने हाथों को रोके रहो, और,नमाज़ पढ़ते रहो, और ज़कात देते रहो। फिर जब इन लोगों पर जिहाद का कर्त्तव्य आ पड़ा, तो एक समुदाय तो इनमें से (ऐसा निर्बल निकला कि) लोगों से इस प्रकार भय खाने लगा, जैसे कोई अल्ला से भय खाता है। वरन् (अल्ला के भय से भी) बढ़ कर और घबड़ा कर (अल्ला से) कहने लगा कि, हे हमारे पालनकर्त्ता ! तूने हम पर जिहाद का करना क्यों कर्तव्य क़रार दिया ? हम को थोड़े दिन का और अवकाश (समय) क्यों नहीं दिया ? हे पैग़म्बर!

लोगों से कहो कि, सांसारिक लाभ अल्प हैं। और, जिस मनुष्य को अल्लाह का भय होवे, उस के लिये परलोक (आक़बत) की सफलता (सांसारिक लाभों से) श्रेष्ठ है, और वहां तुम लोगों में किसी के साथ रत्ती भर भी अन्याय न होगा।

(२) अय्नमा ताकूनू युद्रिक्कुमुऽल् मउतु व लउ कुन्तुम् फ़ी बुरूजिम्मुशय्यदातिन्; व इन् तुसिब्हुम् ह़सनतुय्यकूलू हाज़ि.ही मिन् इ.न्दिऽल्लाहि, व इन् तुसिब्हुम् सय्यिआतुय्यकूलू हाज़ि.ही मिन् इ.न्दिका; कुल् कुल्लुम्मिन् इ.न्दिऽल्लाहि; फ. माऽलि हाउलाइऽल् क़उमि लाऽ यकाऽदूना य.फ़्क़हूना ह़दीसा ॥७८॥

मनुष्यो! तुम कहीं भी (क्यों न) हो, मृत्यु तो तुम्हारी अवश्य ही आवेगी। चाहे मक्के में (ही क्यों न) हो। और, (हे पैग़म्बर!) इन लोगों को कुछ लाभ हो जाता है, तो कहने लगते हैं कि, (हे पैग़म्बर!) यह तुम्हारी ओर से (अर्थात् तुम्हारे कारण) है। (अतः हे पैग़म्बर! इन से) कह दो कि, (हानि-लाभ) सब अल्ला की ओर से है। तो इन लोगों की क्या अवस्था है कि, बात के मर्म अर्थात् बुद्धि के पास होकर भी नहीं फटके।

(३) माऽ असाऽबका मिन् ह़सनतिन् .फ मिनऽल्लाहि; वमाऽ असाऽबका मिन् सय्यिआतिन

फ़मिन्नफ़्सिका; व अर्सल्नाका लिन्नाऽसि रसूला; व कफ़ा बिऽल्लाहि शहीदा ॥७९॥

(हे मनुष्य!) तुझ को कोई लाभ पहुँचे, तो (समझ कि) अल्लाह की ओर से है। और, तुझ को कोई हानि पहुचे तो तेरे नफ्स की ओर से है * और हमने तुमको मनुष्यों के प्रति पैग़ाम पहुंचाने वाला (प्रतिष्ठित के) प्रेषित किया, और (इस के लिये) अल्लाह की साक्षी पर्य्याप्त है।

(४) मँय्युतिइ-र्रसूला फ़क़द् अताऽअ-ऽल्लाहा, व मन् तवल्ला फ़माऽ अर्सल्नाका अ़लयहिम् हफ़ीज़ ॥८०॥

जिसने पैग़म्बर की आज्ञा को पालन किया, (उस ने) अल्ला ही की आज्ञा का पालन किया। और, जो विमुख हो जाय, तो (हे पैग़म्बर! कोई चिन्ता नहीं, क्योंकि) हमने तुम को इन मनुष्यों का निरीक्षक (बनाकर) नहीं भेजा।

(५) व यकूलूना ताऽअ़तुन् फ़इज़ाऽ बरज़ूऽ मिन् इन्दिका बय्यता ताऽइफ़तुम्मिन्हुम् ग़य्रऽ-ल्लज़ी तकूलु; वऽल्लाहु यक्तुबु माऽ युबय्यितूना

---

* यह बात कि, हानि अपने कारण होती है, और लाभ अल्लाह की ओर से होता है, पूर्व की आयत के आशय के कितना प्रतिकूल है। और यही नहीं वरन् पूर्ण क़ुरान के अध्ययन के अनन्तर अन्वेषक समझ सकेगा कि क़ुरान के कथनों में, आपस में, कितनी प्रतिकूलता पाई जाती है।

फ़ अअ़्रिज़् अ़न्हुम् व तवक्कल् अ़लऽल्लाहि व कफ़ा बिऽल्लाहि वकील ॥८१॥

और (यह लोग मुंह से कहने को तो) कह देते हैं कि, (जो तुम कहते हो) हम स्वीकार करते हैं, परन्तु जब तुम्हारे समीप से (उठ कर) बाहर जाते हैं, तो इनमें से कुछ लोग रातों को (गोष्ठी बना–बना कर) अपने कथन के विपरीत (अन्यान्य) सम्मतियां (स्थिर) करते हैं। और, जैसी–जैसी सम्मतियां रातों को करते हैं, अल्लाह (का दूत फ़रिश्ता) सब लिखता जाता है, तो इनकी कुछ चिन्ता न करो, और अल्लाह पर विश्वास रक्खो। और, अल्लाह पर्य्याप्त है, कार्य सिद्ध करने को।

(६) अफ़लाऽ यतदब्बरूनऽल् क़ुर्आना, व लउ् काऽना मिन् इ़न्दि ग़य्रिऽल्लाहि लवजदूऽ फ़ीहिऽख़्तिलाऽफ़ऽन् कसीर ॥८२॥

तो क्या यह लोग कुरान (के विषय) में विचार नहीं करते (कि इसमें कहीं अन्तर नहीं) और यदि (कुरान) अल्ला के अतिरिक्त (अन्यत्र) के पास से (आया) होता तो अवश्य इसमें अनेक विरोध * (contradictions) पाये जाते।

---

* कुरानके इस मान्य मन्तव्यके आधार पर ही हम 'कुरानकौतुक' के एक अध्यायमें दिखायेंगे कि कुरानके कथनों में कितना पारस्परिक विरोध विद्यमान है। और, यह भी सिद्ध करेंगे कि, कुरान के वाक्यों में विरोध का बाहुल्य विद्यमान होने ही के कारण कुरान की कुछ आयतें अमान्य अर्थात मन्सूख़ माननी पड़ीं। परन्तु फिर भी परस्पर विरोध विद्यमान है।

(७) व इज़ाऽ जा२अहुम् अम्रु म्मिनऽल् अम्नि अविऽल् ख़ौ फ़ि, अज़ाऽऊऽ बिही; व लउ रद्दूहु इल-र्रसूलि व इला२ उलिऽल् अम्रि मिन्हुम् लअ़लिमाहुऽल्लज़ीना यस्तन् बितूनहू मिन्हुम् व लउ लाऽ फ़ज़्लुऽल्लाहि अ़लय्कुम् व रह्मतुहू लऽत्तबअ़्तुमु-श्शय्ताना इल्लाऽ क़लील ॥८३॥

और, जब इनके समीप शान्ति अथवा भय का कोई समाचार आता है, तो उसको (सब में) फैला देते हैं। और, यदि उसके विषय में पैग़म्बर की ओर, और उन लोगों की ओर पहुँचते, जो उन में शासन के प्रमुख हैं, तो पैग़म्बर और अधिकारियों में से जो लोग उस (बात की वास्तविकता) का अन्वेषण करने वाले हैं, उसको विदित कर लेते। और, (मुसल्मानो !) यदि तुम पर अल्ला का अनुग्रह और अनुकम्पा न होती, तो कुछ के अतिरिक्त तुम (सबके सब) शैतान के अनुगामी हो गये होते।

(८) फ़ क़ाऽतिल् फ़ी सबीलिऽल्लाहि, लाऽतुकल्लफ़ु इल्लाऽ नफ़्सका व ह़र्रिज़िऽल् मुअ्मिनीना, अ़सऽल्लाहु अँ य्यकुफ़्फ़ा बअ्सऽल्लज़ीना कफ़रूऽ; वऽल्लाहु अशद्दु बअ्सऽव्व अशद्दु तन्कील ॥८४॥

तो (हे पैग़म्बर !) अल्लाह के मार्ग में तुम (शत्रुओं से) युद्ध करो, परंतु अपने व्यक्तित्व के अतिरिक्त अन्य किसी की ज़िम्मेवारी (बल-बूते) पर नहीं। और, हां, मुसल्मानों को (भी लड़ाई के लिये) उत्तेजित करो। आश्चर्य्य नहीं कि, अल्लाह काफ़िरों के बल को दबा दे। और, अल्लाह का बल अधिक पुष्ट और उसका दण्ड (सबसे) अधिक दारुण है।

(९) मँ य्यशफ़अ् शफ़ाऽअ़तन् ह़सनत य्यकु-ल्लहू नसीबुम्मिन्हाऽ, व मँ य्यशफ़अ् शफ़ाऽअ़तन् सय्यिआतय्यकुल्लहू किफ़्लुम्मिन्हाऽ; व काऽनऽ-ल्लाहु अ़ला कुल्लि शय्इम्मुक़ीत् ॥८५॥

जो पुरुष अच्छी बात का समर्थन करे, उसमें से उसे (प्रलय के दिन) बांट भी मिलेगा। और जो बुरी (बात) का समर्थन करे, उस (की आपत्ति) में वह भी सम्मिलित हो। और, अल्ला प्रत्येक पदार्थ का प्रबन्धक है।

(१०) व इज़ाऽ हुय्यीतुम् बितह़िय्यतिन् फ़ह़य्यूऽ बि अह़सना मिन्हाऽ अउ् रुद्दूहाऽ; इन्नऽल्लाहा काऽना अ़ला कुल्लि शय्इन् ह़सीब ॥८६॥

और, (मुसल्मानो ! जब तुम को किसी ढंग से सलाम किया जावे, तो तुम उससे श्रेष्ट सलाम करो अथवा वैसा ही उत्तर दो। अल्लाह प्रत्येक पदार्थ का लेखा लेने वाला है।

(११) अल्लाहु लाऽ इलाहा इल्लाऽ हुवा; लि यज्म अ़न्नकुम् इला यउ्मिऽल् क़ियामति लाऽ रय्बा फ़ीहि; वमन् अस्दकु मिनऽल्लाहि ह़दीस ॥८७॥

अल्लाह (पवित्र है) उसके अतिरिक्त अन्य आराध्य नहीं इसमें सन्देह नहीं कि प्रलय के दिन वह तुम (सब) को (एक स्थान पर) अवश्य एकत्रित करेगा।

(मं० १ पा० ५ रु० १२)

(१) फ़माऽलकुम् फ़िऽल् मुनाफ़िक़ीना फ़िआ तय्नि वऽल्लाहु अर्कसाहुम्, बिमाऽ कसबूऽ; अतु रीदूना अन्तह्दूऽ मन् अज़ल्लऽल्लाहु; व मँ य्युज़्लिलिऽल्लाहु फ़लन् तजिदा लहू सबील ॥८८॥

सो (मुसल्मानो!) तुम्हारी क्या दशा है कि, मुनाफ़िक़ों के विषय में मत-भेद दिखा रहे हो। यद्यपि अल्ला ने उनकी करतूतों के दण्ड में उनको अन्धा * कर दिया (जिससे वह मुर्तिद होगये)। क्या तुम यह चाहते हो कि, जिसको अल्ला ने मार्ग-च्युत कर दिया है, उस को सन्मार्ग पर ले आओ। और, जिसको अल्ला मार्ग-च्युत करे, उसको, सम्भव नहीं, कि, (हे पैग़म्बर!) तुम (सीधा) मार्ग दिखा सको।

* बुद्धि विहीन बना दिया है।

(२) वद्दूऽलउ तक्फुरूना कमाऽ कफ़रूऽ फ़तकूनूना सवा३ अन् फ़लाऽ तत्तख़िज़ूऽ मिन्हुम् अउलिया३आ हत्ता युहाऽजिरूऽ फ़ी सबीलिऽ-ल्लाहि, फ़ इन्तवल्लउऽ फ़ ख़ुज़ूहुम् वऽक़्तुलू हुम् हयसु वजत्तुमूहुम् वलाऽ तत्तख़िज़ूऽ मिन्हुम् वलिय्यऽ व्वलाऽ नसीर-॥८६॥

इन मुनाफ़िक़ों की इच्छा यह है कि, जिस प्रकार स्वयं काफ़िर हो गये हैं, उसी भांति तुम भी कुफ़्र करने लगो। और, तुम सब एक ही प्रकार के हो जाओ। तो जब तक (यह लोग) अल्लाह के मार्ग में (अर्थात् अल्ला के लिये) हिजरत न कर आयें, इनमें से (किसी को) अपना सखा और सहायक न बनाना। फिर यदि (मुसल्मा नियत से) मुंह मोड़े * तो इनको पकड़ो, और जहां पाओ इनको क़तल करो और इनमें से किसी को अपना सखा और सहायक न बनाना।

---

* कुरान के प्रथम खण्ड के पृष्ठ १३८ पर सूरये बक़र की २५६ आयत प्रचार के प्रारम्भिक काल में, हज़रत मुहम्मद के मुंह से (अल्ला की!) यह आज्ञा सुनातीहै: 'ला इक्राऽहा फ़िऽ-द्दीनि' अर्थात् "धर्म में बल-प्रयोग (ज़बर्दस्ती जायज़) नहीं" परन्तु आश्चर्य का विषय है कि बाद में यह आज्ञा इस रूप में आ जाती है कि "मुसल्मानियत से मुर्तिद होनेका दण्ड मृत्यु है।" हम अन्यत्र बतावेंगे कि १२०० वर्ष तक मुसल्मानों ने इसी पिछली आज्ञा का अनुसरण किया और यही आज्ञा मान्य है।

(३) इल्लऽऽल्लज़ीना यसिलूना इला क़उ्मिन् बय्नकुम् व बय्नहुम्मीसाऽकुन् अउ्जाऊ कुम् ह्सिरत् सुदूरुहुम् अँ य्युक़ाऽतिलूकुम् अउ् युक़ाऽतिलूऽ क़उ्महुम्; वलउ्शाऽ अऽल्लाहु लसल्लतहुम् अ्लय्कुम् फ़ला क़ातलू कुम्, फ़ इनिऽअ् तज़ालू कुम् फ़लम् युक़ाऽतिल कुम् व अल्क़उ्ऽ इलय् कुमु-स्सलामा फ़माऽ जअ्लऽल्लाहु लकुम् अ्लय्हिम् सबील ॥९०॥

परंतु जो मनुष्य ऐसे समुदाय में सम्मिलित हो गये हों कि, तुममें और उनमें (सन्धि की) प्रतिज्ञा (हो चुकी) है अथवा तुम्हारे साथ युद्ध करने से अथवा अपने समुदाय के साथ युद्ध करने से हृदय में हार कर तुम्हारे समीप आवें (तो ऐसे लोगों से मेल-मिलाप न रखना।) और, यदि अल्लाह चाहता तो इन लोगों को तुम्हारे ऊपर विजय प्रदान करता। तो यह तुम से युद्ध करने पर युद्ध करते। अतः यदि (ऐसे लोग) तुम से दूर बचें और तुमसे न लड़ें और तुम्हारी ओर सन्धि (का सन्देश) दें, तो ऐसे मनुष्यों पर तुम्हारे लिये अल्ला ने कोई नियम नहीं रक्खा।

(४) सत जिदूना आख़िरीना युरीदूना अँय्य-अ्मनू कुम् व यअ्मनूऽ क़उ्महुम्; कुल्लमाऽ रुद्दूऽ इलऽल् फ़ितनति उर्किसूऽ फ़ीहाऽ, फ़ इल्लम् यअ्तज़िलूकुम् व युल्कूऽ इलय्कुमु-स्सलमा व

यकुफ्फू३ अय्दियाहुम् फ़ख़ुज़ूहुम् वऽक्तुलूहुम् हैसु सक़िफ़्तुमूहुम् ; व उलाइकुम् जअल्‌नाऽ लकुम् अ़लय्हिम् सुल्तानम्मुबीन ॥९१॥

कुछ और मनुष्य तुम ऐसे भी पाओगे, जो तुमसे (भी) शान्ति के साथ रहना चाहते हैं, और अपनी जाति साथ (भी) शान्ति से रहना चाहते हैं। परंतु उनकी अवस्था ऐसी है कि, जब कभी कोई उन्हें उपद्रव की ओर लौटा कर ले जावे, तो औंधे मुंह उसमें जा गिरने को उद्यत। अतः (ऐसे मनुष्य) यदि न (तो) तुमसे दूर बचें, और न तुम्हारी ओर सन्धि (का सन्देश) भेजें, और न अपने हाथ युद्ध को रोकें तो उन को पकड़ो और जहां पाओ उनको क़तल करो (तलवार के घाट, उतारो।) और, यही लोग हैं जिनके मुक़ाबिले में हमने तुम्हारे लिये स्पष्ट उपद्रव उत्पन्न कर दी हैं।

(म० १, पा० ५, रु० १३)

(१) वमाऽ काऽना लि मुअ्‌मिनिन् अँ य्यक़्तुला मुअ्‌मिनऽन् इल्लाऽ ख़ताअऽन् व मन् क़तला मुअ्‌मिनऽन् ख़ताऽअन् फ़तह्‌रीरु रक़बतिम्मुअ्‌मिनातिव्वँदियतुम्मुसल्लमातुन् इलाऽ अह्लिहीऽ इल्लाऽ अँ य्यस्सद्दक़ूऽ; फ़ इन् काऽना मिन् क़उमिन् अ़दुव्विल्लकुम् व हुवा मुअ्‌मिनुन् फ़तह्‌रीरु रक़बतिम्मुअ्‌मिनातिन्; व इन्

का़ऽना मिन् क़ौ़मिन् ॰ँ बय्नकुम व बय्नहुम्मीसाऽकुन फ़दियतुम्मु सल्लमातुन् इलाऽ अह्लिही व तह़्रीरु रक़बतिम्मुअ्मिनातिन्, फ़मल्लम् यजिद् फ़सियाऽमु शह्रय्नि मुतताऽबिअ्य्नि तउ़बतम्मिनऽ ल्लाहि, व काऽनऽल्लाहु अ़लीमऽन् ह़कीम ॥९२॥

किसी मुसल्मान को उचित नहीं कि मुसल्मान को मार डाले। परंतु भूल से (मार डाला हो, तो दूसरी बात है)। और जो मुसल्मान को भूल से (भी) मार डाले, तो एक मुसल्मान को मुक्त कर दे, और मृतक के वारिसों को रक्त बहा दे। परन्तु यह कि, यदि (मरे हुये के वारिस रक्त बहाना) क्षमा कर दें। फिर यदि मृतक उन लोगों में का हो, जो तुम मुसल्मानों के दुश्मन हैं, और वह स्वयं मुसल्मान हो, तो एक मुसल्मान मुक्त करना होगा। और यदि (मृतक) उन मनुष्यों में से हो, जिनमें और तुममें (सन्धि की) प्रतिज्ञा है, तो (घातक को उचित है कि) मृतक के वारिसों को रक्त-बहा(कर) पहुंचाये और (इस के अतिरिक्त) एक मुसल्मान सेवक को (भी) मुक्त कर दे। और, जिसको (मुसल्मान के मुक्त करने की) सामर्थ्य न हो, तो बराबर दो मास तक उपवास (रोजे) रक्खे (क्यों) कि, प्रायश्चित की यह प्रक्रिया अल्ला की निश्चित की हुई है। और, अल्ला सब की दशा से परिचित है, और इसका प्रबन्ध पक्का है।

(२) व मँय्यक्तुल् मुअ्मिनम्मुतअ़म्मिदऽन् फ़ जज़ा२उहू जहन्नमु ख़ाऽलिदऽन् फ़ीहाऽ व ग़ज़िबऽल्लाहु अ़लय्हि व लअ़नहू व अअ़द्दा लहू अ़ज़ाऽबऽन् अ़ज़ीम् ॥९३॥

और जो मुसल्मान को जान-बूझ कर बध करदे, तो उस का दण्ड दोज़ख़ है, जिस में वह निरन्तर निवास करेगा और उस पर अल्लाह का आतङ्क आवेगा। और, उस को अल्लाह तिरस्कृत करेगा। और, अल्ला ने उस के निमित्त महान त्रास तय्यार कर रक्खा है।

(३) या२ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनू२ इज़ाऽ ज़रब्तुम् फ़ी सबीलिऽल्लाहि फ़तबय्यनू व लाऽ तक़ूलूऽ लि मन् अल्क़ा२ इलय्कुमु-स्सलामा लस्ता मुअ्मिनऽन्, तब्तग़ूना अ़रज़ऽल् हयाति-द्दुन्याऽ फ़ इ़न्दऽल्लाहि मग़ाऽनिमु कसीरतुन्; कज़ालिका कुन्तुम्मिन् क़ब्लु फ़ मन्नऽल्लाहु अ़लय्कुम् फ़त बय्यनूऽ; इन्नऽल्लाहा काऽना बिमाऽ तअ़्मलूना ख़बीर् ॥९४॥

मुसल्मानो! जब तुम अल्लाह के पथ में (युद्धार्थ) बाहर निकलो, तो (जिन पर आक्रमण करना हो उन को दशा का) भली भांति विवेचन कर लिया करो। और; जो मनुष्य तुमसे

'सलाम अलेक' करे, उससे यह न कहो कि, तू मुसल्मान नहीं। (और ऐसा कहने से) तुम्हारा प्रयोजन हो (कि) इस सांसारिक सामग्री (को उससे लूट लो)। सो (ऐसी लूट पर क्यों गिरते हो) अल्लाह के यहां (तुम्हारे लिये) बहुतसा (जायज़) लूट का माल (मौजूद) है। पहले तुम भी तो ऐसे ही थे। फिर तुम पर अल्ला ने अपना अनुग्रह किया, तो अन्य नव मुसल्मानों की निर्बलता पर दृष्टि दौड़ा कर लड़ पड़ने से पूर्व भली भांति विदित कर लिया करो, क्योंकि जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्ला को उस का बोध * है।

(४) लाऽ यस्तविऽल् क़ाऽइ.दूना मिनऽल् मुअ्मिनीना ग़ायरु उलि-ज़्ज़रारि वऽल् मुजाऽहिदीना फ़ी सबीलिऽल्लाहि बि अम्वाऽलिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् ; फ़ज़्ज़लऽल्लाहु मुजाऽहिदीना बि अम्वाऽ लिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् .अलऽल् क़ाइ.दीना दरजतन् , वकुल्लऽन्व अ.द्ऽल्लाहुऽल् हु.स्ना, व

---

* काफ़िरों के साथ युद्ध जारी हुआ तो मुहम्मद सा० ने कुछ मुसल्मान शत्रुओं के मुक़ाबिले को भेजे। उधर के कुछ मनुष्य गांव के बाहर पशु चरा रहे थे, उन्होंने मुसल्मानी ढंग से उन मुसल्मानों को सलाम अलैक कहा। परन्तु मुसल्मान उन पर टूट पड़े और उनके पशु छीन लिये। तब मुहम्मद सा० पर यह आयतें आईं।

फ.ज़्ज़लऽल्लाहुऽल् मुजाहिदीना अ.लऽल् क.इ-दीना अज्रऽन् .अज़ीम् ॥९५॥

जो मुसल्मान किसी प्रकार विवश न हों और वह (जिहाद से) बैठ रहें। तो, यह लोग उन लोगों के समान (उच्च) नहीं (हो सकते) जो अपने तन और धन से अल्ला के मार्ग में ज़िहाद कर रहे हैं। अल्ला ने तन और धन से जिहाद करने वालोंको बैठ रहने वालोंको पदवी में के विचार से बड़ी प्रतिष्ठा प्रदान की है। और, अल्लाह की अच्छी प्रतिज्ञा तो सभी (मुसल्मानों) से है। और, अल्ला ने महान फल के विचार से जिहाद करने वालों को बैठ रहने वालों से अधिक उत्कृष्टता प्रदान की है।

(५) दरजातिम्मिन्हु व मग़्फ़िरतव्व रह्मतन्; व काऽनऽल्लाहु ग़फ़ूरऽर्रहीम् ॥९६॥

वह (लोगों की) पदवियां हैं (जो) अल्ला के यहां से (निश्चित) हैं। और उस का दान और दया है। और अल्ला क्षमा-दान करने वाला और दयालु है।

(म० १, पारा ५, रु० १४)

(१) इन्नऽल्लज़ीना तवफ.फ.ाहुमुऽल्मलाइ इ-कतु ज़ाऽलिमीइ अन्फुसिहिम् क़ाऽलूऽ फ़ी मा कुन्तुम्; क़ाऽलू कुन्नाऽ मुस्तज़.अ.फ.ीना फ़ि.ऽल्

अर्ज़ि; क़ाऽलू३ अलम् तकुन् अर्ज़ुऽल्लाहि वाऽसि-अ,तन् फ़,तुहाऽजिरूऽफ़ीहा, फ़. उलाइका मअ्-वाहुम् जहन्नमु; वसाअत् मसीर—॥९७॥

जो लोग * अपने ऊपर आप अत्याचार कर रहे हैं, उन से फ़रिश्ते उनके प्राण निकाले पीछे पूछते हैं कि, तुम (दारुलहरम में पड़े-पड़े) क्या करते रहे? तो यह उत्तर देते हैं, कि हम वहां विवश थे। (अतएव उनका मुक़ाबिला न कर सके इस पर फ़रिश्ते उनसे) कहते हैं कि, क्या अल्ला की (इतनी विस्तृत) भूमि में (इतनी) गुंजाइश नहीं कि, तुम उस में (कहीं) हिजरत करके चले जाते। तात्पर्य्य यह कि यह वह मनुष्य हैं,† जिनका निवास नर्क है, और वह, अति निकृष्ट स्थान है।

---

* दारुल हरम से अभिप्राय उस देश से है, जिसमें काफ़िरों का राज्य हो और वहां का अधिकारी मुसल्मानों को नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात आदि से रोके, तो ऐसे देश में मुसल्मानों को रहना उचित नहीं—देश छोड़ कर अन्यत्र चले जायँ। दारुल हरम पर उन मुसल्मानों को जिहाद की भी आज्ञा है, जिन में जिहाद करने की सामर्थ्य हो।

† यह मक्कावासी उन मनुष्यों के विषय में है, जो यद्यपि मुसल्मान हो गये। परन्तु मुहम्मद सा॰ के साथ मदीना को (हिजरत करके) न गये। इनको बद्र के युद्ध में फ़रिश्तों ने क़तल कर दिया। परन्तु मुनकर और नाकिर फ़रिश्तों ने—जो कि नीले नेत्रों वाले काले, रंग के भयङ्कर फ़रिश्ते हैं, और जो प्रत्येक मनुष्य को उसकी क़बर में मिलते हैं, और उससे यह पूछते हैं कि, उसका ईमान अल्ला और मुहम्मद सा॰ पर रहा या नहीं—इन लोगों की इसी भांति परीक्षा ली।

(२) इल्लऽऽल् मुस्तज़् अ.फ़ीना मिन-रिंजाऽ-लि व-न्निसाइ३ वऽल् विल्दाऽनि लाऽ यस्ततीऊ.ना ह़ीलत व्व लाऽ यह्तदूना सबील—॥९८॥

परन्तु (हां) जो पुरुष और स्त्रियां और बालक इतने विवश हैं कि, उनसे न कोई बहाना बन पड़ता और न उनको कोई (बाहर जाने को) मार्ग ही दीख पड़ता है।

(३) फ़ उलाइ३का असऽल्लाहु अँय्यअ्.फ़ु.वा अ.न्हुम्; व काऽनऽल्लाहु अ.फ़ुव्वऽन् ग़फ़ूर - ॥९९॥

तो आशा है कि, अल्ला ऐसे मनुष्यों (के पापों) को क्षमा करे। और, अल्ला (अपराध) क्षमा करने वाला और क्षमा-दान करने वाला है।

(४) व मँय्युहाऽजिर् फ़ी सबीलिऽल्लाहि यजिद् फ़िऽल् अर्ज़ि मुराग़मऽन् कसीरऽव्वसाअ्.तन्; व मँय्यख़्रुज् मिन् ॰ँ बय्तिही मुहाऽजिरऽन् इलऽल्लाहि व रसूलिही सुम्मा युद्रिक्हुऽल् मउ्तु फ़क़द् वक़अ्.ा अज्रुहू अ.लऽल्लाहि; व काऽनऽल्लाहु ग़फ़ूरऽर्रहीम् ॥१००॥

और, जो पुरुष अल्ला के मार्ग में अपना देश त्याग देगा तो पृथ्वी में उसको अपेक्षा कृत अधिक स्थान और (सब प्रकार

का) आकर्षण प्राप्त होगा। और, जो पुरुष अपने गृह से अल्ला और उसके प्रेषित (पैग़म्बर) की ओर हिजरत करके निकले और फिर उस की मृत्यु आ जाय, तो अल्ला के ऊपर उसको परिणाम (प्रदान करना) प्रमाणित हो चुका। और, अल्लाह (पाप) क्षमा करने वाला, दयालु है।

(म० १, पारा ५, रु० १५)

(१) व इज़ाऽ ज़रब्तुम् फ़िऽल् अर्ज़ि फ़लय्सा अ़लय्कुम् जुनाऽहुन् अन्तक़्सुरूऽ मिनस्सलाति, इन्ख़िफ़्तुम् अँय्यफ़्तिनना कुमुऽल्लज़ीना क़फ़रूऽ; इन्नऽल्काफ़िरीना काऽनूऽ लकुम् अ़दुव्वऽम्मुबीन् ॥१०१॥

और मुसल्मानो! जब तुम (जिहाद के लिये) कहीं जाओ, और तुमको भय हो कि, काफ़िर तुमसे छेड़-छाड़ करने लगेंगे, तो तुम पर कोई दोष नहीं कि, तुम नमाज़ को न्यून * कर दिया करो। निस्सन्देह, काफ़िर तो तुम्हारे प्रत्यक्ष शत्रु हैं।

(२) व इज़ाऽ कुन्ता फ़ीहिम् फ़अक़म्ता लहुमुऽस्सलाता फ़ल्तक़ुम् ताऽइफ़तुम्मिन्हु-

---

* चार रिकात के स्थान में दो रिकअत कर देना और यदि इतना भी अवसर न हो तो १ ही पर्याप्त है। ——इब्न अब्बास।

म्मअ.ाका वल् यअ्खुज़ू३ अस्लिहातहुम् फ़ इज़ाऽ सजदूऽ फ़ल् यकूनूऽ मिव्वरा३इकुम् वल् तअ्ति ता३इफ़तुन् उख़्र.ा लम् युसल्लूऽ फ़ल् युसल्लूऽ मअ.ाका वल् यअ्खुज़ूऽ हिज़्रहुम् व अस्लिहात-हुम्, वद्दऽल्लज़ीना कफ़.रूऽ लउ तग़्फ़ुलूना अ.न् अस्लिहातिकुम् व अम्ति अ.ातिकुम् .फ़या मीलूना अ.लय्कुम्मय्लतव्वाऽहिदतन्; वलाऽ जुना-ऽह़ा अलय् कुम् इन्काऽना बिकुम् इज़ म्मिम्मत-रिन् अउ् कुन्तुम्मर्ज़ा३ अन्तज़.ाऊ.३ अस्लिहातकुम् व खुज़ूऽ हिज़्रकुम्; इन्नऽल्लाहा अअ.दा लिल् काफ़िरीना अ.ज़ाबऽम्मुहीन् ॥१०२॥

और (हे पैग़म्बर!) जब तुम मुसल्मानों (की सेना) के साथ हो, और (इमाम बन कर) उनको नमाज़ पढ़ाने लगो, तो मुसल्मानों की एक मण्डली तुम्हारे साथ खड़ी हो। और अपने अस्त्र लिये रहे, कि, जब सिजदा (मस्तक टेक) कर चुकें तो पीछे हट जावे और दूसरी मण्डली, जो (अब तक) नमाज में सम्मिलित नहीं हुई, आकर तुम्हारे साथ नमाज़ में सम्मि-लित हो। और सावधान तथा अपने अस्त्र पकड़े रहे। काफ़िरों की कामना यह है कि तुम अपने अस्त्रों और युद्ध की वस्तुओं

को छोड़ दो, तो तुम पर (वह) अकस्मात आक्रमण करें। और, यदि तुम लोगों को वर्षा के कारण कुछ कष्ट हो अथवा तुम रोगी हो, तो अपने वस्त्र-अस्त्र उतार (कर) रखने में तुम पर कोई दोष नहीं। हां, अपने को सावधान रक्खो। निस्सन्देह, अल्ला ने काफ़िरों के निमित्त निरादर का प्रकोप तय्यार कर रक्खा है।

(१२) फ़. इज़ाऽ क़ज़य्तुमु-स्सलाता फ़ऽज़्कुरुऽल्लाहा क़ियाऽमऽव क़ुऊ.दऽव अ.ला जुनूबिकुम्, फ़.इज़ऽऽत्मअ् नन्तुम् फ़ अक़ीमु-स्सलाता, इन्न-स्सलाता काऽनत् अ़लऽल् मुअ्मिनीना किताबऽम्मउ्क़ूत् ॥१०३॥

फिर जब तुम नमाज़ पूरी कर चुको, तो खड़े और बैठे और लेटे अल्लाह को याद करो। और फिर, जब तुम (शत्रुओं की ओर से निश्चिन्त हो जाओ, तो नमाज़ नियमित करो क्योंकि नमाज़ मुसलमानों का निश्चित समय का कर्तव्य है।

(१३) वलाऽ तहिनूऽ फ़िऽब्तिग़ाऽइऽ ल् क़उमि; इन्तकूनूऽ तअ्लमूना फ़इन्नहुम् यअ्लमूना कमाऽ तअ्लमूना, व तर्जूना मिनऽल्लाहि माऽलाऽ यर्जूना; व काऽनऽल्लाहु अ.लीमऽन् हकीम् ॥१०४॥

और मुसल्मानो! लोगों का पीछा करने में हिम्मत न हारो। यदि युद्ध में तुमको कष्ट होता है, तो, जैसा तुम्हें कष्ट होता है, वैसा उन्हें भी होता है। और तुम को अल्ला से बहुत आशायें हैं, जो उन को नहीं। और अल्ला ज्ञानवान और प्रयत्नवान है।

(म० १, पा० ५, रु० १६)

(१-२) इन्नाऽ अन्ज़ल्नाऽ इलय्कऽल् किताबा बिऽल् हक़्क़ि लि तह्कुमा बय्न-न्नाऽसि बिमाऽ अराकऽल्लाहु; व लाऽ तकुल्लिल् ख़ाऽइनीना ख़सीमऽव्वऽस्तग़्फ़िरिऽल्लाहा; इन्नऽल्लाहा काऽना ग़फ़ूरऽर्रहीम् ॥१०५-१०६॥

(हे पैग़म्बर!) हमने जो सत्य पुस्तक तुम पर उतारी है (तो इसलिये) कि जैसा तुमको अल्ला ने बता दिया है, उस केअनुसार मनुष्यों के पारस्परिक उपद्रव निपटा दिया करो। और, धोखेबाज़ों का पक्ष न लो और अल्ला से (अपराध की) की क्षमा चाहो, (क्योंकि) कि अल्ला क्षमा-दान करने वाला, दयालु है।

(३-४) व लाऽ तुजाऽदिल् अ निऽल्लज़ीना यख़्ताऽनूना अन्फ़ुसाहुम्; इन्नल्लाहा लाऽ युहिब्बु

मन् काऽना ख़व्वाऽनऽन् असीमऽय्य स्तख़्फ़ूना मिन-न्नाऽसि वलाऽ यस्तख़्फ़ूना मिनऽल्लाहि व हुवा मअ़हुम् इज़् युबय्यितूना माऽलाऽ यर्ज़ा मिनऽल् क़ौलि; व काऽनऽल्लाहु बिमाऽ यअ़्मलूना मुहीत ॥१०७-१०८॥

और जो लोग अपने हृदय में कपट रखते हैं, उनका पक्ष लेकर झगड़ा मत करो। और जो कोई कपटी और पातकी हो, (वह) अल्ला को नहीं भाता। (क्योंकि वह) मनुष्यों से तो छिपते हैं और अल्ला से नहीं छिपते, जब कि (परस्पर बैठ कर) उन बातों का विचार करते हैं जिनसे अल्ला प्रसन्न नहीं, तब अल्ला उनके साथ होता है। और जो कुछ यह करते हैं, सब अल्ला के आधीन है।

(५) हा३ अन्तुम् हा३ उला३इ जाऽदल्तुम् अ़न्हुम् फ़िऽल् हयाति-द्दुन्याऽ फ़ मँय्युजाऽदिलुऽल्लाहा अ़न्हुम् यउमऽल् क़ियामति अम्मँय्यकूनु अ़लय्हिम् वकील ॥१०९॥

(मुसलमानो!) सुनो! तुमने सांसारिक जीवन में उन का पक्ष लेकर झगड़ा किया, तो प्रलय के दिन उन (की ओर) से अल्ला के साथ कौन झगड़ा करेगा अथवा कौन उनका वकील बनेगा?

(६) व मँ य्यअ्मल् सूइअन् अउ यज़्लिम् नफ़्सहू सुम्मा यस्तग़्फ़िरिऽल्लाहा यजिदिऽल्लाहा ग़फ़ूरऽर्रहीम् ॥११०॥

और जो पुरुष कोई बुरा कार्य करे अथवा स्वयं अपने अन्तरात्मा पर अनर्थ करे, फिर अल्लाह से (अपना अपराध) क्षमा कराये, तो अल्लाह को क्षमा-देने वाला और दयालु पावेगा।

(७) व मँ य्यक्सिब् इस्मऽन् फ़ इन्नमाऽ यक्सिबुहू अ़ला नफ़्सिही; व काऽनऽल्लाहु अ़ली-मऽन् हकीम् ॥१११॥

और जो पुरुष कोई पापाचार का अपराध करता है, वह अपने निमित्त ही उस अपराध से (कुछ) अनर्थ करता है। और अल्ला ज्ञाता और नीतिज्ञ है।

(८) व मँ य्यक्सिब् ख़ती अतन् अउ इस्मऽन् सुम्मा यर्मि बिही बरीइअऽन् फ़क़दिऽह्, तमला बुह्ताऽनऽ व्व इस्मऽम्मुबीन् ॥११२॥

और जो पुरुष किसी अपराध अथवा पाप का भागी हो और फिर वह अपने पाप को किसी अन्य निरपराध पर थोप (आरोपित कर) दे, तो उसने साक्षात अपराध और पाप (का भार अपने ऊपर) लादा।

[म० १, पा० ५, रु० १७]

(१) व लउ् लाऽ फ़ज़्लुऽल्लाहि अ.लय्का व रह्म.तुहू लहम्मत्ता३ इफ़तुम्मिन्हुम् अँ य्युज़िल्लू-का; वमाऽ युज़िल्लूना इल्ला३ अन्फु.सहुम् वमाऽ यज़ुर्रूनका मिन् शय्इन्; व अन्ज़लऽल्लाहु अ.लय्कऽल् किताबा वऽल् हि.क्मता व अ.ल्ल-मका माऽलम् तकुन् तअ्.लमु; व काऽना फ़ज़्लुऽ ल्लाहि अ.लय्का अ.ज़ीम् ॥११३॥

और, (हे पैग़म्बर!) यदि तुम पर अल्ला का अनुग्रह और उसकी दया न होती, तो इन में से एक समुदाय तुम को बहका देने का विचार कर ही चुका था, और यह लोग केवल अपने प्रति भ्रम में डाल रहे हैं। और, तुम को (यह लोग) कुछ हानि नहीं पहुंचा सकते। क्योंकि अल्ला ने तुम पर पुस्तक उतारी है, और प्रज्ञा प्रदान की है, और तुम को ऐसी बातें सिखा दी हैं, जो तुमको (पहले) विदित न थीं। और तुम पर अल्ला की अत्यन्त अनुग्रह है।

(२) लाऽ ख़य्रा फ़ी कसीरिम्मिन्नज्वाहुम् इल्ला मन् अमरा बि सदक़ातिन् अउ् मअ्.रू-फ़िन् अउ् इस्लाऽहि.न् ँ बय्न-न्नाऽसि; व मँ य्यफ्.अ.ल् ज़ालिकऽब्तिग़ा३आ मर्ज़ाऽतिऽल्लाहि फ़ सउ्फ़ा नुअ्.तीहि अज्रऽन् अ.ज़ीम् ॥११४॥

इन लोगों की अधिकतर कार्य्यों में भलाई (का तो नाम) नहीं, परन्तु जो दान अथवा (अन्य) सत्कर्मों में संसर्ग की सम्मति दें (तो ठीक है) और जो अल्ला का आल्हाद प्राप्त करने के लिये ऐसे कार्य्य करेगा, तो हम उस को प्रचुर पुण्य प्रदान करेंगे ।

(३) व मँ य्यशाऽक्क़िक़ि-र्रसूला मिन् ॱ् बअ्दि माऽ तबय्यना लहुऽल् हुदा व यत्तबिअ् ग़य्रा सबीलिऽल् मुअ्मिनीना नुवल्लिही माऽ तवल्ला व नुस्लिही जहन्नम; व साऽअत् मसीर् ॥११५॥

और जो मनुष्य सत-पथ के प्रगट हुये पश्चात् पैग़म्बर से प्रथक (ही) रहे और मुसल्मानों के मार्ग से भिन्न (मार्ग पर) चले, तो जो (पथ) उसने पकड़ा है, हम उस को उसी पथ पर चलाये जायंगे, और (अन्त में) इसको जहन्नम में प्रविष्ट करेंगे । वह (बहुत ही) बुरा स्थान है * ।

---

* पिछले दो रुकूओं की शाने-नुज़ूल की घटना यह है कि पैग़म्बर सा० के समय में एक अन्सारी की ज़िरह आटे में रक्खी हुई चोरी गई और आटे का खोज पहले एक मुसल्मान तअमा बिन उबैरक के और फिर एक यहूदीके घर तक लगा।और ज़िरह यहूदी के घर में पाई गई। यहूदी ने कहा कि तअमा रखवा गया है; और तअमा ने इनकार किया और तअमा की जाति के लोग इसकी साक्षी देने को तैयार हुये । पैग़म्बर सा० को जिस वही के द्वारा यहूदी निर्दोष और और तअमा दोषी मालूम हो गया, वह इन्हीं दोनों रुकूओं की आयतें हैं ।

[म० १, पा० ५, रु० १८]

(१) इन्नल्लाहा लाऽ यग्फ़िरु अँ य्युश्रका बिही व यग्फ़िरु माऽदूना ज़ालिका लि मँ य्यशाउ; व मँ य्युश्रिक् बिऽल्लाहि फ़क़द् ज़ल्ला ज़लालऽन् बईदा ॥११६॥

अल्लाह यह (पाप) तो क्षमा करता नहीं कि, उसके साथ (कोई) साझी समझा जाय। और, इससे न्यून चाहे, जिस को क्षमा करदे। और जिसने अल्ला के साथ (किसी को) साझी, समझा वह सन्मार्ग से दूर, विचलित हो गया है।

(२-३-४) इँ य्यद्ऊना मिन्दूनिही इल्लाइनासऽन्, व इँ य्यद्ऊना इल्ला शयतान म्मरीदऽल्लअ़नहुल्लाहु : व क़ाऽला ल अत्तख़िज़न्ना मिन् इ.बाऽदिका नसीबऽम्मफ़्रूज़ऽ व्वला उज़िल्लन्नहुम् वला उमन्नियन्नहुम् वला आमुरन्नहुम् फ़ला युबत्तिकुन्ना आज़ाऽनऽल् अन्आऽमि वलाआमुरन्नहुम् फ़ला युग़य्यिरुन्ना ख़ल्क़ऽल्लाहि; व मँ य्यत्तख़िज़ि-श्शयताना वलिय्यऽम्मिन्दूनिऽल्लाहि फ़क़द् ख़सिरा ख़ुस्राऽनऽम्मुबीन् ॥११७-११८-११९॥

(यह द्वैतवादी-मुश्रिक) अल्लाह के अतिरिक्त स्त्रियों * को ही पुकारते हैं अर्थात् केवल उस शैतान दुष्ट (के कहने में आकर उन) को पुकारते हैं, जिस को अल्ला ने तिरस्कृत कर दिया, और वह लगा कहने कि, मैं तो तेरे उपासकों में से (नज़रो नियाज़का) एक उचित अंश अवश्य (ही) लिया करूंगा और यदि उन को ही बहकाऊंगा, और उनको आशायें (भी) अवश्य बँधाऊंगा और उन को अवश्य समझाऊंगा, तो (वह मेरी शिक्षा के अनुसार बुतों की नियाज़ के) पशुओं के कान (भी) अवश्य चीरा करेंगे। और, उनको समझाऊंगा, तो वह अल्लाह की बताई हुई दशाओं को भी अवश्य बदला करेंगे। और जो पुरुष अल्ला से भिन्न शैतान को मित्र बनावे, तो, वह साक्षात हानि में आ गया।

(५) य इ.दुहुम् व युमन्नीहिम् ; वमाऽ यइ.दु हुमु-श्शय्तानु इल्लाऽ ग़ुरूर् ॥१२०॥

(शैतान) उनको वचन देता और उनको आशायें दिलाता है। और शैतान उन्हें जो कुछ वचन देता है, निरा धोखा ही (धोखा) है।

(६) उलाइका मअ्वाहुम् जहन्नमु, वलाऽ यजिदूना अ्न्हाऽ महीस् ॥१२१॥

---

* स्त्रियों से अभिप्राय लात, उज़्ज़ा आदि मूर्तियों से है अरब निवासी इनको देवी और फ़रिश्तों के अल्ला की पुत्रियां समझ कर पूजते थे।

यह (वही) हैं जिनका अन्तिम स्थान नर्क है, और वहां से भागने न पायेंगे ।

(७) वऽल्लज़ीना आमनूऽ व आमिलुऽ स्सालिह़ाति सनुद्‌ ख़िलुहुम्‌ जन्नातिन्‌ तज्री मिन्तह़्तिहऽऽल्‌ अन्हारु ख़ालिदीना फ़ीहा३ अबदा ; वअ़्दऽल्लाहि ह़क़्क़ऽन्‌, व मँ अस्दक़ु मिनऽल्लाहि क़ील्‌ ॥१२२॥

और जो लोग (इस्लाम पर) ईमान लाये, और उन्होंने सत्कर्म भी किये, हम उन को शीघ्र ही (बहिश्त के) ऐसे उपवनों में प्रविष्ट करेंगे, जिन के नीचे नहरें बह रहीं होंगी (और वह) उनमें निरन्तर निवास करेंगे । (यह उनके साथ) अल्लाह की पक्की प्रतिज्ञा है । और, अल्ला से अधिक वचन का सच्चा (और) कौन (होगा) ?

(८) लय्‌सा बि अमाऽनिय्यिकुम्‌ वला३ अमाऽनिय्यि अह़्लिऽल्‌ किताबि; मँ य्यअ़्मल्‌ सूऽअ य्युज्‌ज़ा बिही वलाऽ यजिद्‌ लहू मिन्दूनिऽल्लाहि वलिय्यऽव्व लाऽ नसीर्‌ ॥१२३॥

मुसल्मानो ! अन्तिम (सफलता) न तुम्हारी कामनाओं पर निर्भर है, और न पुस्तक वालों की कामनाओं पर ! जो मनुष्य

बुरा कर्म करेगा, उसका (वह) दण्ड पावेगा। और, अल्ला के अतिरिक्त (अन्य कोई) उसे न सहायक ही मिलेगा, और न समर्थक ।

(९) व मँ य्यअ्‌मल् मिन-स्सालिहाति मिन् ज़करिन् अउ् उन्सा व हुवा मुअ्‌मिनुन् फ़उलाइका यद्‌ख़ुलूनऽल् जन्नता वलाऽ युज़्लमूना नक़ीर ॥१२४॥

और जो मनुष्य कोई सत् कर्म करेगा, मनुष्य हो अथवा स्त्री। और उस का (इस्लाम पर) विश्वास भी हो, तो इन गुणों से युक्त पुरुष जन्नत में (स्वर्ग) प्रविष्ट होंगे। और उन पर रत्ती * भर भी अत्याचार न होगा।

(१०) व मँ अह्‌सनु दीनऽम्मिम्मन् अस्लमा वज्हहू लिल्लाहि व हुवा मुह्‌सिनु व्वऽत्तबाअ मिल्लता इब्राहीमा ह.नीफ़ा; वऽत्तख़ज़ऽल्लाहु इब्राहीमा ख़लील् ॥१२५॥

और उस मनुष्य से किसका धर्म बढ़ कर (हो सकता है), जिसने अल्ला के आगे अपना मस्तक नवा दिया, और वह, सुकर्मी भी है, और इब्राहीम के मत पर चलता है कि, वह एक ही अल्ला के हो रहे थे। और, इब्राहीम को अल्ला ने अपना उपासक भी बतलाया था।

* नक़ीर।

(११) व लिल्लाहि माऽ फि-स्समावाति व माऽ फि.ऽल् अर्जि; व काऽनऽल्लाहु बि कुल्लि शयइ.म्मुहीत् ॥१२६॥

और अल्लाह ही का है, जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ भूमि पर है। और समस्त वस्तुयें अल्लाह ही के अधिकार में हैं।

(म०; १, पा०; ५, रु० १६)

(१) व यस्तफ़्तूनका फ़ि-न्निसाऽइ; कुलिऽल्लाहु युफ़तीकुम् फ़ी हिन्ना व माऽ युत्ला अ.लय्कुम् फ़िऽल् किताबि फ़ी यतामन्निसाऽइऽल्लाती लाऽ तुअ्तूनहुन्ना माऽ कुतिबा लहुन्ना व तर्ग़बूना अन् तन्किहू हुन्ना वऽल् मुस्तज़् अफ़ीना मिनऽल् विल्दाऽनि व अन्तकूमूऽ लिल् यतामा बिऽल् क़िस्ति; वमाऽ तफ़् अ.लूऽ मिन् ख़य्रिन् फ़ इन्नऽल्लाहा काऽना बिही अ.लीम् ॥१२७॥

और (हे पैग़म्बर! लोग) तुमसे (अनाथ) स्त्रियों (से निकाह) का निर्देश मांगते हैं, तो तुम उनको समझा दो कि अल्ला तुमको उनके (निकाह के) विषय में आज्ञा देता है (और पहले भी) कुरान में तुमको जो (आज्ञा) सुनाई जा चुकी है,

सो (वह वास्तव में) उन अनाथ स्त्रियों के सम्बन्ध में है, जिनको तुम उनका बांट, जो उनके लिये निश्चित कर दिया गया, नहीं देते। और उनके साथ निकाह करने की अभिलाषा करो और अल्ला विवश बच्चों के विषय में भी आज्ञा देता है कि, उनके अधिकारों की रक्षा करो और अनाथों के अधिकार में न्याय का विचार रक्खो और किसी प्रकार का भी सत्कार्य करोगे, अल्लाह उसको जानना है।

(२) व इनिऽम्रा अतुन् ख़ाऽफ़त् मिन् ऽ बअ्-लिहाऽ नुशूज़ऽन् अउ् इअ्राऽज़ऽन् फ़लाऽ जुनाऽह. ा अ.लय्हिमाऽ अँय्युस्लिहाऽ बय्नाहुमाऽ सुल्हऽन्; व-स्सुल्हुन् ख़य्रुन्; व उह्जिरतिऽल् अन्फुसु-श्शुह्हा, व इन् तुह्सिनूऽ व तत्तकूऽ फ़ इन्नऽल्लाहा काऽना बिमाऽ तअ्मलूना ख़बीर् ॥१२८

और यदि किसी स्त्री को अपने पति की ओर से अत्याचार और प्रेम-परित्याग की आशङ्का हो, तो (स्त्री-पुरुष) दोनों (में किसी) पर कोई दोष नहीं कि, परस्पर सन्धि कर (लें)। और सन्धि (वस्तुतः) अच्छी है, और न्यूनाधिक बहुत कृपणता तो प्रत्येक के हृदय में ही होती है। और यदि परस्पर सुव्यवहार करो और (कठोरता से) बचे रहो, तो अल्ला तुम्हारे इन सब कार्य्यों से परिचित है।

(३) व लन्तस्ततीऊ,३ अन्तअ.दिलूऽ बय्न-न्निसा३ई व लउ् ह.रस्.तुम् फ़लाऽ तमीलूऽ कुल्लऽल् मय्.लि फ़.तज़रूहाऽ कऽल् मुअ.ल्लक़ति; व इन् तुस्लिहूऽ व तत्तक़ूऽ फ़ इन्नऽल्लाहा काऽना ग़फ़ूरऽर्रहीम् ॥१२९॥

तुम अपनी ओर से बहुतेरा चाहो; परंतु यह तो तुम से हो नहीं सकेगा कि, अनेक स्त्रियों में (पूरी २) समता रख सको तो बिल्कुल (एक ही की ओर) मत झुक पड़ो कि, दूसरी को (इस प्रकार) छोड़ बैठो मानो कि, वह (अधर में) लटक रही है। और यदि (परस्पर) अनुकूलता कर लो, और (एक दूसरे पर अत्याचार करने से) बचे रहो, तो अल्ला क्षमा-दान करने वाला और दयालु है।

(४) व इँय्यतफ़र्रक़ा युग़्.निऽल्लाहु कुल्लऽम्मिन् सअ.तिही; व काऽनऽल्लाहु वाऽसिअ.ऽन् ह.कीम् ॥१३०

और यदि (स्त्री-पुरुष में किसी प्रकार से सन्धि न हो सके और एक-दूसरे से) प्रथक हो जायं तो अल्ला अपने कोष से दोनों को भरपूर * कर देगा।

---

* अर्थात् स्त्री-पुरुष में कोई यह न समझे कि एक के बिना दूसरे का कोई काम अटका रहेगा।

(५) व लिल्लाहि माऽ फ़ि-स्समावाति व माऽ फ़िऽल् अर्ज़ि; वला क़द् वस्सय्नऽऽल्लज़ीना ऊतुऽऽल् किताबा मिन् क़ब्लिकुम् व इय्याऽकुम् अनिऽत्तक़ुऽऽल्लाहा; व इन्तक्फ़ुरूऽ फ़ इन्ना लिल्लाहि माऽ फ़ि-स्समावाति व माऽ फ़िऽल् अर्ज़ि; व काऽनऽल्लाहु ग़निय्यऽन् ह़मीद् ॥१३१॥

और जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ भूमि पर है, अल्लाह ही का है। और (मुसल्मानो!) जिन लोगों को तुमसे पुस्तक प्राप्त हुई थी, उनसे, और तुम से हमने यही उपदेश कर रक्खा है कि, अल्ला (की अप्रसन्नता) से डरते रहो। और यदि इसकी आज्ञा नहीं मानोगे, तो (उसे तुम्हारी कोई चिन्ता नहीं।) जो कुछ आसमानों में और जो कुछ भूमि में है, सब अल्ला का है। और, अल्ला परिपूर्ण और (सद्) गुण-युक्त है।

(६) व लिल्लाहि माऽ फ़ि-स्समावाति वमाऽ फ़िऽल् अर्ज़ि; व कफ़ा बिऽल्लाहि वकील् ॥१३२॥

और अल्लाह ही का है, जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है। और अल्लाह ही कार्य सिद्ध करने को पर्य्याप्त है।

(७) इँय्यशअ्‌ युज़्‌हिब्‌ कुम्‌ अय्युह्ऽ–न्नाऽसु व यअ्‌ति बि आख़रीना; व काऽनऽल्लाहु अ़ला ज़ालिका क़दीर्‌ ॥१३३॥

यदि वह चाहे, तो तुमको (पृथ्वी के पर्दे से) उठा कर दूसरों को ला बसाये। और अल्लाह ऐसा करने की शक्ति रखता है।

(८) मन्‌ काऽना युरीदु सवाऽब–द्दुन्याऽ फ़इ़न्दऽल्लाहि सवाऽब–द्दुन्याऽ वऽल्‌ आख़िरति; व काऽनऽल्लाहु समीअ़ऽन्‌ ँ बसीर्‌ ॥१३४॥

जिसको अपने कार्य्यों का पुण्य संसार में लेना हो, तो अल्ला के पास लोक और परलोक दोनों के पुण्य (विद्यमान) हैं और अल्लाह (सब की) सुनता और (सब हाल) देखता है।

(मं० १, पा० ५, रु० २०)

(१) या२ अय्युह्ऽऽल्लज़ीना आमनूऽ कूनूऽ क़व्वाऽमीना बिऽल्‌ क़िस्ति शुहदा२आ लिल्लाहि व लउ्‌ अ़ला अन्फ़ुसिकुम्‌ अविऽल्‌ वाऽलिदय्‌नि वऽल्‌ अक़्‌बीना, इँय्यकुन्‌ ग़निय्यऽन्‌ अउ्‌ फ़क़ीरऽन्‌ फ़ऽल्लाहु अउ्‌ला बिहिमाऽ फ़लाऽ तत्तबिउ़ऽऽल्‌ हवा२ अन्तअ़्‌दिलूऽ, व इन्तल्वू२ अउ्‌ तुअ़्‌-

रिज़ूऽ फ़. इन्नऽल्लाहा काऽना बिमाऽ तअ्.मलूना ख़बीर् ॥१३५॥

मुसल्मानो ! दृढ़ता के साथ न्याय पर स्थिर रहो, और अल्ला-अभीष्ट साक्षी दो, यद्यपि (वह साक्षी चाहे) तुम्हारे स्वयं अथवा माता पिता और सम्बन्धियों के प्रतिकूल ही (क्यों न) हो ? यदि (उनमें) कोई धनाढ्य अथवा दरिद्र है, तो अल्ला सब से अधिक उनकी संभाल करने वाला है, तो उनके निमित्त अपनी अभिलाषा का समर्थन न करो कि, सत्य से विमुख होने लगो और यदि दबी ज़बान से साक्षी दोगे (अथवा दूसरे की साक्षी देने से बचना चाहोगे तो (जैसा करोगे वैसा भरोगे क्योंकि) जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे पूर्णतः परिचित है।

(२) या२ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनू२ आमि-नूऽ बिऽल्लाहि व रसूलिही वऽल् किताबिऽल्लज़ी नज़्ज़ला अ्.ला रसूलिही वऽल् किताबिऽल्लज़ी२ अन्ज़ला मिन्क़ब्लुऽ; व मँय्यक्फ़ुर् बिऽल्लाहि व मला२इकतिही व कुतुबिही व रुसुलिही वऽल् यउ्.मिऽल् आख़िरि .फ़क़द् ज़ल्ला ज़लालन् ॐ ब.ईद् ॥१३६॥

(मुसल्मानो !) अल्ला पर ईमान लावो, और उसके प्रेषित पुरुष (मुहम्मद) पर, और उस पुस्तक (कुरान) पर, जो

उसने अपने रसूल (मुहम्मद) पर, उतारी है, और (जो) उन पुस्तकों का जो इससे पूर्व ऊपर चुकी है, समर्थन करती है। और जो मनुष्य अल्ला (के अस्तित्व) में अविश्वास करे। और उसके फ़रिश्तों का, और उसकी पुस्तकों का, और उसके पैग़म्बरों का और क़यामत के दिन का (भी विश्वास न करे) तो वह सत्पथ से बड़ी दूर विचलित हो गया।

(३) इन्नऽल्लज़ीना आमनूऽ सुम्मा कफ़रूऽ सुम्मा आमनूऽ सुम्मा कफ़रूऽ सुम्मऽज़्दाऽदूऽ कुफ़्ऽल्लम् यकुनिऽल्लाहु लि यग़्फ़िरा लहुम् वलाऽलियह्दियाहुम् सबील् ; ॥१३७॥

जो लोग इस्लाम (पर ईमान) लाये, और फिर (इस्लाम से) विमुख हो गये। फिर इस्लाम लाये, फिर इस्लाम से विमुख हो गये। और पश्चात् कुफ़्र में वृद्धि करते गये, तो अल्ला न तो उनके अपराध क्षमा करेगा, और न, उन को सन्मार्ग ही दिखायेगा।

(४-५) बश्शिऽल् मुनाफ़िक़ीना बि अन्ना लहुम् अज़ाऽबऽन् अलीमा—(नि) ऽल्लज़ीना यत्तख़िज़ूनऽल् काफ़िरीना अउ्लियाऽआ मिन्दूनिऽल् मुअ्मिनीना अयब्तग़ूना इ्न्दा हुमुऽल् इ्ज़्ज़ता फ़, इन्नऽल् इ्ज़्ज़ता लिऽल्लाहि जमीअ् ॥१३८-१३९॥

हे पैग़म्बर ! मुनाफ़िक़ों (बनावटी मुसल्मानों) को हर्ष समाचार सुना दो कि, उनको अन्त में पीड़ा-प्रद प्रकोप (प्राप्त) होना है। (क्योंकि) यह लोग मुसल्मानों को छोड़कर काफ़िरों को मित्र (बनाते फिराते) हैं। क्या काफ़िरों के यहां सन्मान * (बढ़ाना) चाहते हैं ? सो सन्मान तो सम्पूर्णतः अल्ला का है।

(६-७) व क़द् नज़्ज़ला अलय्कुम् फ़िऽल् किताबि अन् इज़ाऽ समिअ्तुम् आयातिऽल्लाहि युक्फ़रु बिहाऽ व युस्तह्ज़ाउ बिहाऽ फ़लाऽ तक़उदूऽ मअ़ाहुम् हत्ता यख़ूज़ूऽ फ़ी हदीसिन् ग़य्रिही; इन्नकुम् इज़ऽम्मिस्लुहुम् ; इन्नऽल्लाहा

---

* एक यूरोपियन विचारक इस आयत के सम्बन्ध में लिखते हैं :—

Muslims are not allowed even to the adverse criticism of unbelievers, lest they become, ike them. Ignorant bigotry is the strongest defence of Islam.

* कहने का तात्पर्य्य यह कि अन्य मतावलम्बियों को मुसल्मान मित्र न मानें। अन्य मतस्थ मनुष्यों द्वारा मुसल्मानियत की मीमांसा (दोष-दर्शन) सुनने का भी मुसल्मानों को निषेध है। और वह कदाचित इस कारण कि मुसल्मानियत से मुँह न मोड़ लें। अन्ध विश्वास (ही) ने सब से अधिक मुसल्मानियत की रक्षा की है।

जाऽमि़उऽल् मुनाफ़िक़ीना वऽल् काफ़िरीना फ़ी जहन्नमा जमीअ.ाऽ—(नि) ऽल्लज़ीना यतरब्ब-सूना बिकुम्, फ़ इन् काऽना लकुम् फ़तहुम्मिन-ऽल्लाहि क़ाऽलूऽ अलम् नकुम्मअ.ाकुम्, व इन् काऽना लिल् काफ़िरीना नसीबुन् क़ाऽलूऽ अलम् नस्तह्विज् अ.लयकुमु व नम्नअ्कुम्मिनऽल् मुअ्मिनीना; फ़ऽल्लाहु यह्कुमु बय्नकुम् यउ-मऽल् क़ियामति, वलँय्यज् अ.लऽल्लाहु लिल् काफ़िरीना अलऽल् मुअ्मिनीना सबील॥१४०-१४१॥

यद्यपि तुम (मुसल्मानों) पर अल्ला की पुस्तक (कुरान) में यह (आज्ञा) उतार चुका है कि, जब तुम (अपने कानों से) सुन लो कि, अल्ला की आयतों को अस्वीकार किया जा रहा है, और (उनके दोष-दिग्दर्शन न करा के) उनका उपहास किया जा रहा है, तो ऐसे मनुष्यों के साथ मत बैठो, यहां तक कि, दूसरी बात में लग जावें। वरन इस दशा में तुम भी उनही जैसे (काफ़िर) बन जाओगे। निस्सन्देह अल्लाह अवि-श्वासियों और बनावटी विश्वासियों, सबको नर्क में एकत्रित करके रहेगा। कि,वह जो तुम्हारी ओर ताकते रहते हैं कि,यदि अल्ला की ओरसे तुमको विजय प्राप्त हो, तो कहतेहैं कि, क्या

हम तुम्हारे साथ न थे? और जो काफ़िरों को (अवसर) प्राप्त होजाय, तो कहते हैं कि, क्या हम तुम पर विजय प्राप्त न कर चुके थे, और क्या हमने मुसल्मानों से तुमको बचा नहीं लिया? परन्तु अल्ला प्रलय के दिन उनका निर्णय कर देगा। और अल्ला काफ़िरों को मुसल्मानों पर विजय-प्राप्ति का कभी अवसर न देगा।

[मं० १, पा० ५, रु० २१]

[१-२] इन्नऽल् मुनाफ़िक़ीना युख़ादिऊनऽल्लाहा व हुवा ख़ाऽदिउ हुम् , व इज़ाऽ क़ाऽमूऽ इल-स्सलाति क़ाऽमूऽ कुसाऽला युराऽऊन-न्नाऽसा वलाऽ यज़्कुरूनऽल्लाहा इल्लाऽ क़लीलऽम्मुज़ब्ज़बीना बयना ज़ालिका; लाऽ इलाहाऽउलाऽइ वलाऽ इला हाऽउलाऽइ; व मँ य्युज़्लिलिऽल्लाहु फ़लन् तजिदा लहू सबील् ॥१४२॥

बनावटी मुसल्मान अल्ला को धोखा देते हैं, यद्यपि (वास्तव में) अल्ला उन ही को धोखा दे रहा है। और यह लोग जब नमाज़ के निमित्त खड़े होते हैं, तो आलस्य-युक्त हो कर खड़े होते हैं—मनुष्यों को दिखाते हैं, और (अन्तःकरण से) अल्ला की आराधना नहीं करते। परंतु कुछ इसी भांति कुफ़्र और ईमान के बीच में पड़े झूल रहे हैं, न इन (मुसल्मानों) की ओर हैं और न उन (काफ़िरों की) की ओर। और (हे पैग़म्बर) जिसको अल्लाह (सन्मार्ग से) विचलित कर दे, सम्भव नहीं कि, तुम उसके लिये मार्ग ढूंढ सको।

[३] या३ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ लाऽ तत्तख़िज़ुऽऽल् काफ़िरीना अउ्लिया३आ मिन्दूनिऽल् मुअ्मिनीना; अतुरीदूना अन्तज् अ़लूऽ लिल्लाहि अ़लयकुम् सुल्तानऽम्मुबीन् ॥१४३॥

मुसल्मानो! मुसल्मानों को छोड़ कर काफ़िरों को अपना मित्र न बनाओ। क्या तुम यह चाहते हो कि, स्पष्टतः अल्ला का आक्षेप अपने ऊपर आरोपित करो।

[४] इन्नऽल् मुनाफ़िक़ीना फ़ि-द्दर्किऽल् अस्फ़लि मिन-न्नाऽरि, वलन् तजिदा लहुम् नसीर—॥१४४॥

कुछ सन्देह नहीं कि, मुनाफ़िक़ नर्क की सबसे नीची श्रेणी में होंगे, और (हे पैग़म्बर!) तुम किसी को भी इनका सहायक न पाओगे।

[५] इल्लऽऽल्लज़ीना ताऽबूऽ व अस्लहूऽ वाऽअ्तसमूऽ बिऽल्लाहि व अख़्लसूऽ दीनहुम् लिल्लाहि फ़उला३इका मअ़ऽल् मुअ्मिनीना व सउ्फ़ युअ्तिऽल्लाहुऽल् मुअ्मिनीना अज्रऽन् अ़ज़ीम् ॥१४५॥

परंतु (इनमें से) जिन लोगों ने (पाप) प्रायश्चित-प्रार्थनाकी और अपनी दशा सुधार ली, और अल्ला का आश्रय लिया और अपने मत को अल्ला के निमित्त, विमल कर लिया तो

यह (बहिश्त में) मुसल्मानों के साथ होंगे। और, अल्ला मुसल्मानों को महान प्रति फल प्रदान करेगा।

(६) माऽ यफ़् अलुऽल्लाहु बि अ.ज़ाऽबिकुम् इन् शकर्तुम् व आमन्तुम्, व काऽनऽल्लाहु शाऽकिरऽन् अ.लीम् ॥१४६॥

यदि तुम लोग (अल्ला की) कृतज्ञता स्वीकार करो, और (उस पर) ईमान रक्खो, तो अल्लाह को तुम्हें दुःख दे कर क्या करना है। परंतु अल्ला स्वयं (कृतज्ञता स्वीकार करने वालों का) कृतज्ञ है, और वह (सब कुछ) जानता है।

———::※::———

पारा लाऽयुहिब्बुल्ला

(७) लाऽयुहि.बुऽल्लाहुऽल् जह्रा बि-स्सूइ मिनऽल् क़उ़लि इल्लाऽ मन् ज़ुलिमा; व काऽनऽल्लाहु समीअ.ऽन् अ.लीम् ॥१४७॥

अल्ला को यह (बात) प्रिय प्रतीत नहीं होती कि, कोई किसी को मुंह खोल कर बुरा कहे, परन्तु जिस पर अत्याचार हुआ हो, (वह कह ले)। और, अल्लाह (सबकी सब कुछ) सुनता और जानता है।

(८) इन् तुब्दूऽ खय् रऽन् अउ तुख़्फ़ूहु अउ

तञ्ग्रफ़ूऽग्ऱन् सूइन् फ़ इन्नऽल्लाहा काऽना ग्ऱफ़ुव्वऽन् क़दीर ॥१४८॥

अगर उपकार खुल्लमखुल्ला करो अथवा गुप्त अथवा (तुम्हारे साथ कोई अपकार किया करे और तुम) अपकार से दूर बचो, तो सामर्थ्यवान होने के उपरान्त भी अल्लाह उसे सहन किया करता है।

(६) इन्नऽल्लज़ीना यक्फ़ुरूना बिऽल्लाहि व रुसुलिही व युरीदूना ग्रँ य्युफ़र्रिक़ूऽ बय्नऽल्लाहि व रुसुलिही व यक़ूलूना नुग्र्मिनु बि बग्र्ज़िव्व नक्फ़ुरु बि बग्र्ज़िव्व युरीदूना ग्रँ य्यत्तख़िज़ूऽ बय्ना ज़ालिका सबील-॥१४६॥

जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बरों से फिरे हुये (बाग़ी) हैं, और अल्लाह और उसके पैग़म्बरों में पार्थक्य पैदा करना चाहते हैं, और कहते हैं कि, हम कुछ (पैग़म्बरों) को मानते हैं, और कुछ को नहीं मानते। और चाहते हैं कि, (पैग़म्बरों में प्रतिकूलता प्रसिद्ध करके) कुफ़्र और ईमान का मध्यवर्ती मार्ग (एक नया ही) ग्रहण करें।

(१०) उलाइका हुमुऽल् काफ़िरूना हक़्क़ऽन्, व ग्र्ग्र्तद्नाऽ लिल्काफ़िरीना ग्ऱज़ाऽबऽम्मुहीन् ॥१५०॥

तो ऐसे ही मनुष्य निश्चय काफ़िर हैं। और काफ़िरों के निमित्त हमने अपमान की आपत्ति तैयार कर रक्खी है।

(११) वऽल्लज़ीना आमनू बिऽल्लाहि व रुसुलिही व लम् युफ़र्रिक़ू बय्ना अह.दिम्मिन्हुम् उलाऽइका सउ.फ़ा युअ्तीहिम् उजूरहुम्; व काऽनऽल्लाहु ग़फ़ूरऽर्रह.ीम ॥१५१॥

और जो अल्ला और उस के पैग़म्बरों पर ईमान लाये और उनमें से किसी एक को अन्य से प्रथक न समझे, तो ऐसे ही मनुष्य हैं, जिनको अल्ला (अन्त में) उन के परिणाम प्रदान करेगा। और, अल्ला दाता और दयालु है।

(म० १, पारा ६, रु० २२)

(१) यस् अलुका अह्लुऽल् किताबि अन्तु नज़्ज़िला अ.लय्हिम् किताबऽम्मिन-स्समाऽइ फ़क़द् सअलू मूसाऽ अक्बरा मिन् ज़ालिका फ़क़ाऽलूऽ अरिनऽऽल्लाहा जह्रतन् फ़ अख़ज़त्हुमुस्साइ.क़तु बि ज़ुल्मिहिम्, सुम्मऽत्तख़.ज़ुऽऽल् इ.ज्ला मिन् ऽ बअ्.दि माऽ जाऽअत् हुमुऽल् बय्यिनातु फ़अ.फ़उ.नाऽ अ.न् ज़ालिका, व आतय्ना मूसा सुल्तान-म्मुबीन —॥१५२॥

हे पैग़म्बर! पुस्तक वाले (अर्थात् यहूदी) तुमसे प्रार्थना करते हैं कि, तुम उन पर कोई (लिखित) पुस्तक आस्मान से ला उतारो तो (उन्हें बकने दो क्योंकि) वह मूसा से इससे भी बढ़

कर प्रार्थना कर चुके हैं; लगे कहने कि, हमें (तो) अल्ला के प्रत्यक्ष दिखाओ * फिर उनकी दुष्टता के कारण उनको बिजली ने आ दबोचा। पुनः इस के पश्चात् भी यद्यपि इनके पास चमत्कार आ चुके थे। परन्तु (बछड़े की पूजा कर बैठे और) हमने इनके इस अपराध को भुला दिया, और मूसा को हमने स्पष्ट विजय प्रदान की।

(२) व रफ़अ्ना फ़ौक़हुमु-त्तूरा बि मीसाऽक़िहिम् व कुल्नाऽ लहुमुऽद्ख़ुलुऽऽल् बाऽबा सुज्ज-दऽ व्व कुल्नाऽ लहुम् लाऽ तअ्दूऽ फ़ि-स्सब्ति व अख़ज़्नाऽ मिन्हुम्मीसाऽक़ऽन् ग़लीज़ ॥१५३॥

और इन लोगों से प्रतिज्ञा लेने के लिये हमने तूर (पर्वत) को उनके शिर पर लटकाया ‡ और हमने उन्हें आज्ञा दी कि नगर के द्वार में सिजदा करते हुये प्रविष्ट होना। और हमने उन को यह भी आज्ञा दी कि सप्ताह के दिन (के विषय) में (हमारी आज्ञा का) उल्लंघन न करना +।

---

* यहूदी लोगों ने पैग़म्बर से प्रार्थना की कि जिस प्रकार मूसा पर लिखित पुस्तक उतरी थी, वैसी ही एक पुस्तक हम पर उतरे। और उसमें अमुक पुरुष के नाम के सहीफ़े हों, जिनमें तुम्हारा समर्थन हो। हम तब ईमान लावें। इनकी प्रार्थना के उत्तर में अल्ला ने इनकी इसी प्रकार की पूर्व प्रार्थना-रूप शरारतों का वर्णन कर दिया।

† देखो कुरान प्र० ख० पृ० २२–२३,

‡ कुरान प्रथम खण्ड पृ० २५

+ देखो कुरान, प्र० ख०, पृ० २८, २६

(३) फ़ बिमाऽ नक़्ज़िहिम्मीसाऽक़हुम् व कुफ़्रिहिम् बि आयातिऽल्लाहि वक़त्लिहिमुऽल् अन् ्बियाऽ बि ग़य्रि ह.क़्क़िन् व क़ौ लि-हिम् कुलूबुनाऽ ग़ुल्फ़; बलतबाअ.ऽल्लाहु अ.ल-य्हाऽ बि कुफ़्रिहिम् फ़ लाऽ युअ्मिनूना इल्लाऽ क़लील् ॥१५४॥

अतः उनकी प्रतिज्ञा तोड़ने के कारण, और अल्ला की आज्ञा न मानने के कारण, नबियों का व्यर्थ वध करने के कारण, और उनके इस कथन के कारण से कि, हमारे हृदय सुरक्षित हैं, जो कि सुरक्षित नहीं. वरन उन के कुफ़्. के कारण अल्ला ने उन (के मनों) पर मुहर कर दी है। अतएव कुछ के अतिरिक्त (इतर) ईमान नहीं लाते।

(४-५-६) व बिकुफ़्रिहिम् व क़ौ लिहिम् अ.ला मर्यमा बुह् ताऽनऽन् अज़ीमऽ व्व क़ौ लि-हिम् इन्नाऽ क़तल्नऽऽल्मसीह्.। ई.सऽब्ना मर्यमा रसूलऽल्लाहि, वमाऽ क़तलूहु वमाऽ सलबूहु वला किन् शुब्बिहा लहुम् ; व इन्नऽल्लज़ीनऽख़्तलफ़ूऽ फ़ीहि लफ़ी शक्किम्मिन्हु; माऽ लहुम् बिही मिन् इ.ल्मिन् इल्लऽऽत्तिबाऽअ.-ज्ज़न्नि, वमाऽ क़तलूहु यक़ीनऽन् ्बर्फ़ाअ.हुऽल्लाहु इलय्हि; व काऽ नऽल्लाहु अ.ज़ीज़ऽन् ह.कीम् ॥१५६-१५६-१५७॥

उनके कुफ़् के कारण से, और मर्यम के सम्बन्ध में आक्षेप आरोपित करने के कारण से, और उन के इस कथन के कारण से कि हमने मरियम के पुत्र ईसा मसीह को, जो अल्ला के पैग़म्बर (होने का दावा करते) थे, क़त्ल कर डाला और (वास्तविक बात यह है कि) न तो उन्होंने उनको क़तल किया, और न उनको सूली चढ़ाया। (और वास्तव में वह किसी और को सूली दे रहे थे; ईसा मसीह को नहीं) परंतु उन को ऐसा ही विदित हुआ (कि हम ईसा को सूली दे रहे हैं) और जो लोग इस विषय में मत-भेद रखते हैं (और समझते हैं कि, ईसा को सूली दी गई) तो इस विषय में (व्यर्थ) सन्देह में पड़े हैं, इन को इस का (वास्तविक) पता तो है ही नहीं। परन्तु केवल अटकल के पीछे दौड़े चले जा रहे हैं। और निश्चय, ईसा को लोगों ने क़त्ल नहीं किया, वरन् उन को अल्ला ने अपनी ओर उठा लिया, और अल्ला बल-वान और प्रयत्न वान् है।

(७) व इँम्मिन् अह्लिऽल् किताबि इल्लाऽ ल युअ्मिनन्ना बिही क़ब्ला मउ्तिही, व यउ्-मऽल् क़ियामति यकूनु अ़लय्हिम् शहीद्,॥१५६॥ (और प्रलयके लगभग* जब ईसा दुनिया में फिर आवेंगे तो) जितने पुस्तक वाले हैं, अवश्य उनकी मृत्यु से पूर्व सब उन पर (मुसल्मानों का सा) ईमान लावेंगे। और प्रलय के दिन ईसा इनके विरुद्ध साक्षी देंगे।

*सहीह हदीसों में आता है कि प्रलय से पूर्व हज़रत ईसा संसार में पुनः आवेंगे और मुहम्मदी शिक्षा के अनुसार कार्य्यवाही करेंगे। इस आयत में इसी की ओर सङ्केत है।

(८) फ़ बिज़ुल्मिम्मिनऽल्लज़ीना हाऽदूऽ ह.र्रं-म्नाऽ अ.लय्हिम् तय्यिबातिन् उहि.ल्लत् लहुम् व बिसद्दिहिम् अ.न् सबीलिऽल्लाहि कसीरऽ व्व अख़्ज़ हिमु-र्रिबा वक़द्नुहूऽ अन्हु व अक्लिहिम् अम्वाऽल-न्नाऽसि बिऽल् बाऽतिलि, व अअ्-तद्नाऽ लिल्काफ़ि.रीना मिन्हुम् अ.ज़ाऽबऽन् अलीम् ॥१६०-१६१॥

यहूदियों की इन धूर्तताओं के कारण से हमने (प्रचुर) पवित्र पदार्थ जो उनके लिये भोज्य थे, उनके निमित्त निषिद्ध निश्चित कर दिये, और इस कारण कि बहुत अल्ला के मार्ग से मनुष्यों को रोकते और इस कारण से कि, यद्यपि उनको ब्याज का निषेध कर दिया गया था, इस पर भी ब्याज लेते थे, और इस कारण से कि, लोगों का धन व्यर्थ नष्ट करते थे। और इनमें जो लोग अल्ला को नहीं मानते, उनके लिये हमने पीड़ाप्रद प्रकोप तय्यार कर रक्खा है।

(१०) ला किनिर्राऽसिख़ूना फ़िऽल् इल्मि मिन्हुम् वऽल् मुअ्मिनूना युअ्मिनूना बिमाऽ उन्ज़िला इलय्का व माऽ उन्ज़िला मिन् क़ब्लिका वऽल् मुक़ीमीन स्सलाता वऽल् मुअ्तून-ज़्ज़-काता वऽल् मुअ्मिनूना बिऽल्लाहि वऽल यउ्मिऽल् आख़िरि; उलाऽइका सनुअ्तीहिम् अज्रऽन् अ.ज़ीम् ॥१६२॥

परन्तु (हे पैग़म्बर !) इन में से जो विद्या में (विशेष) विभुता रखते हैं (वह) और मुसलमान (यह दोनों दल तो) उस (पुस्तक) पर, जो तुम पर उतरी है, और उन पुस्तकों पर, जो तुम से पूर्व (अन्य पैग़म्बरों पर) उतरी हैं, विश्वास लाते, और नमाज़ें पढ़ते, और ज़कात देते, और अल्ला और अन्तिम दिन का विश्वास रखते हैं। यह लोग हैं, जिन को हम शीघ्र बड़ा परिणाम प्रदान करेंगे।

(म० १, पा० ६, रु०२३)

(१) इन्ना३ अउ् हृयना३ इलयुका कमा३ अउ् हृयना३ इला नूहिंऽव-न्नबिय्यीना मिन् ० बअ् दिही, व अउ् हृयना३ इला३ इब्राहीमा व इस्माई ला व इस्हाक़ा व यअ् कूबा वऽल् अस्बाऽति व ई सा व अय्यूबा व यूनुसा व हारूना व सुलय्माना, व आतय्नाऽ दाऽवूदा ज़बूर, ॥१६३॥

हे पैग़म्बर ! हमने तुम्हारी ओर (उसी प्रकार) वही भेजी है, जिस प्रकार हमने नूह और अन्य पैग़म्बरों की ओर, जो उनके पश्चात् हुये, वही भेजी थी। और (जिस प्रकार) इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और याक़ूब की सन्तान और ईसा और अय्यूब और यूनिस और हारून और सुलैमान की ओर वही भेजी थी। और हमने दाऊद को ज़बूर दी थी।

(२) व रुसुलऽन् क़द् क़सस्नाहुम् अ़लयका

मिन् क़ब्लु व रुसुलऽल्लम् नक़्सुस्हुम् अलय्का; व कल्लमऽल्लाहु मूसा तक्लीम्, ॥१६४॥

और (तुम्हारी भांति) हम कितने पैग़म्बर (भेज चुके हैं) जिनका वर्णन हम इस से पूर्व तुम्हें कर चुके हैं, और कितने पैग़म्बर और जिनका वर्णन हमने तुमसे (अभी तक) नहीं किया, और अल्ला ने मूसा से (तो) बातें (भी) कीं।

(३) रुसुलऽम्मुबश्शिरीना व मुन्ज़िरीना लि अल्लाऽ यकूना लिन्नाऽसि अ.लऽल्लाहि हुज्जतुन् ऽ बअ.द-र्रुसुलि; व काऽनऽल्लाहु अ.ज़ीज़ऽन् ह़कीम् ॥१६५॥

यह सब पैग़म्बर (सत्पुरुषों को स्वर्ग का) शुभ-सम्वाद सुनाने वाले और (दुर्जनों को अल्ला के दुख से) भय दिलाने वाले (थे) जिससे कि पैग़म्बरों के (आगमन के) पश्चात् लोगों को अल्ला पर (किसी प्रकार का) छुद्दा न रहे और अल्ला विजयी और नीतिवान है।

(४) ला किनिऽल्लाहु यश्हदु बिमा३ अन्ज़ला इलय्का अन्ज़लहू बि .इल्मिही, वऽल् मला३इकतु यश्हदूना; व कफ़ा बिऽल्लाहि शहीद् ॥१६६॥

(हे पैग़म्बर! पुस्तक वाले न भी मानें) परंतु जो कुछ अल्ला ने तुम्हारी ओर उतारा है, अल्ला साक्षी देता है कि (योग्य) समझ कर उसको (तुम पर) उतारा है, और फ़रिश्ते भी (इस की) साक्षी देते हैं। और साक्षी के लिये तो (एक मात्र) अल्ला ही पर्य्याप्त है।

(५) इन्नऽल्लज़ीना कफ़रूऽ व सद्दूऽ अ.न् सबीलिऽल्लाहि क़द् ज़ल्लूऽ ज़लालऽन् ॅबई.द् ॥१६७

निस्सन्देह जिन लोगों ने (मुसल्मानी मत से) मुंह मोड़ा और अल्लाह के मार्ग से (अन्यों को भी) रोका, वह सन्मार्ग से बड़ी दूर विचलित हो गये।

(६) इन्नऽल्लज़ीना क.फरूऽ व ज़लमूऽ लम् यकुनिऽल्लाहु लि यग़्फि.र लहुम् वलाऽ लियह्दियाहुम् तरीक—॥१६७॥

जो लोग कुफ्र और (कुफ्र के साथ) अत्याचार भी करते रहे, उनको अल्ला न तो क्षमा ही करेगा, और न उनको (सत) पथ ही प्रदर्शित ही करेगा।

(७) इल्लाऽ तरीका जहन्नमा ख़ालिदीना फ़ीहा३ अबदा; व काऽना ज़ालिका अ.लऽल्लाहि यसीर् ॥१६८॥

वरन् उनको नर्क का पथ (प्रदर्शित करेगा) जिसमें निरन्तर निवास करेंगे और अल्ला के निकट यह सरल (बात) है।

(८) या३ अय्युहऽ-न्नाऽसु क़द् जा३अकुमु-र्रसूलु बिऽल् हक़्कि मिर्रब्बिकुम् .फ आमिनूऽ ख़ैय्रऽल्लकुम्; व इन् तक्फुरूऽ फ. इन्ना लिल्लाहि माऽ फि.-स्समावाति वऽल् अर्जि; व काऽनऽल्लाहु अ.लीमऽन् हकीम् ॥१६९॥

मनुष्यो ! पैग़म्बर (मुहम्मद सा०) तुम्हारे समीप तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से सत्य (मत) ले कर आये हैं। सो विश्वास करो कि (वह) तुम्हारे निमित्त हित-प्रद है और यदि स्वीकार न करोगे तो, (समझ लो) अल्ला का है, जो कुछ आस्मानों और भूमि पर है। और अल्ला ज्ञाता और नीतिवान है।

(६) याऽ अह्लऽल किताबि लाऽ तग़्लूऽ फ़ी दीनिकुम् वलाऽ तक़ूलूऽ अ़लऽल्लाहिऽल् हक़्क़ा; इन्नमऽऽल्मसीहु ई़सऽब्नु मर्यमा रसूलुऽल्लाहि व कलिमतुहू; अल्क़ाहाऽ इला मर्यमा व रूहुम्मिन्हु फ़ आमिनूऽ बिऽल्लाहि व रुसुलिही व लाऽ तक़ूलूऽ सलासतुन; इन्तहूऽ ख़ैरऽल्लकुम् इन्नमऽऽल्लाहु इलाहुंव्वाऽहिदुन् सुब्हानहूऽ अँ य्यकूना लहू वलदुन; लहू माऽफ़ि-स्समावाति व माऽ फ़िऽल् अर्ज़ि; व कफ़ा बिऽल्लाहि वकील ॥१७०॥

हे पुस्तक वालो ! अपने मत में मर्यादाओं को उल्लङ्घन न करो, और अल्ला के सम्बन्ध में सत्य बात के अतिरिक्त (एक शब्द भी) मुख से उच्चारण न करो। (सत्य यह है) कि ईसा मसीह अल्ला के केवल एक पैग़म्बर हैं। और अल्ला की आज्ञा जो उसने मरियम के प्रति कहला भेजी थी (कि बिना पति के गर्भवती हो जाओ। और वह होगई) और वह एक आत्मा अल्ला की ओर से (आई), तो अल्ला और उस के

पैग़म्बरों पर ईमान लाओ, और तीन (ख़ुदा) न कहो (इस से) बचो कि, यह तुम्हारे निमित्त हित-प्रद है। बस एक मात्र अल्ला ही आराध्य है। और वह इससे मुक्त है कि, उसके कुछ सन्तान हो। उसी का है, जो कुछ आस्मानों और भूमि पर है। और अल्ला (सबका) कार्य सिद्ध करने वाला है।

[म० १, पा० ६, रु० २४]

[१] लँ य्यस्तन्किफ़ऽल् मसीहु अँ य्यकूना अ.ब्दऽल्लिल्लाहि व लऽऽल् मलाइकतुऽल् मुक़र्रबूना; व मँ य्यस्तन्किफ़् अ.न् इ.बाऽदतिही व यस्तक्बिफ़् सा यह़शुरुहुम् इलय्हि जमीअ़ ॥१७१॥

मसीह को अल्ला का आराधक होने में कभी (किसी प्रकार की) लज्जा नहीं, और न फ़रिश्तों को जो (अल्ला के) निकट (रहते) हैं। और जो अल्ला का सेवक होने में संकोच करे और प्रशंसा चाहे, तो शीघ्र ही अल्ला उन सब को अपनी ओर खींच बुलायेगा।

(२-३) फ़ अम्मऽऽल्लज़ीना आमनूऽ व अ.मिलु-स्सालिहाति फ़ युवफ़्फ़ीहिम् उजूरहुम् व युज़ीदुहुम्मिन् फ़ज़्लिही, व अम्मऽऽल्लज़ीनऽस्तन्कफ़ूऽ वऽस्तक्बरू फ़ युअ.ज़्ज़िबुहुम् अ.ज़ाऽ-

बऽन् अलीम व्वलाऽ मजिदूना लहुम्मिन्दूनिऽ-ल्लाहि वलियऽव्वलाऽ नसीर् ॥१७२॥

फिर अल्लाह की सेवा में उपस्थित हुये उपरान्त जो लोग विश्वास करते और सद्कार्य करते थे, अल्लाह उनको उनके किये का पूरा २ पुण्य प्रदान करेगा। और, अपने अनुग्रह से अधिक भी प्रदान करेगा, और जो लोग लज्जा करते और प्रशंसा चाहते थे, अल्ला उनको (अपने) प्रपीडक प्रकोप का दण्ड देगा और अल्ला के अतिरिक्त न कोई सखा * मिलेगा और न सहायक।

(४) या२ अय्युह-न्नाऽसु क़द् जा२अकुम् बुर्हाऽनुम्मिर्रब्बिकुम् व अन्ज़ल्ना२ इलयकुम् नूरऽम्मुबीन् ॥१७३॥

मनुष्यो! तुम्हारे प्रति तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से विवाद आ चुका, और तुम्हारी ओर जगमगाता हुआ प्रकाश अर्थात् क़ुरान भेज चुके।

(५) फ़. अम्मऽऽल्लज़ीना आमनूऽ बिऽल्ला हि वऽअ्तसमूऽ बिही फ़.सा युद्ख़िलु हुम् फ़ी रह्मतिम्मिन्हु व फ़ज़्लिव्व यह्दी हिम् इलयहि सिराऽतऽम्मुस्तक़ीम् —

* नजरान के नसारी ने पैग़म्बर सा० पर यह अपराध लगाया कि तुम जो हमारे ख़ुदावन्द मसीह को बन्दा बताते हो, उससे उनका निरादर होता है, तो यह आयतें उतरीं।

सो जो लोग अल्ला पर ईमान लाये, और उन्होंने उसी का आश्रय लिया, तो अल्ला (भी) उन को शीघ्र ही अपनी अनुकम्पा और अनुग्रह में ले लेगा; और उनको अपने पास तक पहुंचाने का सीधा मार्ग (भी) बता देगा।

(६) यस्तफ़्तूनका; कुलिऽल्लाहु युफ़्तीकुम् फ़िऽल् कलालति इनिऽम्रुउऽन् हलाका लयसा लहू वलदुऽव लहू उख़्तुन् फ़लहाऽ निस्फ़ु माऽ तरका वहुवा युरिसुहा३ अँल्लम् यकुल्लहाऽ वलदुन्; फ़ इन् काऽनताऽऽस्न तय नि फ़लाहुमऽ-स्सुलुसानि मिम्माऽ तरका; व इन्काऽनू३ इख़्वा-तर्रिजाऽलऽऽव निसा३अम् फ़लिज़्ज़करि मिस्लु हज़्ज़िऽल् उन्सययनि; युबय्यिनुऽल्लाहु लकुम् अन्तज़िल्लूऽ वऽल्लाहु बिकुल्लि शयइन् अलीम्

हे पैग़म्बर! लोग तुमसे व्यवस्था मांगते हैं तो इनसे कह दो कि, अल्ला कलाला के विषय में तुमको निर्देश देता है कि, यदि कोई ऐसा मनुष्य मर जावे, जिसके सन्तान न हो (और न बाप-दादा इसी को कलाला कहते हैं) और उसके (केवल एक) बहिन हो, तो बहिन को उस की सम्पति का आधा। और बहिन मर जावे, और उस के सन्तान न हो, तो उस की समस्त सम्पति का स्वामी, यह (भ्राता)! पुनः यदि बहनें दो हों (अथवा अधिक), तो उनको इस सम्पति में से दो-तिहाई। और यदि भगनी और भ्राता (मिले-जुले हों) पुरुष और स्त्री तो दो स्त्रियों के बांट के बराबर १ पुरुष का बांट। तुम लोगों के विचलित होने के विचार से अल्ला अपनी आज्ञाएं तुम से स्पष्टतः वर्णन करता है। और अल्ला सब कुछ जानता है।

विशेष सूचनाएं ।

१—अर्बी में फ, ख, ग नहीं अतः आयतों में सर्वत्र फ़, ख़, ग़ ही पढ़िये ।

२—कुरान की प्रत्येक सूरत के शुरू में बिस्मिऽल्लाहि-र्रह्मानि-र्रहीम्—यह विनती आती है । इस आयत को मय अर्थ हम पहले खण्ड अर्थात् सूरये बक़र में लिख चुके हैं । अतएव बार बार लिखना निरर्थक प्रतीत होता है ।

३—ऽ अर्द्धाकार का उच्चारण नहीं होता, ३ से पूर्व का अक्षर खींच के पढ़ा जायगा जैसे ओ३म् में ओ ।

४—! , ; ;—:तथा—यह चिह्न विशेष हैं इन से उच्चारण में अन्तर नहीं आता ।

महिलादर्श-माला ।

हमने विदुषी वीरांगनाओं के विमल वृत्तान्त, आर्य देवियों की दिव्य दीप्ति का दिग्दर्शन कराने एवं जननी-जगत में जीवन-ज्योति जगमगा देने वाले विविध विषयों से विभूषित तथा स्त्री शिक्षा, गृहस्थाश्रम, सन्तान-संरक्षण, पारिवारिक प्रसंग, पति-पत्नी के पारस्परिक प्रेम, पतिव्रत और पत्नीव्रत की आवश्यकता तथा महिलाओं के मानवीय अधिकार आदि विभिन्न स्त्री-सुधार-सम्बन्धी साधन समुपस्थित करने वाले विषयों की विधायक उत्तमोत्तम पुस्तकें प्रकाशित करने के उद्देश्य से 'महिलादर्श-माला' नामक पुस्तक-क्रम प्रारम्भ कर दिया है । इस ग्रन्थलता से पुरुष और स्त्री-समाज को जो लाभ पहुंचेगा वह तो आगामी

भविष्य में पाठक-पाठिकाओं को प्रतीत होगा परन्तु इस समय तो हमारी पुस्तक प्रेमियों से यही प्रार्थना है कि वह जहां स्वयं इस माला के ग्राहक बनें, वहां साथ ही अपने मित्र और सम्बन्धियों को भी बनावें। लेखक और लेखिकाओं को अपनी लिखी हुई पुस्तकें इस माला द्वारा प्रकाशित करके अपना यश और हमारा उत्साह बढ़ा कर संसार की सेवा करने में हमारी सहायता करनी चाहिये। इस माला द्वारा निम्न पुस्तक निकल चुकी है:—

गृहणी-सुधार !

स्त्री शिक्षा का आदर्श !!

यह पुस्तक स्वर्गीय धर्मवीर पं० लेखराम कृत है, इस में स्त्रियों का उपयोगी कोई विषय नहीं छोड़ा अर्थात् स्त्रियों की सुलभ पाठविधि, विदुषी देवियों के वृत्तान्त, सन्तति संरक्षण, गृह-प्रबन्ध तथा गर्भाधान के गूढ़ और गोपनीय ज्ञान और स्त्रियों की उपासना की उपयुक्त विधि पं० लेखरामजी की ललित लेखनी से लिखी गई है। तथा स्त्री शिक्षा की आवश्यकता वेद शास्त्रों के प्रमाणों और युक्तियों के आधार पर दी गई है। इसके अति-रिक्त कन्या महाविद्यालय जालन्धर के त्यागी प्रिंसीपल लाला देवराज द्वारा प्रदर्शित स्वर्गीय लेखराम का स्त्री-शिक्षा-विषयक-प्रेम विशेषत: पढ़ने योग्य है। प्रारम्भिक परिचय में पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज लिखित स्वर्गीय पण्डित जी की धर्मपत्नी सती लक्ष्मी देवी के विमल वृत्तान्त ने इस पुस्तक को स्त्री पुरुषों के लिये अमूल्य बना दिया है। रंगीन और सादा चित्रों ने इस की शोभा को और भी बढ़ा दिया है। मू० ॥।) इसीलिये हजारों की संख्या में शताब्दी पर हाथों हाथ निकल गई।

संगठन--संकीर्तन !

छप गया ! **छप गया !!**

इसमें संगठन के विषय में, हिन्दुओं की हीनता और ह्रास की दिग्दर्शक, संगठन की सहायक, शुद्धि की समर्थक और पारस्परिक प्रेम की प्रतिपादक उत्तमोत्तम और जोशीली कविताओं का समावेश है। संग्रहकर्ता की सम्मति है कि शुद्धि क्षेत्र में जो कार्य्य 'प्रेम भजनावली' के भजनों ने किया, वही संगठन--समर में इस संकीर्तन से होने की आशा है। आशा है भजनों के भक्त भद्दे भजनों को छोड़ कर इस शुद्ध सङ्गठन-सङ्कीर्तन का सर्वत्र प्रचार करके सङ्गठन के सहायक बनेंगे। हिन्दू सभायें तथा प्रचारक इसे इकट्ठा लेकर मुफ्त बांट रहे हैं। मू० ।) तथा १०० का १५) मात्र

स्वास्थ्य, और बल।

गुरुकुलीय भीम प्रो० रमेशचन्द्र जी के शारीरिक चमत्कार जिन पुरुषों ने देखे हैं, वह समझ सकते हैं कि इस पुस्तक में उक्त प्रोफेसर महोदय ने कितने योग्यता-पूर्ण स्वास्थ और बल बढ़ाने के साधन समुपस्थित किये होंगे। बहुत बढ़िया छपी सचित्र पुस्तक का मूल्य १) प्रत्येक आर्य और हिन्दू को पढ़नी चाहिये।

TORCH BEARER.

BY

PROF. T. L. Vaswani Re. 1-8-0

उपरोक्त टौर्चबीयरर में साधु वस्वानी ने ऋषि दयानन्द

के चारु चरित्र की चर्चा करके अंग्रेजी में अमूल्य आर्य-साहित्य बढ़ाया है। पुस्तक अंग्रेज़ी पठित पुरुषों के बड़े काम की है।
मू० १॥)

योग--रहस्य।

उपनिषदों की उपादेयता!

यदि आपको उपनिषदों का उत्कर्ष, और योग की युक्ति-युक्त व्याख्या देख कर अपनी आत्मा में शान्ति का शासन स्थापित करना है, यदि आपको उपनिषदों के गूढ़ ज्ञान को साधारण भाषा में समझ कर अपने कल्याण की कामना है, और यदि आपको स्वाध्याय के सत्र में समय-सर्वस्व को समाहुत करना अभीष्ट है तो इस पुस्तक का पठन अवश्य करिये। आर्य्यावर्त का आदर्श आलोकित करने वाले आर्य--समाज के गौरव-स्वरूप गुरुकुल के एक सुयोग्य और स्वाध्याय-शील स्नातक ने इस पुस्तक में योग के यात्री के लिये यथेष्ट सामग्री समुपस्थित की है। मू० १) मात्र सजिल्द १।) ग्राहकों को सुविधा रहेगी।

मुक्तधारा।

यह प्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की पुस्तक का अनुवाद है। अनुवादक हैं वही प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री तर्क शिरोमणि M. A. M. R. A. S. पुस्तक प्रत्येक हिन्दी भाषा-भाषी को पढ़नी चाहिये। मूल्य ॥।)

.क़ुरान! तृतीय खण्ड!

इसमें सूरये मायदा जिसमें विभिन्न विषयों के अतिरिक्त मक्का की यात्रा, यहूदियों से डाट-डपट, ईसाइयों के सिद्धान्त

तथा यहूदी था ईसाइयों से मित्रता न करना आदि २ विषयों का वर्णन है। बड़ा रोचक है। बहुत शीघ्र निकल कर पाठकों की सेवा में पहुंचेगा। हम ग्राहकों से सादर निवेदन किये देते हैं कि कुरान के ग्राहक बनाने का उद्योग करें यदि प्रत्येक् ग्राहक ५ ग्राहक भी बना दे तो बड़ी सुविधा से कुरान शीघ्र समाप्त हो सकता है। आशा है, ग्राहक गण इस ओर अवश्य ध्यान देंगे। हम अपने उन ग्राहकों का—जो हमारे कुरान के ५ अथवा अधिक ग्राहक बना देंगे—नाम सधन्यवाद कुरान में प्रकाशित कर देंगे।

शताब्दी की शंख-ध्वनि।

भजन-भण्डार।

इसमें ऋषि दयानन्द, वैदिक धर्म और वेद और प्रार्थना विषयक उत्तमोत्तम विशुद्ध भजनों का संग्रह है। मू० ।)

वृक्षों में जीव है।

इसमें बड़े सुदृढ़ प्रमाणों से यह सिद्ध किया है कि वृक्षों में जीव विद्यमान है। वेद, उपनिषद, आर्ष-ग्रन्थ और सत्यार्थ प्रकाश के प्रमाणों से भी इसकी पुष्टि की है और साथ ही पाश्चात्य खोज का दिग्दर्शन कराया है। मू० १।।)

पता:—प्रेम-पुस्तकालय, आगरा।

शुद्ध सामग्री।

हवन की शुद्ध सामग्री, जिसको उत्तमोत्तम पदार्थ डालकर वैद्यक-विधि से वैद्य श्री० सन्तराम जी आर्य ने तय्यार किया

है और जिसके धूम से गृह सुगन्धित हो जाता है। मू० बढ़िया १) सेर मध्यम ।॥) सेर। हवन कुण्ड भी लोहे और ताँबे के नित्य कर्म के लिये यहां से मंगाये जा सकते हैं।

अनुभूत--औषधियां।

सरस्वती चूर्ण! सरस्वती चूर्ण!

बुद्धि और मस्तिष्क के लिये उपयोगी स्मरण शक्ति को बढ़ाता, मूर्छा, तन्द्रा को दूर करता है। तथा वीर्य सम्बन्धी विकारों का विनाश करके सात्विकता उत्पन्न करता है।

मू० १) प्रति शीशी

प्रमेह-प्रहारी बटी।

धातु पुष्ट की अमोघ औषधि है। स्वप्न दोष तथा मल-मूत्र के साथ व्यर्थ व्यय होने वाले वीर्य की रक्षा करके स्वास्थ्य लाभ करती और प्रमेह के लिये परमोपयोगी प्रमाणित हुई है। मू० २)

दन्त मन्जन।

दान्त की पीड़ा, दान्तों का असमय हिलना तथा बादी के रोग आदि को क़तई निर्मूल करके दान्तों को चमकदार और सुदृढ़ बनाता है। मू० ।)

नेत्रांजन।

नेत्रों की ज्योति बढ़ाने वाला तथा गरमी के प्रभाव से बचाने और नेत्रों को ठंडक देने के लिये एक मात्र अंजन है। मू० १) तोला। नमूना।)

बाल-बल-वर्द्धक शरबत ।

बालकों को पिलाने से बालकों के सब रोग दूर हो जाते हैं । उनकी बुद्धि और स्वास्थ बढ़ता है । गर्मी और सर्दी सहन करने की शक्ति आती है । मू० ॥) शीशी ।

यह सब दवाइयां निम्न पते से मिल सकती हैं

प्रेम-पीयूष औषधालय

फुलट्टी बाज़ार आगरा ।

नित्य कर्म पद्धति ! नित्य कर्म पद्धति !!

आर्यों के पञ्च यज्ञों का विस्तृत वर्णन और सन्ध्योपासनादि में मन लगाने वाले साधन समुपस्थित किये गये हैं । इसकी बतलाई हुई विधि से यदि आर्य लोग सन्ध्योपासन-शील और कर्मकाण्डी बनें तो निश्चय उनका जीवन पवित्र हो जाय । पुस्तक बड़ी रोचक है पाकट साइज में है । मू० ≡) प्रचारार्थ केवल १२॥) सैकड़ा-शीघ्र मंगाइये वरन् पुनः-संस्करण के लिये प्रतीक्षा करनी पड़ेगी ।

शुद्धि की शङ्खध्वनि

शुद्धि-सम्बन्धी उत्तमोत्तम जो शीली कविताऐं मू० ।)

अछूतों का आर्तनाद !

इसमें अछूतों के दुख दर्द और अछूतोद्धार सम्बन्धी गाने योग्य उत्तम २ कविता और भजन आदि का संग्रह है मू० ।)

प्रेम-पुस्तकालय, फुलट्टी बाज़ार, आगरा ।

सच्चे स्वामी।

ऋषि दयानन्द का बालोपयोगी जीवन!

इसमें सरल भाषा में स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र है। बालक-बालिकाओं और कम पढ़ी स्त्रियों के लिये मोटे अक्षरों में स्वामी जी महाराज के जीवन की घटनाओं का संग्रह है। प्रत्येक आर्य और हिन्दू गृहस्थी में इसका पहुंचना आवश्यक है। पारितोषिक में देने, मित्रों और सम्बन्धियों के यहां उपहार में भेजने के लिये और आर्यत्व का प्रचार करने के लिये बड़ा उपयोगी है। मू० ।-) मात्र।

आर्य गायन-विविध गानों की अनुपम पुस्तक है। मू० १) सजि० १।=) विचित्र जीवन असली १) कुरान प्रथम भाग ।।।) द्वितीय भाग ।।।=) तृतीय भाग ।।।) अमरीका की स्वाधीनता ।।।) भगवद्गीता १) अनुराग रत्न-कवि शिरोमणि नाथूराम शङ्कर शर्मा कृत १) शंकर-सरोज ।) वायस-विजय =)।। गृहिणी-सुधार ।।।) दृष्टान्त सागर ।।।) ध्यान योग प्रकाश १।।) महात्मा हंसराज ।) वृक्षों में जीव १।।।) मेवाड़ का इतिहास २) भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास ।।।) अलामबेल =) भोला-सिंह और मौलवीमियां -) अल्लामियां की हुलिया -) सुन्नत -) गप्पाष्टक मुहम्मदी -)।। शुद्धि की झन्कार -) धर्म शिक्षा -)।। मलकानों की पुकार ।-) प्रेम भजनावलि ≡) संगठन-संकीर्तन ।) शताब्दी सङ्कीर्तन ।) बाल प्रश्नोत्तरी -) कन्या प्रश्नोत्तरी -) तथा अन्य आर्य समाज की पुस्तकें सस्ते मूल्य पर मिल सकती हैं ग्रामों में प्रचार करने को अच्छा साधन है। मिलने का पता:—

आर्य-साहित्य-सदन, पैंतखेड़ा, आगरा।